ज्ञान भारती
४/१४ रूपनगर दिल्ली ११    ७

उसकी
याद
में
कान्ति वर्मा

## अनुक्रम

उसकी
याद
मे

# मातृत्व की भूख

मुह को घूघट मे छिपाये, मन मे अनत अभिलाषाए, आकाक्षाए और उमगें लिये, अपनी ननद और जिठानिया के साथ मजुला अपने पति के शयन-गह के द्वार तक आई। वहा पहुचकर उन सबने उसे कमरे के भीतर जाने को कहा। ननदा ने शरारत भरी आखो से देखा, जिठानियो ने गुद-गुदाया, कान म कुछ कहा, और सबने मिलकर हसते खिलखिलाते हुए उसे कमरे के अदर धकेलकर दरवाजा बाहर से बद कर दिया।

पति से मिलने की उमग को उसकी धडकन ने दबा दिया। वह पसीना पसीना हो गई। गुलाबी करेब की साडी म उसके ललाट पर पडी पसीने की बूदें चमकने लगी। घूघट मे से उसने देखा—उसके पति उसकी ओर आ रहे हैं। उन्हे अपने समीप आता देख उसकी गदन और भी झुक गई।

उसके पति दिलीप कालेज के प्रोफेसर थे। नय विचार और गभीर प्रकृति के व्यक्ति थे। उन्होने मजुला की साडी उसके सिर पर से ऊपर सरकाते हुए कहा, "अब घूघट निकालने का रिवाज नही रहा। और तुम तो पढी-लिखी हो। चलो, वहा चलकर बैठो।"

मजुला धडकते हुए हृदय से दिलीप की बतायी हुई दिशा मे चल दी। लज्जा से झुकी हुई मजुला की आखें दिलीप के मुख की गभीरता को न देख सकी।

दोनो बैठ गए। मजुला का मुख खुला हुआ था, पर उसकी आखें लज्जा से पृथ्वी म गडी जा रही थी। कुछ देर सन्नाटा सा रहा। उस सन्नाटे को तोडत हुए दिलीप न कहा, "देखा, मैंने यह विवाह अपन लिए नही किया है। स्वय मुझे विवाह की कोई अभिलाषा नही थी। रेखा (दिलीप की पहली पत्नी) के साथ ही मेरी सब अभिलाषाए भी चली गयी है। पर रखा की निशानी यह बेबी (पालने मे सोए हुए बच्चे की ओर इशारा करके) मरे जीवन का आधार है। यदि इसे तुम इसकी मा जैसा प्यार द सकोगी तभी तुम मेरा प्यार पा सकती हो।

मजुला सुहागरात को शयनकक्ष मे दिलीप के कहे गये इस पहले वाक्य को सुनकर चौक उठी। एक क्षण के लिए उसे गला घुटता प्रतीत हुआ तभी दिलीप ने फिर प्रश्न किया, 'बोलो, इसकी मा की भाति इस प्यार कर सकोगी ?"

मजुला ने कापती आवाज मे धीरे से कहा, "जी हा। बच्चे ने उनकी बातो का समथन रोकर किया।

दिलीप उठे, पालने मे से बच्चे को गोद मे लिया, मेज पर से दूध की बोतल उठाई, और फिर वही पलग पर बैठकर बच्चे को दूध पिलाने लग। दूध पीकर बच्चे न बडी-बडी आखें खोलकर पास बैठी मजुला को देखा और उसके चमकते हुए गहने और साडी को पकडने लगा। मजुला ने उसे गोद म लेने के लिए हाथ बढाये। वह किलकारी मारकर उसपर झुक गया। मजुला ने दोनो हाथो म उसे सभाल लिया।

दिलीप की आखो मे आसू आ गये। उन्होने भरे हुए गले स कहा, 'यह तो ऐसा खुश होकर तुम्हारी गोद मे आ गया जसे वास्तव म इसकी मा ही इसे मिल गई हो। पर इस बेचारे को क्या पता कि इसकी मा तो इसे गोदी म खिला भी नही सकी और अपन इस अरमान को दिल म लिए इस दुनिया से चली गई।'

इस बीच बच्चे का मन मजुला के गहना से खेलकर भर गया था। वह फिर दिलीप की ओर बढ गया। दिलीप ने उसे सुलाने के लिए पालने मे लिटा दिया और झूला देने लगा।

सात दिन ससुराल मे रहने के बाद मजुला अपन मायके लौट गई।

चलते समय दिलीप ने मंजुला से कह दिया था, "अब तुम जल्दी ही आ जाना। पंद्रह दिन बाद मेरे पास परीक्षाओं का काम फैल जायगा और मुझे जरा सा भी समय नहीं मिल सकेगा। तुम आ जाओगी तो बेबी का काम तुम सभाल सकोगी।"

चौदहवें दिन ही दिलीप ने अपने छोटे भाई को भेजकर मंजुला को बुलवा लिया। पति के प्यार की भूखी मंजुला ने पति के प्रेम को पाने के लिए मां की तरह ही बेबी की देखभाल आरम्भ कर दी, जिसके कारण वह उसके पास इतना हिल गया कि दिलीप के अतिरिक्त वह और किसी के पास नहीं जाता था।

दिलीप को मंजुला के इस व्यवहार से बड़ा संतोष मिला। वह समय समय पर उसकी इस बात के लिए बड़ी प्रशंसा किया करते थे कि वह बेबी को उसकी मां की तरह ही रखती है। लेकिन मंजुला को पति का वह प्यार नहीं मिला जिसके वह स्वप्न देखा करती थी।

मंजुला बड़ी उत्सुकता से दिलीप के कालेज से लौटने की प्रतीक्षा करती। अपने को सजा संवार कर रखती। घड़ी में देख देखकर उनके आने का समय बिताती। लेकिन जब दिलीप आते तो वह यही पूछते—बेबी कहां है? क्या कर रहा है? मेरे पीछे रोया तो नहीं? दूध कितना दिया? और इस प्रकार के न जाने कितने प्रश्न कर डालते और फिर कहते कि जाओ बेबी को मेरे पास ले आओ। सोते हुए बेबी को जगाकर बुला लेते।

मंजुला के मन की अभिलाषाएं मन में ही रह जातीं और मन की भावनाओं को मन में ही दबाकर वह बेबी को लेने चली जाती।

दिलीप मंजुला के व्यवहार से बहुत संतुष्ट थे। अपने वर्ताव से उसने दिलीप के हृदय में स्थान पा लिया था। वह उसे बड़ी सुशील और कर्तव्यपरायण गृहिणी के रूप में देखने लगे थे, उसने निश्चय कर लिया कि बेबी के अतिरिक्त उन्हें किसी और बच्चे की आवश्यकता नहीं है। इस बात की उन्होंने पूरी चेष्टा की और डाक्टर की राय ली। उसमें सफलता भी मिली। विवाह को चार वर्ष बीत गये पर मंजुला के कोई बच्चा नहीं हुआ।

दिलीप के व्यवहार से मजुला सतुष्ट थी पर बच्चे का अभाव उसे खटकने लगा। छोटे से बच्चे को छाती से चिपटाकर सोने के लिए उसकी बाहे फडक उठती। सारे शरीर म रोमाच का सा अनुभव उसे होने लगा।

एक दिन रात को दिलीप की छाती म मुह छिपाकर लजाते हुए उसने दिलीप से कहा, 'छोटे बच्चे के बिना घर सूना सूना लगता है। मुन्ना भी अब तो बडा हो गया है।"

दिलीप ने हसकर कहा 'क्या हमेशा ही घर मे छोटा बच्चा चाहिए ? ऐसे तो फिर दजनो बच्चे हो जायेंगे।'

दिलीप की बातो मे उस दढता का आभास मिला, जिससे मन एक गहरी व्यथा से भर गया। कानो म तुरत बच्चे के रोन की ध्वनि गूज गइ। क्या उसके अपने घर मे बच्चे की यह ध्वनि नही गूजेगी ? इस ध्यान से उसका मन बेचन हो गया।

प्यार ही प्यार म मुन्ने की आदतें बिगड गयी। खाने की चीज पर रोता तो जब तक ले न लेता, चुप न होता। मजुला मना करती तो वह लातो से उसकी खबर लेता। उसकी मा होती तो इस अपराध म उसकी टागें बाध देती, कुछ और सजा देती, पर मजुला को यह अधिकार नही था।

मुन्ने की शैतानी का दोष दूसरे लोग मजुला को ही देते। जिठानी-ननदें तो उसके सामने ही कह देती कि अपनी मा होती तो शऊर से सिखाती। बिना मा के बच्चे ऐसे ही शतान हो जाते हैं। मजुला सबकी बातें सुनती और तिलमिलाकर रह जाती।

एक दिन मजुला मुन्ने को लेकर अपनी जेठानी के घर गयी। वहा चाय के लिए कुछ और स्त्रियो को भी बुलाया गया था। मेज पर नाश्ता लाकर रखा गया। मजुला ने एक लडडू मुन्ने को उठाकर दे दिया। वह उसने बडी जल्दी जल्दी खा लिया और फिर और लडडू लेने के लिए बढा। और लडडू की पूरी प्लेट लेने की जिद करने लगा। यह देखकर एक पडोसिन ने मजुला से कहा 'तुमने बच्चे की आदतें बहुत बिगाड रखी हैं। दूसरी ने कहा, 'बिना मा के बच्चे ऐसे ही बिगड जाते है।

मजुला को ये बातें बडी बुरी लगी। वह एक लडडू और मुन्ने के

हाथ म देकर उसे गोदी मे उठाकर बाहर ले गयी और समझाया कि किसी दूसर के घर चीज नही मागनी चाहिए। पर मुने ने वह लडडू लेकर और लेने की निद की। मजुला न उसे डाटा और कहा कि यदि और मागेगा तो वह उस मारेगी लेकिन उसने मजुला से हाथ छुडाकर भागने की चेप्टा की। हाथ उसका छूट गया और वह जोर से पृथ्वी पर गिर पडा। उसके रोन की आवाज सुनकर सब वहा दौडकर आ गये। क्या हुआ क्यो रोया, पूछन पर रोत राते मुने ने कहा, "अम्मा ने मारा।"

इतना सुनत ही सब अपने अपने मन की कहने लगी, और मुने के प्रति अपनी ममता का पदशन करने लगी। किसी ने कहा, "दिलीप तो मुन को अपनी जान से ज्यादा प्यार करत थे, अब उसकी यह दशा करा रखी है।" किसी ने मजुला को शिक्षा दी 'बच्चे को इस प्रकार मारना नही चाहिए इसी से बच्चे की आदतें बिगड जाती है।"

उस दिन बड़े भारी मन से शाम का मजुला घर लौटी, पर दिलीप घर पर नही थे। वह किसी दूसरे रास्त मे मजुला को लेने चले गये थे।

जिस ढग से सबने मुने का पीटे जाने का वणन किया, उससे दिलीप को पूरा विश्वास हा गया। वह क्रोध से भरा हुआ घर पहुचा।

उसने देखा मजुला रसोई म है और मुना रसोई के दरवाजे पर खडा रा रहा है। दिलीप की क्रोधाग्नि मे मुन के उस समय के राने ने आहुति का काम किया।

दिलीप न चीखकर कहा, 'मुना क्यो रो रहा है?"

मजुला ने कहा, "तरकारी चूल्हे पर रखने मैं अभी अभी आयी हू, इसी बीच यह रोने लगा।'

"मुझे खाना नही चाहिए," कहत हुए दिलीप ने चूल्ह पर रखे हुए तरकारी के भगोने को ठोकर से नीचे गिरा दिया।

उस घटना के बाद से मजुला के मन म अपना बच्चा न हान की बात और भी खटकने लगी और उसे इस बात का पूण विश्वास हा गया कि दिलीप उसे कभी मा बनने का अवसर नही देगा।

तभी एक दिन उसे सुधा के लडका होने की सूचना मिली। वह दौडी हुई वहा गई। बच्चे की 'हाओ हाआ' से कमरा गूज रहा था। मजुला न बच्चे को देखकर कहा, 'बडा प्यारा बच्चा है!'

उस रात मजुला का नीद नही आयी। मुन्ना के लिए भी अलग पलग बिछने लगा था। उसका अपना पलग सूना था। सुधा की बगल म सोया हुआ नवजात शिशु उसके ध्यान म आ रहा था। छोटे स बच्चे को छाती मे चिपटाने के लिए उसकी बाहें फडक रही थी। इतने म उसने देखा, मुन्ना अपने पलग स उठकर नाली की ओर बढ रहा है। छत पर चारो ओर छोटी छोटी मुडेर है, जहा स जरा सा झटका लगा कि वह नीचे गिर सकता है। वह एकदम चिल्ला उठी "मुन्ना!" और भाग पडी। दिलीप भी मजुला की आवाज से जागकर भागा। मुन्ना गिरने ही को था कि झपटकर मजुला ने उस पकड लिया। मजुला का दिल बडी देर तक धडकता रहा। मुन्ना गिर जाता तो वह क्या करती। वह मुन्ने को बहुत प्यार करने लगी थी।

दिलीप न भी उसकी बडी सराहना की। कहा, "तुमने ही इसकी आज जान बचा ली तुम इतनी तज दौडी कि गिरते गिरते का भी बचा लिया।'

कुछ दर बाद मजुला के मन की घबराहट कम हुई और उसके सामने फिर वही सुधा की बगल म सोया हुआ बच्चा आ गया।

*अगले दिन दादा मुन्ने को देख देखकर भगवान की कृपा की सराहते* रहे। दोपहर को मजुला सुधा के घर मुन्ने का भी ले साथ गई। रात की घटना का सारे मोहल्ले मे पता चल गया था। सबन ही ईश्वर को धन्यवाद दिया और मजुला क प्रेम और उसकी फुर्ती की सराहना की।

रात की घटना के कारण पहले तो नीचे आगन मे सोने का विचार किया गया परतु उस रात गर्मी और भी अधिक होने के कारण दिलीप ने ऊपर ही सोने का निश्चय किया। मुन्ने का पलग दोनो पलगो के बीच बिछाया गया।

रात को बिस्तरे पर लेटने के बाद मजुला को फिर अपना सूना बिस्तर अखरने लगा। लेकिन रात की जागी हुई थी इस कारण नीद

जरदी आ गई। उसे स्वप्न मे दिखाई दिया, जैसे उसके पलग पर गद्दी बिछी है। उस पर एक बडा सुदर बच्चा पडा हुआ उसे देख रहा है। उसने प्यार से उसे अपनी ओर खीच लिया है। वह भूखा है। मुह फाड-फाडकर कभी वह उसकी धोती मुह मे लेता है कभी ब्लाउज। उसे इसके इस नासमझपने पर हसी आ रही है। उसके छोटे छोटे हाथो के स्पर्श से उसके शरीर मे सिहरन सी हो रही है। बाद मे उसे उस पर तरस आता है। जैसे ही वह उसे दूध पिलाने की चेष्टा करती है, वैसे ही उसकी आख खुल जाती है। यह तो स्वप्न है, जो कभी पूरा नही होगा, इस ध्यान मे उसका दिल टूट गया और वह फूट फूटकर रोने लगी। जैसे वह स्वप्न का बच्चा उसका अपना ही था और किसी ने उसे उससे छीन लिया हो। बराबर के पलग पर सोते हुए दिलीप पर उसकी दृष्टि गई। मन मे आया उन्हे झकझोरकर उठा दे। लेकिन सब व्यर्थ है, इस ध्यान ने उसे रोक दिया। रोते-कलपते फिर उसे नीद आ गई।

उसने फिर स्वप्न देखा जैसे वह क्रोध से पागल हो रही है। उसे पति पर भी क्रोध आ रहा है और मुन्ने पर भी। मुन्ने को देखकर वह सोच रही है कि उसे मातृत्व प्रेम से वचित रखने वाला वही है। जब तक यह जीवित है वह अपने बच्चे का मुह नही देख सकती। यह सोच-कर उसे ऐसा प्रतीत हुआ जसे उसने सोते हुए मुन्ने को उठाया और दीवार की तरफ चल दी, जिधर एक दिन पहले वह स्वय जा रहा था, और वहा जाकर उसने उसे ऊपर से नीचे गिरा दिया। तभी एक धमाका सा हुआ और उसकी नीद खुली। लेकिन उसके आश्चर्य का ठिकाना नही रहा जब उसने देखा कि मुन्ने का बिस्तरा खाली था। और वह मुडेर के पास था। वह चिल्लाई, "हाय, मुन्ना!" और उसकी ओर दौडी, पर आज उसके परो मे एक दिन पहली जैसी तेजी नही थी। उसके हाथ झपटकर मुन्ने को नही पकड सके।

दिलीप जागे। एक दिन पहले का दृश्य उनके सामने आ गया। वह नीचे भागे, मजुला भी भागी। दिलीप मुन्ने के निर्जीव शरीर को उठा लाए। दोनो के करुण विलाप से पडोसी भी जाग-जागकर वहा

इक्टठे होन लगे।

दिलीप न रोते रोते कहा, "सोते मे उठकर नाली पर गया था वही से गिर गया।"

मजुला उसे छाती से चिपटाये बिलख बिलखकर रो रही थी। *दिलीप और मजुला दोनो के प्रति पडोसिया की करुणा और सहानुभूति* का स्रोत उमडा पड रहा था।

मजुला की आखो के सामने उस नन्हे से बच्चे की सूरत घूम रही थी जो उसे स्वप्न मे दिखाई दिया था, पर उसकी गोद मे मुन्न का शव था जिसे वह छाती से चिपटाए बिलख बिलखकर रो रही थी।

# पत्नी

पच्चीस वर्ष जिस पत्नी के साथ बिताए थे उसका अंतिम संस्कार करके जब जज साहब श्मशान से लौटे तब उनकी दशा बड़ी शोचनीय थी। उनका हृदय फटा जा रहा था। मन ही मन वह भगवान से कह रहे थे—हे भगवान्, तूने यह क्या किया ? मैंने तेरा क्या बिगाड़ा [illegible] हाय, अब मैं क्या करूंगा ?' कार रुकने पर उनके दोनों मित्रों ने उन्हें सहारा देकर उतारा। उनके पैरों में चलने की शक्ति नहीं रही थी। घर के दरवाजे के पास पहुंचकर एक मित्र ने उन्हें समझाते हुए कहा 'देखो, अब अपने को जरा संभाल लो, तुम्हारी यह दशा देखकर बच्चों का क्या हाल होगा ?'

उनके चार बच्चे थे—दो लड़के, दो लड़कियां। बड़े [illegible] की आयु लगभग चौबीस की थी। वह वहीं, पटने में ही [illegible] था। छोटा लड़का अठारह वर्ष का था। इंजीनि[illegible] पढ़ रहा था। बड़ी लड़की की आयु बाईस वर्ष की थी। [illegible] हो गया था, लेकिन दुर्भाग्य से छह महीने पहले ही [illegible] हो गई थी और वह पिता के घर ही आ गई थी। [illegible] वर्ष की थी कॉलेज में इंटर में पढ़ रही थी।

श्मशान से लौटते समय दोनों लड़के भी [illegible] मां के शोक में वे भी डूबे हुए थे। उनके [illegible]

पहुचे तब उन्ह देखते ही दोना लडकिया फफककर रो पडी, "हाय पापा! तुम मम्मी का कहा छोड आए ?"

जज साहब से खडा न रहा गया। उनके पर काप रह थ। वह उस कमरे मे जाकर चटाइ पर पड गए जहा उनकी पत्नी ने उनसे अतिम विदा ली थी।

जज साहब के मित्रा और सबधिया ने बच्चा का समझाया कि मा ता अब चली गई, वह लौट नही सकती, उसे भुलाकर अब अपने पिता का ध्यान करो, क्योकि उनकी दशा अच्छी नही है। उन्हाने बच्चो को यह भी बताया कि श्मशान मे जज साहब की ऐसी बुरी दशा हो रही थी कि डर हो गया था कि कही पत्नी के साथ वह भी न चल द।

बच्चे घबरा गये उन्ह डर हुआ कही उनके पिता भी उन्ह अकेला न छोड जाये। इस घबराहट म उन्होने अपने आसू पाछ डाले। वे जानते थे उनके पापा और मम्मी म कितना प्रेम था। उन्होंने अपन पापा को कभी अकेले खाना खात, घूमने जाते या सिनेमा जाते नही देखा था। इस बात को लेकर पडोस के घर मे अक्सर कहा-सुनी हो जाती थी। पत्नी अपने पति से उलहने भर शब्दो म कहती, "पडोस म नही दखते हा इस उम्र म भी वे हमेशा साथ साथ रहते है। एक तुम हो जो अकेले दास्ता के साथ गुलछर्रे उडात फिरत हो, घरवाली की परवाह तक नही करत।'

बच्चा के मन म भी यह प्रश्न उठा कि अब पापा क्या करेंगे ? बच्चे बडे थे। उनकी दुनिया अलग बनने लगी थी। वे अपना समय अध्ययन मे और मित्रा क साथ ही अधिक बिताते थ। उनक मन मे आया कि यदि पापा के भी अधिक मित्र होते तो व उनका कुछ दुख बटा सकते। दो चार दिन बाद व जिद करके उन्ह क्लब और सिनमा ले जाते, लेकिन उनके पापा न तो केवल एक को साथी बनाया था, और वह थी उनकी पत्नी।

जहा जज साहब पडे हुए थ वहा सब लोग थाडी थाडी देर के लिए जाकर बैठ आत लेकिन उनसे एक शब्द भी कहने का किसी को साहस नही होता था। बच्चे कमरे के दरवाजे तक ही जाकर लौट

आते थे, क्योंकि पिता को देखते ही उनके मन में आता था कि उनसे लिपटकर जोर-जोर से रोयें, लेकिन डर लगता था कि अगर उन्होंने ऐसा किया तो पिताजी और भी विह्वल हो जायेंगे।

वहीं पड़े पड़े जज साहब की झपकी लग गई। उन्हें सपना दिखाई दिया कि उनकी पत्नी उनका सिर दबा रही है। उन्होंने उसके हाथ पकड़ लिए और कहा—"तुम मेरा सिर मत दबाओ। मेरे पास आ जाओ।" यह कहते ही उनकी आंख खुल गयी पत्नी के हाथों का स्पर्श उन्हें अब भी अनुभव हो रहा था। लेकिन कैसा भ्रम था यह ? वे हाथ अब कहां ? उन्हें तो अपने ही हाथों से मैं अभी जलाकर आया हूं। इस विचार ने उन्हें और भी विकल बना दिया। आंखों में आंसुओं की धारा बह निकली। तकिये में मुंह छिपाकर वह अपने हृदय का बोझ हल्का करने लगे। उसी अवस्था में उन्हें नींद का एक हल्का सा झोंका आया और उन्हें दिखाई पड़ा जैसे उनकी पत्नी उनके पास खड़ी उनका कंधा पकड़कर उन्हें हिलाते हुए कह रही है उठो न खाने का समय हो गया है। वह चौंककर उठे पर उनके पास कोई न था। उन्होंने एक बार फिर आंखें बंद कर ली, इस आशा में कि शायद वह फिर स्वप्न में उन्हें दिखायी दे जाय। लेकिन इसी समय कुछ संबंधी वहां आ गये और जज साहब से खाना खाने के लिए चलने का आग्रह करने लगे। जज साहब के हृदय में एक हूक सी उठी और वह एक गहरी सांस छोड़ते हुए किसी तरह खड़े हुए।

तेरह दिन तक पृथ्वी पर सोने, खाने की अनियमितताओं तथा गहरे धक्के के कारण जज साहब बीमार हो गये। बच्चों को चिंता ने घेर लिया। तेरह दिन तक मेहमानों के कारण घर में जो चहल पहल थी वह भी शून्यता में बदल गई। छोटे लड़के दीपक को, जो इंजी-नियरिंग में बनारस में पढ़ रहा था, विवश होकर बनारस जाना पड़ा। बड़े लड़के प्रदीप को, जो उसी वर्ष प्रोफेसर नियुक्त हुआ था, कालेज जाना आरंभ करना पड़ा। छोटी लड़की आभा इंटर में पढ़ रही थी। उसकी कालेज की उपस्थिति बहुत कम हो गई थी इस कारण पिता के

आग्रह पर उसने भी कॉलिज जाना आरभ कर दिया। जज साहब को तेज बुखार आने लगा। प्रदीप कॉलिज जाते समय डाक्टर से हाल कह कर दवा लाकर दे जाता और बडी लडकी आशा दिन भर बैठी बर्फ की टापी जज साहब के सिर पर रखती रहती। बीमारी म जज साहब को पत्नी का न होना प्रतिक्षण खलता—ओह कितनी लगन के साथ सेवा करती थी वह ! बीमारी म वह दिन रात उनके पास बठी रहती थी। कभी सिर दबाती थी, कभी हाथ-पैर दबाकर सारा दद निकाल दती थी। खाना नहाना सब भूल जाती थी।

बुखार को दस-बारह दिन हो गय। डाक्टर ने कई बार अच्छी तरह परीक्षण किया, और कह दिया कि बीमारी कोई विशेष नही है, सदमे के कारण ही ज्वर है। प्रदीप और आशा बहुत चेष्टा करत कि पापा कुछ इधर-उधर की बातें सुनने मे मन लगायें, लेकिन वह तो दिन रात आखें बद किय पडे रहते और उनके सामने पत्नी के भिन्न-भिन्न अवसरों के चित्र आते रहत। उन्ह उसी म सतोष मिलता। हा, जब आखें खुलती तब वह एक गहरी सास खीचकर रह जात, अपने को बिल्कुल असहाय अनुभव करते। वह बिना पत्नी के कैसे अपना जीवन व्यतीत कर सकेंगे, रह रहकर यही सोच उनके मन मे उठता और उन्हें विह्वल बना देता।

अपनी पत्नी की बीमारियो के चित्र भी उनकी आखो के सामने आते—कब कब वह बीमार हुई, कितनी गभीर बीमारियो स बची, और कितनी बार उन्होंने मिश्री को उसके अच्छे होने की पार्टिया खिलाईं। लेकिन इस बार तो वह उन्ह छोड ही गई। उसने यह नही सोचा कि उनका क्या होगा, वह अकेले क्या करेंगे ! इस तरह के विचार उनके मन म आते, आखो म आसू छलछला आते और करवट लेकर वह तकिये मे मुह छिपा लेते।

उनकी आखो क सामने एक चित्र आया—दस वष पहले उनकी पत्नी को हेमरेज' होने के बाद सैप्टिक' हो गया था। डाक्टरो को भी उसके बचने की आशा नहीं थी। उस समय उनकी पत्नी ने उनसे कहा था—देखो विवाह तो तुम कर ही लेना, पर मेरे बच्चो का ध्यान

रखना, वे दु ख न उठायें।' उस समय उन्होंने उसे सान्त्वना देते हुए कहा था—'तुम घबराओ नही तुम अवश्य अच्छी हो जाओगी। ईश्वर ने उस समय उनकी सुन ली थी और उसे अच्छा कर दिया था। आज एक बार फिर उसके शब्द उनके कानो मे गूज उठे—'तुम विवाह अवश्य कर लेना।' दस वर्ष पहले की बात उन्हे ऐसी प्रतीत होने लगी जैसे अभी की बात हो। उनके मन ने प्रश्न किया—'क्या अब मैं विवाह नही कर सकता ?' इस प्रश्न ने उन्हे स्वय चौका दिया। फिर उन्होने सोचा, पचास वर्ष की आयु कोई अधिक नहीं है। लार्ड रीडिंग ने साठ वर्ष से भी अधिक की आयु मे और बर्टेण्ड रसेल ने अस्सी वर्ष की अवस्था मे दूसरे व तीसरे विवाह किये, फिर मैं क्यो नही कर सकता ? इतनी ऊची पोजीशन पर हू मैं, इतना रुपया है घर के बगले हैं। पचास वर्ष की आयु भी कहीं कुछ अधिक होती है। दस वर्ष पहले ही तो पत्नी ने कहा था कि आप शादी जरूर कर लीजिएगा। क्या अब दस साल ही मे मैं बूढा हो गया। इस विचार के आते ही जज साहब ने पास की मेज पर रखा हुआ शीशा उठाया। अपनी शक्ल देखकर वह स्वय ही घबरा गये। बढी अधपकी दाढी, गालो मे गड्ढे और झुर्रियां। बुढापा जैसे उन पर अट्टहास कर रहा था। उन्हे एक चक्कर सा आ गया, लेकिन उन्होने तुरत अपने को सभाला और यह सोचकर मन को धैर्य दिया कि उनकी यह दशा बीमारी और दु ख के कारण हो गई है। अच्छा होने पर जब वह पौष्टिक भोजन लेंगे तब उनमे फिर शक्ति और स्फूर्ति आ जायेगी।

धीरे धीरे जज साहब का ज्वर कम होने लगा और भविष्य के सुख की कल्पना ने उनके मुरझाए मुख पर चमक ला दी। उनके स्वास्थ्य को सभलते देख प्रदीप, आशा और आभा को भी बडी सान्त्वना मिली।

एक दिन जज साहब ने अपने मन की बात अपने एक मित्र से कही। वह सुनते ही चौक पडे और आश्चर्य मे बोले—"क्या कह रहे हो तुम ?"

'ठीक ही तो कह रहा हू। ब्याह नही करूगा तो शेष जीवन कैसे

जिता सकगा ?" जज साहब ने उत्तर दिया।

मित्र न वहा लकिन अब तुम्ह इसकी क्या जरूरत रह गई है! आशा ता तुम्हारे पास हमशा रहेगी ही। प्रदीप का विवाह कर दो, घर वम जायगा।

'प्रदीप के विवाह स मेरा घर कैसे बसेगा ?" जज साहब न पूछा।

"लायक लडकी सास ससुर की सेवा करना अपना पहला कतव्य समझती है। बटी और बहू मिल के तुम्हारी खूब सेवा करेंगी।" उत्तर मिला।

'मुझे किसी की सेवा की आवश्यकता नही, मुझे तो जीवन साथी चाहिए जा हर समय मर साथ रह सके। सुख मे भी और दुख मे भी। बीमारी म मर पर दवा सके ।'

बात का बीच मे ही काटकर मित्र बोले, "अब भाभी जसी पत्नी तो तुम्ह मिलने से रही। आजकल की लडकिया तो अगर एक बार पैर दबायेंगी ता चार बार दबवाने की आशा रखेंगी।"

*'ता क्या हुआ इससे ?'*

'तुम्हारी जसी इच्छा मुझे तो बात जची नही।" मित्र ने उत्तर दिया और फिर वह चलत बन।

जज साहब न कई दिन तक इस विषय पर सोचा और अत मे यही निश्चय किया कि उन्ह विवाह कर लेना चाहिए। इस निश्चय पर पहुचत ही उन्होन जल्दी से जल्दी एक समाचारपत्र म विज्ञापन छपवाया और पत्रव्यवहार के लिए अपने एक मित्र का पता दे दिया। एक सप्ताह क भीतर ही बीसिया पत्र और चित्र आ गए। जज साहब प्रतिदिन अपनी कार मे मित्र के घर जाते, पत्र पढने, चित्र दखते और चले आत। वह कुछ निणय नही कर पा रहे थे।

मित्र की लडकी आशा की सहेली थी। एक दिन उसने हिचकते हुए आशा से कहा 'मैंने सुना है तुम्हारे पिताजी विवाह करना चाहते है।'

"क्या कह रही हो रेखा ?' आशा न दढता से उत्तर दिया "पापा शादी करेंगे और वह भी इस उम्र म! वह तो मम्मी को इतना

चाहते थे कि जिस मेज पर दोनो खाना खाया करते थे उस पर अब वह बैठन तक नही । उनकी दशा ता इतनी शोचनीय हो गई थी कि बस जान बच गई, यही बहुत समझो । अब भी हम लोगो के बहुत कहने सुनने पर वह कभी कार म बैठकर बाहर घूमने चले जाते हैं ।'

रेखा उस समय चुप रह गई। आशा के इस विश्वास को वह तोडना नही चाहती थी।

उधर जज साहब जल्दी से जल्दी इस काम को निबटा लेना चाहते थे। इसलिए उन्होने पद्रह दिन बाद की कुछ तारीखे निश्चित करके लिख दिया कि वह लडकी को देखने आ रहे ह ।

प्रदीप के कानो मे जब यह भनक पडी तो उसे विश्वास नही हुआ, लेकिन उसने साहस करके पिताजी से कहा—"आजकल यहा एक अजीब अफवाह फली हुई है ।"

"क्या ?" जज साहब ने पूछा ।

'कि आप विवाह करना चाहते है ।' प्रदीप ने हिचकते हुए कहा।

"इसम अजीब बात क्या है ? विवाह तो मुझे करना ही पडेगा। इतनी लबी जिंदगी अकेले मै कैसे काट सकता हू ?"

"पापा, आप अकेले कहा है ! हम ता सदा आपकी सेवा के लिए तयार है ।'

"तुम कितनी भी मेरी देखभाल करो, लेकिन जितनी सेवा पत्नी कर सकती है उतनी तुम लोग नही कर सकते। और फिर, तुममे से कौन मेरा साथ दे सकेगा ! तुम्हे कही और नौकरी मिल जायेगी तो क्या तुम नही जाओगे ? आशा और आभा क्या मेरे घर ही पडी रहेगी ? दीपक अभी छोटा है ।'

जज साहब की विधवा बेटी आशा कमरे के बाहर स प्रदीप और जज साहब की बाते सुन रही थी । अब वह अपने को नही रोक सकी। कमरे म आकर उसने रोते हुए कहा, "पापा, मैं क्या करूगी ? मेरा क्या होगा ?"

'तेरा क्या होगा ? तेरा भी दूसरा विवाह कर दूगा ।"

'मैं अब दूसरा विवाह नही करूगी, अपने मुन्ने पर दूसरे पिता की

छाया नही पडने दूगी।"

"मत करना, घर म ही रहना।"

'दूसरी मा मुझे और बच्चे को रहने देगी ?'

"रहने के लिए कोई मना नही कर सकता।"

मा के मरने के दिन लडकिया जितना रोई थी उससे अधिक वे उस दिन रोइ। जज साहब ने जाने की तैयारिया आरभ कर दी। बढिया से बढिया कपडा वह अपने सूटो और बुशशर्टों के लिए लाये। चलने वाले दिन उन्होने अपने बालो को रगा, बढिया सूट पहना। नये जूते पहन नौकर से कार मे सामान रखने को कहकर, चलते समय वे प्रदीप से बोले, "अब मैं शादी करके ही लौटूगा। जो लडकी पसद आ जायगी उससे वही सिविल मरिज कर लूगा।"

प्रदीप ने कोई उत्तर नही दिया।

प्रदीप के मन ने विद्रोह किया और उसने उस घर मे न रहने का दृढ निश्चय कर लिया। रोती हुई बहनो को समझा दिया कि नई मा के आने स पहले ही वह उन्हे दूसरे मकान मे ले जायेगा।

सबसे पहले जज साहब दिल्ली गये। वहा एक डाक्टरनी से उनका 'इटरव्यू' था। वह चाहते थे कि डाक्टरनी से उनका विवाह हो जाय तो अच्छा रहे, वह घर मे ही उसे ताकत के इजेक्शन लगाती रहेगी और वह स्वस्थ बने रहेगे। लेकिन उसे तो देखते ही वह चौंक पडे—नाटा कद, मोटा शरीर, रग गेहुआ, उस पर चेचक के काले दाग आखो पर चश्मा। बातो मे डाक्टरी रूखापन। जज साहब की आखो के सामने उनकी पत्नी की शक्ल और मुस्कराहट आ गई। अपने को सभालकर उन्होंने डाक्टरनी से कुछ बातें की और फिर पत्र द्वारा अपना निणय भेज देने का आश्वासन देकर वह वहा से चल दिये।

दिल्ली मे ही एक मास्टरनी से भी उनका 'इटरव्यू' था। मास्टरनी की आयु पतीस वष की थी और वह बाल विधवा थी। जज साहब को विश्वास था कि मास्टरनी की सूरत शक्ल और बातो मे इतना रूखापन तो नही होगा। वह सोच ही रहे थे कि इतने म एक बहुत ही

दुबली-पतली, काली लडकी हाथ मे मिठाई की ट्रे लेकर आई। उसने कहा, 'क्षमा कीजिएगा मैं यहा अकेली ही रहती हू। आज मेरी नौकरानी भी बीमार है।"

जज साहब समझ गए कि यही मास्टरनी साहिबा हैं। मन म विचार आया कि यह मेरी क्या देख रख और सेवा करेगी मुझे ही इसकी सेवा करनी पड जायगी। मन की निराशा को दबाकर उन्होंने उससे कुछ प्रश्न किये। कुछ देर वह वहा रुके और फिर 'पत्र से निर्णय लिखूगा,' कहकर वहा से चल दिये।

तीसरा 'इटरव्यू आगरे मे एक गर्ल्स कालेज की आचार्या से था। निश्चित समय पर जज साहब वहा पहुच गये पर उन्हे बडी देर प्रतीक्षा करनी पडी। नौकर पहले शर्बत बनाकर द गया। फिर उनके सामने एक छोटी मेज रख गया। कुछ देर मे एक नौकर चाय की ट्रे और दूसरा नौकर मिठाई नमकीन की प्लेटें लेकर आया। साथ ही जज साहब ने देखा, एक लबे चौडे शरीर वाली महिला, बढिया साडी पहन उनकी ओर चली आ रही है। पाउडर म से उसकी काली चमडी चमक रही थी। एक आख किनारे पर से कुछ दबी हुई थी, जो चश्म म से दिखाई दे रही थी। उसे देखकर जज साहब का दिल धडकने लगा। उन्हे अपनी पत्नी की याद आ गई और उन्होंने सोचा कि अगर वह न मरती तो मुझे ये शक्लें क्या देखनी पडती। आचार्या के डील-डौल के सामने उन्होंने अपने को बच्चा सा अनुभव किया। कुछ देर बातचीत करके उन्होंने उससे भी विदा ली।

रात की गाडी से ही वह लखनऊ चले गये। लखनऊ म उनके एक मित्र थे। वह उनके घर ठहरे। किसलिए वह आये है, यह बताते हुए उन्हे सकोच हो रहा था। लेकिन यह सोचकर कि बात छिपाई नही जा सकती, उन्होंने अपने मित्र को सब बाते बता दी। उनके मित्र ने उनकी बात का समर्थन करते हुए कहा—'ठीक है, तुम्हे विवाह अवश्य कर लेना चाहिए।' मित्र की पत्नी ने भी उनकी बात का समर्थन करते हुए कहा, "पत्नी जैसी देखभाल कोई नही कर सकता।'

मित्र ने पत्नी की बात का समर्थन करते हुए कहा, 'अरे भई

मैं भी तो तुम्हारी उम्र का था, जब दूसरी शादी की थी। इन पाच वर्षों मे कई बार बीमार हुआ इन्होने दिन रात एक कर डाले। पहली ने कभी मेरी इतनी सेवा नही की थी, क्याकि वह स्वय ही बीमार सी रहती थी। पाच बच्चो मे बब्बू और मुन्नी बचे थे, उनका भी स्वास्थ्य अच्छा नही रहता था, इसलिए वह उन्ही मे लगी रहती थी।"

जज साहब ने कहा, "हा, बब्बू व मुन्नी कहा है ? उन्हे पूछना तो मैं भूल ही गया।'

"मुन्नी का ब्याह ता पहली के सामने ही हो गया था। उनकी मृत्यु के बाद जब मैंने यह ब्याह किया तब मुन्नी बब्बू को अपने साथ ले गई, तब स वह वही है।'

मित्र की पत्नी ने बात बदलते हुए कहा, "दीपू को सवेरे से कई दस्त आ चुके है। वैद्यजी को दिखाकर उसकी दवा लानी है।"

मित्र ने कहा, "अभी खाना खाकर उसे वद्यजी को दिखा लाऊगा।'

अदर मे कई बच्चो के लडने और राने की आवाज सुनकर मित्र की पत्नी अदर चली गयी। मित्र ने जज साहब को बताया कि तीन लडकिया के बाद यह लडका हुआ है, सो भी बीमार रहता है।

खाना खाते समय लखनऊ मे जो लडकी देखनी थी उसके विषय मे बातचीत हुई। मित्र ने बताया, लडकी बडी अच्छी है। बाप गरीब है, हैडमास्टर है इसलिए अभी तक उसका विवाह नही हुआ। आयु छब्बीस सत्ताईस के लगभग होगी।

चार बजे का समय हैडमास्टर साहब के घर जाने के लिए निश्चित हुआ था। जज साहब अपना बढिया सूट पहनकर टैक्सी मे उनके घर गये। बाहर बरामदे म ही हैडमास्टर साहब मिल गये। अपने साथ वह उन्हे अपने छोटे-से पर सजे हुए ड्राइग रूम म ले गए। कुछ देर मे एक नौकर चाय की ट्रे लेकर आया। हैडमास्टर साहब न कहा, "रेखा को भी बाहर भेज दो।'

कुछ देर मे रेखा कमरे मे आई। हैडमास्टर साहब ने रेखा से उनका परिचय कराया। रेखा चाय बनाने लगी। शक्ल से वह बडी

सुशील लगती थी। रग सावला था, लेकिन पतला नक्शा, बडी बडी आखे, मह पर भालापन। जज साहब उसे देखते ही मोहित हो गए। उन्हे ऐसी ही पत्नी चाहिए थी।

चाय के बाद हैडमास्टर साहब जज साहब से यह कहकर कि आप दोनो बातचीत कीजिए, मैं अभी आता हू बाहर चले गये।

जज साहब ने रत्ना से पूछा, "एम० ए० आपने किस विषय म किया है ?"

"पौलिटिकल साइस मे।

"क्या डिवीजन आया ?'

'सेकण्ड।"

"और आपक क्या-क्या शौक ह ?"

"मुझे सगीत म बहुत रुचि ह, इस वष सगीत विशारद की परीक्षा द रही हू।'

जज साहब ने कहा—"बहुत अच्छा शौक है। घर के कामकाज म भी आप बहुत निपुण होगी ?'

"नही, उनमे मुझे अधिक रुचि नही।"

"लेकिन लडकियो को तो सबसे अधिक रुचि घर गहस्थी के कामों ही मे होनी चाहिए। खैर कोई बात नही, ब्याह के बाद सब आ जा पड जाएगी। हा, आपके पिताजी सिविल मरिज करने का तैयार हो जायेंगे ?"

'किसकी ?

'आपकी।"

"किसके साथ ?"

"ऐं ऐं मेर साथ।" जज साहब ने हिचकते हुए कहा।

'लेकिन मैं तो विवाह करने के लिए तैयार नहीं हू।"

'तो फिर आपके पिताजी ने मुझे बुलाने का पत्र क्यो भेजा ?' जज साहब ने पूछा।

'आपने अपनी उम्र चालीस क आसपास लिखी थी, लेकिन आप तो पचास वष स भी अधिक के लगते हैं। मेरी उम्र स दुगने। मैं

आप मुझे विधवा बनाने के लिए विवाह करना चाहते है ?"

जज साहब को जैसे एक जोर का धक्का लगा। खिसियाये से उठ खड़े हुए, और जाकर टैक्सी मे धम्म से बैठ गये।

मित्र के घर पहुचकर जज साहब ने रेखा के स्वभाव की बडी बुराई की। मित्र की पत्नी ने कहा—"कालेज मे पढकर लडकिया विगड जाती है। मेरी एक भतीजी है मामूली पढी लिखी है पर है सुदर। घर के काम-काज म बडी चतुर है। सत्ताईस वष की हो गई लेकिन अभी तक उसे कोइ योग्य वर नहीं मिला। मेरे भाई बहुत गरीब हैं। दस हजार से कम कोई नही मागता इसलिए अभी तक कुवारी बठी है। उसका ब्याह मेरे हाथ म है। आप कहें हम उसके लिए बात पक्की कर। कल जाकर आप उसे देख सकते हैं।'

जज साहब ने कहा "ठीक है, जब आपको पसन्द है तो मुझे भी पसद आ जायगी। मुझे भी सीधी सादी लडकी ही चाहिए।"

रात को जज साहब का कइ घण्टे नीद नही आई। जिन लडकिया को उन्होंने देखा था उनके चित्र उनके सामने आते रहे और अब जिस लडकी को देखने वाले थे उसका भी कल्पित रूप उनके सामने आता रहा। उन्हें आशा थी कि इस लडकी स उनका सबध अवश्य हो जायेगा। वह इन्ही विचारो मे लीन थे कि पास वाले कमरे से मित्र की पत्नी की आवाज उनके काना मे पडी। वह कह रही थी "जरा जल्दी उठो देखो दीपू सारा सन गया है उठकर बिजली जला दो।

मित्र ने ऊघते हुए उत्तर दिया 'क्या बात है ?"

पत्नी ने झल्लाकर कहा "अभी यही पूछ रहे हो कि क्या बात है! एसी भी क्या नीद हो गई! कह रही हू, दीपू सारा सन-पुत गया है और साथ मे मैं भी बडे जोर का दस्त आया है।'

मित्र के चौंककर अच्छा कहने और साथ ही बिजली जलाने की आवाज आई। मित्र की पत्नी ने कहा, 'थोडा सा फटा कपडा दे दो और पानी ला दो। विलग पर से दो-तीन तिकोने उतार दो।'

पानी लाने और बतना के खटकने की आवाज के साथ साथ दीप

के चिल्ला चिल्लाकर रोने से, पास मे सोई हुई मुन्नी भी जागकर रोने लगी।

पत्नी ने झुझलाकर कहा, "तुझे भी अभी जागना था !" फिर पति से कहा, "रामू को आवाज दे दो। वह दूध गरम कर देगा।'

मित्र दीपू को गोद म लिये खासते हुए बाहर निकल और उन्होने रामू को जगाया। जब तक दूध गरम नही हुआ, दोना बच्चे राते रहे। बच्चे दूध पीकर सो गये पर मित्र के खासने की आवाज जज साहब का बडी देर तक सुनाई देती रही। उनकी नीद और भी उचट गई। वह साचने लगे कि बुढाप म फिर से विवाह करके उन्ह भी इन परिस्थितिया का सामना करना पडेगा। इस विचार से उन्ह एकाएक बडी घबराहट सी महसूस हुई। दूसरे ही क्षण उनके मन मे आया, वह बच्चे होने ही नही देंग। लेकिन उनके मन ने कहा—जिस लडकी से विवाह करोग, क्या यह उसके प्रति अन्याय नही होगा ? क्या उस लडकी के मन म मा बनन की लालसा नही होगी ? उन्होने साचा, उनके पास बहुत पसा है। जितने बच्चे हाग उनके लिए वह आया रख सकते है। रात को जागकर बच्चो को सभालने की क्या आवश्यकता है ? तभी उनके सामने आ गया कि जब प्रदीप छोटा था, उसके लिए आया थी, तब भी उसकी बीमारी म वह और उनकी पत्नी रात रात भर जाग कर उसकी देखभाल करते थे। क्या अब जो बच्चे हागे उनकी उन्ह कम ममता होगी ? क्या ५० वप की आयु म अब यह काम उनके वश का है ?

मन ही मन जज साहब काप उठे। उनके मस्तिष्क मे एक हलचल-सी पैदा हो गई। इधर से मन हटाकर जज साहब ने झपकी लेन की चेष्टा की ही थी कि एकाएक दीपू फिर जाग उठा। इस बार वह फिर सन गया था। मा भी सन गई थी। पिता को भी साते-सोते उठकर धोने धुलाने का काम करना पडा। फिर घटो तक मित्र का खासी आती रही, उन्ह कुछ दम की शिकायत रहती थी। खासने के बाद ऊची-ऊची आहो की आवाज जज साहब के कानो म पडती रही। निश्चय ही इस उम्र मे ब्याह करके वह खुश नही था। जज साहब

ने अपने हृदय पर एक बोम सा अनुभव किया, एक निरथकता की भावना उनके राम रोम मे समाने लगी और सवेरे जब वह सोकर उठे तब उन्होने पहला काम किया डाकखाने जाकर प्रदीप को तार देने का—"वेटा, मैं अकेला ही लौट रहा हू।"

# रामू

धडाके की आवाज से रामू और उसकी मा दोनो की ही नीद टूट गई। व एकसाथ उठ बैठे और धडाके के रहस्य को समझने मे उन्ह देर न लगी। बडी-बडी बूदो ने, जो एकसाथ कोठरी म भरन लगी थीं, यह स्पष्ट कर दिया था कि छत का एक टीन आधी मे उडकर नीचे जा गिरा है।

रामू बोला, "जाकर उठा लाऊ, मा ?"

'नहीं लल्ला, ऐसी आधी-बारिश मे, में तुझे बाहर नही जान दूगी।' और मा ने रामू को अपने पास खीच लिया।

आधी का वेग कुछ धीमा पडा, पर वर्षा अपने पूरे जोर पर थी। कुछ ही क्षणो म सारी कोठरी मे पानी बहने लगा। रामू और उसकी मा अपनी टूटी खाट का एक कोने म सरकाकर, सिकुडकर उसपर बठ गय। कोठरी मे घार अधकार छाया हुआ था। कभी कभी बिजली की चमक इन मा बटे के दारिद्र्य को चमका देती थी।

मा न निस्तब्धता को भग करते हुए कहा, "लल्ला, तू सो जा। सवेर ही नौकरी पर जाना है। देर हो जायगी तो मालकिन बिगडेगी।"

रामू जैस सोत से जाग गया हो। मालकिन का नाम सुनते ही वह एक बार सिहर सा गया और मा के और नजदीक सरक आया। मा उस का सिर अपनी गोद म रखकर उसके माथे पर हाथ फेरने लगी। थोडी

ही देर मे रामू नीद म वेसुध हो गया। मा के हृदय मे अतीत की स्मतिया जाग उठी। उसका दिल भर आया। किस तरह उसन पीरजी की मिन्नत मानकर कई बच्चा के बाद अपने इस लाल को जिलाया था, लेकिन बाप के मर जाने से किस तरह उस जरा-मे बच्चे पर जीविका निर्वाह करने का भार पड गया। मा के लिए यह बात असह्य थी। वह चाहती थी कि उसे छाती से लगाकर रखे। वह सोचती थी अभी उस की उम्र ही क्या है ? चौदहवें म ही तो है। अभी से मालिक माल किना की घिडकिया खानी पडती है। लेकिन वह करे क्या ? खाने क लिए पैसा कहा स लाये ? उसने भी पति के सामन कभी नौकरी नही की थी। करती भी कैसे ? दूसरे की नौकरी करवाने मे पति अपना अपमान जो समझते थे। लेकिन अब विपदा मे पड जाने पर वह भी जितना हो सकता है पीसने कूटने का काम कर लेती है। इसमे अधिक उसमे दम नही। इसलिए उसे अपने इकलौत बेट को नौकरी पर भेजना पडता था।

सवरे के धुधलके मे जस ही रामू की आख खुली, वह आखें मलता हुआ नौकरी पर चल पडा। आधा रास्ता पार करने के बाद उसे रात्रि म काठरी क टीन उडने का ध्यान आया। कोई उठा न ले जाय, इसलिए उसके मन मे आया कि वह इसी समय जाकर उसकी खोज करे, पर नौकरी पर पहुचने को देर हो जाती, इसलिए उसे लौटने का साहस नही हुआ।

नियमानुसार रामू को दरवाजा खुला हुआ मिला। मालिक पाच बजे उठकर घूमने जाते थे इसलिए उसे आकर दरवाजा खटखटाना नही पडता था। घर मे घुसत ही मालकिन के कमर म झाका। वह सो रही थी यह देखकर उसन सतोष की सास ली और मशीन की भाति काम म जुट गया।

सब कमरो को झाडने बुहारन के बाद जब वह रसोईघर मे पहुचा तो सन्न रह गया। चाय के चार पाच बतन टूटे पडे थ। आज तो जरूर मार खानी पडेगी, इस ध्यान से वह सिहर उठा।

"रामू, ओ रामू ! यह आवाज सुनकर वह दौडकर मालकिन क

कमरे मे आ गया । मालकिन ने पूछा, "चाय मे क्या देर है ?'

"तैयार है ।'

"साहब आ गए है ?"

'अभी नही आए ।'

'मुह धोने का पानी रखो," कहकर मालकिन पलग से उठी और वराडे मे आइ । चाय के वतन मेज पर न देखकर मालकिन चल्ला उठी— 'क्या र रामू अभी तक चाय की टेबिल तयार नही की ? पचास दफा कह दिया गधे से जल्दी आया कर । आराम तलवी की आदत पड गई है । आठ बजे घर से निकलकर आया होगा ।"

'नही बहूजी ! आ तो जल्दी गया था पर चाय के बतन टूटे पडे थे, इसलिए नही रखे ।'

'टूटे पडे थे,' मालकिन ने क्रोधमिश्रित आश्चय मे पूछा । उसी समय वह रसोईघर म गई और वहा टूटे प्याला को देखकर आग-बबूला हो उठी ।

"यह क्या किया रे तून, गधे क बच्चे ? बोल ! '

"बहूजी, मैंने नही तोडे । टूटे पडे थ ।'

झूठा कही का ! सच बता कैसे टूट ? ' मालकिन न थप्पड लगाने को हाथ उठाया ।

"मैं सच कहता हू, मैंने नही तोडे, टूटे पडे थे !' इतने पर भला मालकिन कसे रुकती । फिर झूठ बोले जायेगा," कहते हुए उन्होने रामू के तीन चार चाट रसीद किए । इतने मे साहब आ गय । उ हे देखकर उसका हाथ ढीला पड गया । उ होन पूछा, "क्या बात है ?"

'चार प्याले तश्तरी ताडकर रख दिए ह । ऊपर मे झूठ बोलता है कि मैंने नही तोडे, टूटे पडे थे ।'

"अब की तनख्वाह म से सब काट लेना, ठीक हो जायगा ।'

"और क्या । जब गाठ से जायगा तब होश से काम करगा ।"

नये प्याले निकले । चाय पी गई । हसी मजाक होता रहा । उधर रामू बठा हुआ अपने भाग्य को कोसता रहा ।

तनख्वाह म से पसे कटेंगे, यह बात रामू को पिटने से भी अधिक

दुख दे रही थी। सारे दिन मालकिन का पारा चढा रहा। इतना नुक-सान कर दिया था रामू ने, उस पर फिर गुस्सा क्यो न आता ? रात क ग्यारह बजे तक दम मारने की छुट्टी नही मिली। फिर चलते समय मालकिन ने कहा "जाओ सवेरे जल्दी आना।'

रामू ने घर की राह ली। सारा रास्ता कीचड से लथपथ था। रात्रि के सन्नाटे म सभलता कपडो को कीचड से बचाता वह घर पहुचा। मा बैठी राह देख रही थी। उस आता देखकर उठी। दिये की बत्ती जरा ऊची की। लोटे मे पानी लाकर उसने बेटे के पैर धोए। सूजी हुई अगुलियो म तेल लगाया। वह लेट गया मा के पास। मा उसका सिर सहलान लगी।

रामू चौककर बोला "मा, हाथ गम है, क्या तुझे बुखार है ?'

"हा लल्ला, बुखार तो दिन भर ही चढा रहा। अब भी है।"

"फिर ? चिंता म डूबे हुए रामू ने पूछा।

फिर क्या ! कल तक उतर जायेगा।"

रामू मा के पास सटकर सो गया।

तीन दिन बीत गये, वर्षा नही रुकी। आज फिर जब रामू घर लौटा तो मा पानी लाने के लिए उठने लगी। रामू ने उसे रोकत हुए कहा, 'नही मा, तू मत उठ, मैं धो लूगा। तेरा बुखार ता अभी तक नही उतरा।'

"तुझ से अगुलियो की मिट्टी नही धुलेगी। दद बढ जायेगा।' यह कहकर मा ने उसके पर धोये और प्रेम से तेल लगाया।

रामू बाला, 'मा, कोठरी म बास आ रही है।'

"हा लल्ला, तीन दिन से धूप नही निकली है। सीलन की बदबू है।"

"टीन तो अब महीने के अत म ही पडेगा। इतने दिन कैसे कटेंगे ?"

मा न चिंतापूण स्वर मे कहा, "क्या बताऊ ?"

'तरा बुखार भी नही उतरा।"

दोनो कुछ देर चिंतामग्न बैठे रहे। फिर उस निस्तब्धता का भग करते हुए रामू ने एकाएक कहा, "मा, तू कुछ दिनो के लिए मामा के पास चली जा न ! बुखार भी वहा ठीक हो जायेगा। वहा अच्छा घर है। इस बीच मैं टीन भी डलवा लूगा। महीने के आठ दिन तो बचे ही है, और मामा ने तुझे बुलाया भी है।"

"सोच तो मैं भी रही थी, पर तेरे मारे जाने का जी नही करता। तू बिल्कुल ही अकेला रह जायेगा।'

'नही मा, तू कल चली जा। तू यहा अच्छी नही होगी। मामा अच्छे हकीम को दिखाकर तुझे दवा दिलवा देंगे।' यह कहकर रामू ने अपनी मा को सुला दिया पर उसे स्वय नीद नही आई। कल वो मा उसके समीप नही होगी, यह कसक उसके दिल म उठती रही।

तारा की छाह मे उठकर रामू ने मा के कपडा की गठरी बाधी। मा का साथ लेकर, गठरी उठा, चौपले पर पहुचा। वहा उसे टमटम की प्रतीक्षा म एक पड के नीचे बिठा लौट पडा। मन चाहता था कि मा जब तक टमटम मे बैठे वह वही रह , लेकिन नौकरी पर जल्दी पहुचना है, इस भय ने उसे वहा रुकने न दिया। मा से पीठ फेरते ही उसकी आखा म आसू छलक आए। उन्ह पीकर वह नौकरी पर पहुचा।

कई दिन की झडी के बाद सूय की किरणें चमकीं। रामू के मन म भी मा को लिवा लाने की लालसा जाग उठी। मा को गये हुए आठ दिन बीत गये थे। य आठ रातें मा से अलग बिताना असह्य हो उठा था। दिन भर की झिडकियो के बाद रात को मा का दुलार पाकर वह सब भूल जाता था, पर अब तो रात भी मालकिन के घर काटनी पडती थी।

मा के लाने के लिए एक दिन की छुट्टी चाहिए, वह कैसे मिलेगी, इस विचार म रामू दिन भर डूबा रहा। रात को ग्यारह बजे जब रामू को काम से छुट्टी मिली, वह टूटे खटोले पर जाकर पड गया। पैर की पीडा के कारण वह थोडी देर तक छटपटाता रहा। फिर दृष्टि पडी काले आकाश मे बिखरे हुए असख्य तारा पर। वह उन्हीं मा देखता

रहा। न जाने कब नींद आ गई।

वह एक स्वप्न देखने लगा कि जैसे वह घास का एक बड़ा भारी गट्ठर ले जा रहा है। पीछे उसकी मालकिन आ रही है। रास्ता बड़ा ककरीला और ऊंचा नीचा है। वह बराबर चलता जा रहा है। उसकी सूजी हुई अंगुलियों में पत्थर के छोटे छोटे कण घुस घुसकर रक्त निकाल देते हैं। वह सी कर लेता है दिल में, पर एक क्षण भी नहीं रुकता। रुके भी कैसे ? साथ मालकिन भी है और काम जल्दी का है। एकाएक उसके कानों में मां की आवाज आती है। वह उसी जगत में एक बहुत ऊंची चट्टान पर खड़ी पुकार रही है 'लल्ला, आ जा, मैं ऊपर हूं'

वह चौंककर ऊपर देखता है। मालकिन के कानों में जैसे ही यह आवाज पड़ती है वह कड़ककर उत्तर देती है, वह नहीं आ सकता। इस समय काम पर जा रहा है।

फिर उसी दर्द भरी आवाज में मां कहती है, रामू, आ जा। मैं बड़ी देर से वहां तेरा इंतजार कर रही हूं।

वह वचन हो उठता है। उसके पैर वहीं रुक जाते हैं। वह ऊपर अपनी मां को देखने लगता है। पीछे से मालकिन धक्का मारती है और डांटती है, चलता क्यों नहीं बदमाश! साथ ही बड़े जोर से धमाका होता है। वह देखता है तो मां दिखाई नहीं देती। वह गिर पड़ी है इस ध्यान से वह मां! मां! चिल्लाता, गठरी फेंककर भागता है

उसी क्षण उसकी नींद खुल गई। वह पसीने में नहा रहा था। उसने देखा, तारे उसी भांति आकाश में मुसकरा रहे थे। उसके मन में आया कि उठकर मां के पास चल दे। पर रात में चोरों की तरह भागना ठीक नहीं है यह सोचकर वह वहीं पड़ा आकाश को देखता रहा। कानों में मां की वाणी गूंज रही थी रामू, आ जा। मैं बड़ी देर से यहां तेरा इंतजार कर रही हूं।'

धीरे धीरे नक्षत्रों की ज्योति धीमी पड़ने लगी। रामू उठ बैठा। कुछ देर तक वह चंद्रमा के चारों ओर की सफेदी को निहारता रहा, फिर उठकर प्रतिदिन की भांति काम में जुट गया और मालकिन के उठने की बेचैनी से प्रतीक्षा करता रहा।

मालकिन उठी। साहब आये चाय शुरू हुई। हंसी मजाक का दौर चला। रामू चाय रखकर एक कोने में इसी समय की प्रतीक्षा में खड़ा था। अनुकूल समय देखकर वह आगे आया और मालकिन से विनीत स्वर में बोला, "बहू जी, आज दिन भर की छुट्टी दे दो, मां को लाना है।"

"आज छुट्टी नहीं मिल सकती काम बहुत है।" मालकिन ने फौरन ही उत्तर दिया।

रामू ने फिर साहस बटोरकर कहा, 'मैं सूर्य डूबने से पहले ही आ जाऊंगा।"

"कह दिया न कि आज छुट्टी नहीं मिल सकती। छुट्टी के बहाने तो तुम लोग रोज निकाल ही लेते हो।"

'बहूजी, बहाना नहीं है। मां बीमार है। रात सपने में भी रोती दीखी। यह कहकर रामू रोने लगा। मालकिन का क्रोध और भी बढ़ गया। पति की ओर देखकर कहने लगी, देखी जिद नवाब साहब की! जब छुट्टी मांगे तभी मिलनी चाहिए। सपना दीख गया तो छुट्टी दो। मुझे आज इतना काम है कि हद नहीं।'

'दिन छिपने से पहले आ जाऊंगा।

"कह भी दिया कि आज छुट्टी नहीं मिल सकती। आज मेहमान आने वाले हैं काम ज्यादा है।'

रामू मन मसोसकर रह गया। दो घंटे बाद ही उसके गांव के किसी परिचित की आवाज ने उसे चौंका दिया। उसने आकर रामू को बताया कि मां की हालत खराब है, रात से बेहोश है। रामू सन्न रह गया। उसने उस व्यक्ति को मालिक और मालकिन के सामने खड़ा कर दिया। जो कुछ उस व्यक्ति ने वहां उसे मालिक व मालकिन दोनों ने ही सुना। परंतु मालकिन पर उसका बिल्कुल भी असर नहीं हुआ। उन्होंने कहा, 'यह सब झूठ है। यह आदमी रामू का सिखाया हुआ है। मैं कई दिनों से देख रही हूं इसका काम से जी उचट रहा है। पहले खुद छुट्टी की जिद की, जब नहीं मिली तो दूसरे को सिखाकर ले आया।'

वह व्यक्ति बोला, "नहीं माजी धरम से कहता हूं, मैं तो अभी

गाव से आ रहा हू । इसके मामा ने भेजा है । रात से इसकी मा की हालत खराब है।"

"ऐसे जरा से बुखार मे हालत खराब नही होती ! बुखार तो आता रहता है । नौकरी तो नौकरी है । हर वक्त छुट्टी नही मिल सकती ।'

उस व्यक्ति ने फिर गिडगिडाकर कहा, "हालत खराब है, बचना मुश्किल है । आज तो भेज दो ।'

'हालत खराब है, फिजूल की बात है । कल को मेहमान आने वाले है । एक दफा कह दिया छुट्टी नही मिल सकती ।"

वह व्यक्ति और कुछ कहने ही वाला था कि मालिक बोले, "ऐसी क्या बात है, परसो भेज देगे ।"

उस व्यक्ति ने कहा "बेहोश पडी है रात से ।"

मालिक ने कहा, 'बुखार तेज होगा सो एक दो दिन मे उतर जायगा ।

मालकिन ने भी कहा "समझते तो है नही, बिना बात की जिद करते हैं । कह दिया, बुखार नही उतरा तो परसो भेज देंगे, फिर भी बात समझ मे नही आती ।" रामू से बोली, "जाओ, जाकर अपना काम करो ।'

मालकिन और कामो मे लग गई और रामू ने रोते रोते आखें सुजा ली । खाना भी नही खाया ।

लेकिन वहा उसका कौन था । काम का आडर मिलता रहा और वह आसू पोछ-पोछकर काम करता रहा । स्वप्न मे मा पहाड पर से गिर पडी है—यह विचार तीर की भाति उसके चुभ रहा था ।

"रामू, जल्दी आओ, बाजार जाना है" मालकिन ने आवाज लगाई । रामू पहुचा । सामान के नाम बताये गये, पैसे मिले । फिर हुक्म हुआ, 'भागकर जाना । कही रुकना मत, बहुत काम पडा है । मालकिन की आज्ञा लेकर रामू सूजी आखे व फूली अगुलिया लेकर बाजार की ओर दौड पडा । एकाएक मा की आवाज ने उसे चौंका दिया, 'लल्ला, मैं यहा हू, तू आ जा । उसने पागलो की तरह चारो ओर देखा परतु मा

कही नही दिखी। उसके मन मे आया—यह तो मा की ही आवाज थी, फिर वह कहा छुप गई ? इतनी पास की ता आवाज थी। फिर उसे ध्यान आया कि मा वहा कैसे आ सकती है ? वह तो बीमार है, शायद वही से मुझे बुला रही है उसकी आत्मा । वह बाजार से लौट पडा और चल पडा गाव की ओर। थोडी देर मे उसने भागना आरभ किया। उसको लगा, सिर पर लाठी पडने ही वाली है। वह और जोर से भागा। ठोकर लगी, जेब से पैसे खनखना उठे, अगुली से खून निकलने लगा। पीछे मुडकर देखा, पर कोई भी नही था।

उसको ध्यान आया, मालकिन प्रतीक्षा करती होगी। वह उनका सामान क्या नही दे आया लेकर ! उसके पर धीमे पड गए। उसने साचा लौट चले ऐसे भागकर जाना ठीक नही है। वह रुका पर उसी क्षण उसके कानो म मा की आवाज फिर गूजी और उसके पैर जिधर पहले जा रहे थे उधर ही तेजी से चल पडे।

चलते चलते रामू फिर दौडने लगा। उसे लगा जसे मालिक पुलिस लेकर उसके पीछे दौड रहे है चिल्ला रहे है, 'पकडो, चोर है, पैसे लेकर भाग रहा है। वह चिल्ला पडा, 'मैं चोर नही हू। पसे लेकर नही भाग रहा हू। मा बुला रही है मैं वहा जा रहा हू।' और वह बतहाशा भागता रहा। भागते भागते उस दा घटे हो गये। उसने सास नही ली। अगुलियो से रक्त निकल रहा है, यह दखने का उसे समय नही मिला। वह भागा जा रहा था मा के समीप। उसने सोचा था कि मा की गोद म ही पहुचकर वह साम लेगा। वह उसे चिपटा लेगी, उसका सिर सहलायेगी, उसकी अगुलियो से रक्त पोछेगी। वह उसे बुला रही है।

उसे दूर से दिखाई दी नीम की टहनिया, पत्ता से लदी हुई धुली-धुली। यह वही नीम है जिसके बगल म उसके मामा का घर है। मा वही से बुला रही है। वह भागता रहा।

पेड के नीचे कोई खडा है, उसने दखा। वह दुगने उत्साह से भागा। हष के आसू उसके कपोलो को भिगोने लगे। अब मा मिलेगी। यह तो मामा हैं, उसने देखा और वही से चिल्ला पडा, "मामा, मैं आ गया।

गाव से आ रहा हू । इसके मामा ने भेजा है । रात से इसकी मा की हालत खराब है।

"ऐसे जरा से बुखार म हालत खराब नही होती ! बुखार ता आता रहता है । नौकरी ता नौकरी है । हर वक्त छुट्टी नही मिल सकती ।'

उस व्यक्ति ने फिर गिड़गिडाकर कहा, "हालत खराब है, बचना मुश्किल है । आज ता भेज दो।'

'हालत खराब है, फिजूल की बात है । कल को महमान आन वाले ह । एक दफा कह दिया छुट्टी नही मिल सकती ।"

वह व्यक्ति और कुछ कहने ही वाला था कि मालिक बोले, 'एसी क्या बात है, परसा भेज देंग ।"

उस व्यक्ति न कहा, "बेहोश पडी ह रात से ।"

मालिक न कहा 'बुखार तेज होगा सो एक दो दिन मे उतर जायेगा ।'

मा किन न भी कहा, 'समझते तो ह नही, बिना बात की जिद करते हैं । कह दिया बुखार नही उतरा ता परसो भेज देंगे, फिर भी बात समझ म नही आती ।' रामू से बाली, 'जाओ, जाकर अपना काम करा ।

मालकिन और कामो म लग गई और रामू ने रोत रोत आखें सुजा ली । खाना भी नही खाया ।

लेकिन वहा उसका कौन था । काम का ऑडर मिलता रहा और वह आसू पोछ-पोछकर काम करता रहा । स्वप्न मे मा पहाड पर से गिर पडी है—यह विचार तीर की भाति उसके चुभ रहा था ।

"रामू, जल्दी आओ, बाजार जाना है," मालकिन ने आवाज लगाई । रामू पहुचा । सामान के नाम बताये गये, पसे मिले । फिर हुक्म हुआ 'भागकर जाना । कही रुकना मत, बहुत काम पडा है । मालकिन की आज्ञा लकर रामू सूजी आखो व फूली अगुलिया लेकर बाजार की ओर दौड पडा । एकाएक मा की आवाज ने उस चौंका दिया, लल्ला मैं यहा हू, तू आ जा ।' उसने पागलो की तरह चारो ओर देखा परतु मा

कही नही दिखी। उसके मन मे आया—यह तो मा की ही आवाज थी, फिर वह कहा छुप गई ? इतनी पास की तो आवाज थी। फिर उसे ध्यान आया कि मा वहा कैसे आ सकती है ? वह तो बीमार है, शायद वही से मुझे बुला रही है उसकी आत्मा । वह बाजार से लौट पडा और चल पडा गाव की ओर। थोडी देर मे उसने भागना आरभ किया। उसको लगा सिर पर लाठी पडने ही वाली है। वह और जोर से भागा। ठोकर लगी, जेब से पसे खनखना उठे, अगुली से खून निकलने लगा। पीछे मुडकर देखा, पर कोई भी नही था।

उसको ध्यान आया, मालकिन प्रतीक्षा करती होगी। वह उनका सामान क्या नही दे आया लेकर ! उसके पैर धीमे पड गए। उसने सोचा लौट चले, ऐसे भागकर जाना ठीक नही है। वह रुका, पर उसी क्षण उसके कानो मे मा की आवाज फिर गूजी और उसके पैर जिधर पहले जा रहे थे उधर ही तेजी से चल पडे।

चलते चलते रामू फिर दौडने लगा। उसे लगा जसे मालिक पुलिस लेकर उसके पीछे दौड रहे है, चिल्ला रहे है, 'पकडो, चोर है, पैसे लेकर भाग रहा है।' वह चिल्ला पडा, 'मैं चोर नही हू। पैसे लेकर नही भाग रहा हू। मा बुला रही है, मैं वहा जा रहा हू।' और वह बेतहाशा भागता रहा। भागते भागते उसे दो घटे हो गये। उसने सास नही ली। अगुलिया मे रक्त निकल रहा है, यह देखने का उसे समय नही मिला। वह भागा जा रहा था मा के समीप। उसने सोचा था कि मा की गोद मे ही पहुचकर वह सास लेगा। वह उसे चिपटा लेगी, उसका सिर सहलायेगी, उसकी अगुलियो से रक्त पोछेगी। यह उसे बुला रही है।

उसे दूर से दिखाई दी नीम की टहनिया, पत्ता से लदी हुई धुली धुली। यह वही नीम है जिसके बगल मे उसके मामा का घर है। मा वही से बुला रही है। वह भागता रहा।

पड के नीचे कोई खडा है, उसने देखा। वह दुगने उत्साह से भागा। हर्ष के आसू उसके कपोलो को भिगाने लगे। अब मा मिलेगी। यह तो मामा हैं, उसने देखा और वही से चिल्ला पडा, "मामा, मैं आ गया।

बताओ मा कहा है ?"

मामा ने कुछ कहना चाहा पर बोल न सका। आखा मे आसू छिपाए वह रामू के साथ घर चल पडा और वहा जाकर रोते हुए बोला ले बिब्बी ! तेरा रामू आ गया।

रामू जाकर मा से लिपट गया और तब तक लिपटा रहा जब तक चार आदमियो ने उसे बलात हटा न लिया।

रामू के मामा ने जब यह सुना कि रामू भागकर आया है तब वह काप उठा। अमीरो के अत्याचार उसने भी बहुत सह थे। कही मालिक चोरी का इल्जाम लगाकर छोकरे को पकडवा न दे, इस डर से उसने तुरत एक व्यक्ति को रामू के मालिक के पास भेजकर कहलवा दिया कि रामू की मा मर गई है। रामू को रास्ते मे आदमी मिल गया इस-लिए वह घर चला आया। अब तेरहवी बाद काम पर जायगा।

तेरहवी के बाद जब मामा ने काम पर जाने की सलाह दी तो रामू ने कहा 'मामा, अब मैं वह नौकरी नही करूगा। उन लोगो ने मुझे मा से दो बात भी नही करने दी।'

पर मामा ने समझाया, सभी नौकरिया ऐसी ही होती हैं। फिर भी पुरानी जगह है। अब उन्हे तेरे ऊपर दया आ जायेगी। तू वही जा।"

रामू चला गया। मालकिन के पास वह बडी ही मनहूस घडी म पहुचा। वह क्रोध मे भरी हुई बैठी थी। मालिक से किसी बात पर वहा सुनी हो गई थी। रामू को देखते ही वह उस पर बरस पडी, 'आ गया तू बेईमान के बच्चे! भागकर कहा गया था ? मा मर गई थी तो मिला क्या न लाया उसे ! सामान देकर जाता तो क्या तेरा दम निकल जाता ? भाग कर गया। फिर आने की हिम्मत ? तनख्वाह लेने आया होगा ! ठहर जा तनख्वाह तो ऐसी दूगी कि याद रखेगा।" कहते कहते मालकिन ने न आव देखा न ताव, पास ही पडी लकडी उठाकर रामू की पीठ पर तीन चार जड दी। रामू रोया नहा जसे उसके आसू सूख गये हो। उसे याद आया—जब मालकिन की दो महीने की लडकी मरी थी, तब वह मालकिन से भी अधिक रोया था। और आज ? वह अपनी

मा के मरने के बाद आया है और उसकी मालकिन ने उसे लकडी से सात्वना दी है। रामू का चुप देखकर मालकिन को और भी क्रोध आया। 'ढीठ हो गया," कहकर उन्होने दो-तीन हाथ और जमा दिए और चिल्लाई, "क्या रे नमकहराम ! धोखा देकर गया था ? मा को जिला क्या न लाया ? फूककर क्यो आया ?'

रामू गरीब था पर था इसान। मरी हुई मा के प्रति इतने कठोर शब्द सुन वह क्रोध से कापने लगा। इतने म एक लकडी और पडी। आखो से अगारे निकलने लगे तथा वह और भी उत्तेजित हो उठा। मालकिन ने उसका रूप देखकर उसकी अशिष्टता के लिए उसे और दड देना चाहा। चोट पर चोट लगती रही। बस फिर सहनशीलता का बाध टूट गया। रामू ने मालकिन के हाथ से एक झटके मे लकडी अलग कर ली और उनपर टूट पडा। मालकिन पहली चोट पर चीख पडी, 'हाय ! अन्यायी ने मुझे मार डाला ! बचाओ कोई !" पर घर मे कोई नही था। रामू ने मालकिन को अधमरा कर सास लिया। फिर उसने लकडी वही फेंक दी और स्टेशन की ओर दौड पडा। स्टेशन पर गाडी खडी सीटी दे रही थी माना उसकी प्रतीक्षा कर रही हो। वह बिना पूछे उसमे चढ गया और गाडी उसे लेकर चल दी दूर, बहुत दूर।

# भगवान का भरोसा

"अम्मा साप ।'

शशि अपने दो वर्षीय बालक दीपक के इन शब्दो को सुनकर उसकी ओर दौडी । 'कहा है साप ?" उसने घबराहट मे पूछा ।

बच्चे के उत्तर देने से पहले ही उसने देख लिया, साप आगन से, जहा बच्चा खडा था, बरामदे मे आ रहा था । उसने एकदम बच्चे को गोदी मे उठा लिया, यह पूछते हुए कि तेरे कहीं काटा तो नहीं ।

बच्चे ने उत्तर दिया, "नही ।"

शशि ने नौकर को आवाज दी ।

नौकर पहले ही सब सुन चुका था। वह डडा लेकर दौडा हुआ आया । साप अब तक भी धीरे धीरे बरामदे मे रेंग रहा था, क्योंकि फर्श चिकना होने के कारण वह तेजी से नही चल सकता था ।

तीन-चार डडे लगने पर ही साप का काम तमाम हो गया । शशि आगन मे ही बच्चे को गोद मे लिए खडी रही । रह रहकर उसके मन म यह विचार आ रहा था—साप दीपू को काट लेता तो क्या होता ! उसका दिल धक-धक कर रहा था ।

साप को मारकर नौकर ने उसे एक कोने मे सरका दिया और शशि के पास आकर बोला, "बीबी जी, साप बडा जहरीला था, इसका काटा जीता नहा ।'

संध्या के झुटपुटे में शशि साँप का रंग अच्छी तरह देख नही सकी थी। पास आकर देखते ही, उसके मुह से निकला, "ओह ! यह तो कालगडैत साप है, यहा कहा से आ गया !"

नौकर ने कहा, "यहा तो बीबी जी साप बहुत ही निकलते हैं। चारा तरफ मक्का के खेत है। जहा अब ये बगले बने हु, साल भर पहले, यहा भी मक्का के खेत थे।"

दीपक भी शशि की गोद मे सहमा सा मरे हुए साप को देख रहा था। शशि के मन मे यही विचार बार-बार आ रहा था कि दीपक का काट लेता तो क्या होता !

शशि ने नौकर से कहा "इस साप का कपडे म लपेटकर रख दो। जज साहब आ जायेंगे, उन्ह दिखाकर फिर इसे जमीन म गाड देना। अब जल्दी से कमरे म बिस्तरे बिछाओ, आज बरामदे मे नही सोएगे।"

सावन का महीना था, पर पहाडी इलाका होने के कारण काफी ठड थी। बरामदे मे रजाई ओढनी पडती थी, फिर भी शशि का मन कमरे मे सोने को नही करता था। सवेरे आख खुलते ही जब वह सामन की छत पर नाचता हुआ मोर देखती तो उसका मन खुशी से नाच उठता। पर आज वह सब भूल गई और उसने कमरे मे पलग बिछाने को कह दिया।

शशि का दिल अब भी धडक रहा था। रह रहकर उसे यही ध्यान आ रहा था कि यदि दीपू का काट लेता तो मैं क्या करती ? ईश्वर न बडी कृपा की, दीपू के ऊपर से बडा भारी ग्रह टल गया। इन्ही विचारा मे लीन, वह दीपू का लिए घूम रही थी।

नौकर ने आकर कहा, "बिस्तर बिछा दिए है।"

शशि का ध्यान टूटा। उसने देखा, दीपक उसकी गोद मे सो गया है। बिना दूध पिए और कुछ खाए ही सा गया। इतनी जल्दी तो वह कभी साता नही इसपर उसे कुछ आश्चय हुआ। पर इस ओर उसन अधिक ध्यान नही दिया। उसके मन म आया—यह डर गया है, इसीलिए सो गया है। साप मारते देखकर बडा सहम सा गया था। इसका ध्यान आ जाने से शशि ने उसके सोन की ओर अधिक ध्यान नही

दिया और उसे ले जाकर पलग पर लिटा दिया।

शशि को इस नगर म आए अभी दो महीने ही हुए थे। उसे यहा इतना अच्छा बगला मिलेगा, उसके चारो ओर इतना सुदर प्राकृतिक दृश्य होगा इसकी उसने स्वप्न म भी कल्पना नही की थी। इस पहाडी प्रदेश क प्राकृतिक दृश्यो की प्रशसा उसने पहले सुनी अवश्य थी पर जब उसके पति का ट्रासफर यहा का हो गया तब उसे बहुत दुख हुआ, क्योकि यह स्थान उसके पिता के नगर से बहुत दूर था परतु यहा आने पर वह इस नगर की प्राकृतिक सुदरता को देखकर मुग्ध हो गई।

वह सवेरे सूरज निकलने से पहले उठ जाती, क्योकि पहाडियो के पीछे से सूरज निकलने के कुछ देर पहले का दृश्य उसे बडा सुदर लगता था। काली काली पहाडिया सूरज की किरणें पडने से किस प्रकार रग बदलती जाती ह, यह देखने मे उसे बडा आनद आता। इसी प्रकार सध्या समय सूरज डूबने का दृश्य उसे और भी आकर्षित करता था। नइ जगह और नए बगले मे आने के कारण उसे बहुत अधिक काम था फिर भी वह अपनी चित्रकला के शौक को दबा नही सकी। अभी अभी कुछ दर पहले बाहर खडी वह यह देख रही थी कि चित्र म किस पहाडी का कितना भाग लेना चाहिए। वह चाह रही थी—पहाडी के नीचे के खेत का हिस्सा और वह कुआ जहा बैल चरस चलाते हैं चित्र म ले ले। लेकिन इस समय उसके मस्तिष्क से पहले के सभी विचार निकल गये थे और उसके सामने साप की वह रेंगती शक्ल थी। नौकर के ये शब्द कि यहा तो बहुत साप निकलते है उसके कानो मे गूज रहे थे और रह रहकर यही ध्यान उसके मन म आ रहा था कि यदि दीपू को साप काट लेता तो क्या होता

वह इन्ही विचारो मे डूबी हुई थी कि उसके पति राकेश क्लब से आ गये। आते ही साप निकलने का सारा वृत्तात शशि ने उन्हे सुनाया। साथ ही यह भी दिखाई दे रहा था कि वह कितनी घबराई हुई है। घबराहट राकेश को भी बहुत हुई। साप को देखकर उन्होने भी यही कहा बडा जहरीला साप था। उन्होंने शशि से कहा, 'देखो, अब दीपू को कभी अकेले मत छोडना। उसे अकेला छोडकर तुमने गलती की।

यह तो ईश्वर की दया हुई कि साप ने उसे काटा नही।"

शशि को भी अपनी गलती महसूस हुई, उसने कहा 'ऐसा सहम-सा गया दीपू कि बिना खाए पिए ही सो गया।'

राकेश ने आश्चय से पूछा, 'क्या, इतनी जल्दी कैसे सो गया!"

शशि ने कहा, "पता नही, मेरी गोद मे था, थोडी दर मे मैंने देखा वह सो गया था।'

राकेश को कुछ आश्चर्य हुआ वह दीपक के पलग के पास आये। माथे पर हाथ रखकर देखा, माथा गरम था। उन्होने कहा, 'इसे तो बुखार है।'

दोनो को एकसाथ यह ध्यान आया कि कही इसे साप ने काट तो नही लिया, इसी कारण एकदम नीद आ गई! दोनो घबरा गए।

राकेश ने उसे जगाने की बहुत चेष्टा की, पर वह नही जागा। बुखार देखा १०० निकला। तेज रोशनी करके उसका सारा शरीर देखा, पर कही साप के काटने का चिह्न नही मिला।

राकेश ने कहा, 'साप काटता, तो कही तो निशान होता। बुखार शायद पहले से होगा।'

शशि ने कहा, 'पहले से तो बुखार नही था। मैंने जब गोदी म ले रखा था तब तो ठीक था, यह तो एकदम ही बुखार चढा है। मिनटो मे ही वह मेरी गोदी म सो गया। ऐसे तो कभी सोता नही" शशि की आवाज मे बडी घबराहट थी।

फिर दोनो ने उसे जगाने की चेष्टा की, पर वह नही जागा। राकेश ने पलक उठाकर उसकी आखें अदर से देखी, आखें बिल्कुल लाल और चढी हुई थी।

शशि घबराकर कह उठी, 'मुझे तो लगता है कि यह होश मे नही है, इसे साप के काटे का जहर चढ रहा है।'

राकेश ने कहा, "मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है।'

शशि बोली, 'जल्दी अस्पताल ले चलिए।"

राकेश ने कहा, "अच्छा, तुम टार्च ले आओ।"

शशि दौडकर टॉर्च लाई, परो पर, अगुलियो के बीच म, हाथो पर,

जहा भी जरा सी मिट्टी या मैल था वह पानी से छुटाकर, जरा जरा सी जगह देख ली। एक जगह कुछ निशान सा था, उसे खूब धोकर देखा वह मच्छर के काटें के निशान के अतिरिक्त और कुछ नही था। कही कोई चिह्न साप के काटने का नही मिला। बुखार इस बीच १०४° हो गया था। दोना के मुह पर हवाइया उड रही थी। टाच से देखकर राकेश को तो इस बात का विश्वास हो गया था कि साप ने नही काटा, पर शशि को अब भी आशका थी।

दोना के मन मे यही विचार था कि किसी डाक्टर को बुलायें। पर किस डाक्टर को बुलायें यह उनकी समझ मे नही आ रहा था। अभी नये-नये आये थे। डाक्टरो के नाम भी मालूम नही थे। दोना की राय हुई कि 'क्रोसीन' तो द ही देनी चाहिए फिर सोचेंगे कि किसको बुलायें।

नौकर खाना बना चुका था, पर उसकी हिम्मत न हुई कि वह किसी से खाने को पूछे। दोनो दीपक के पास गभीर बैठे हुए थे। शशि मन ही मन भगवान स प्रायना कर रही थी, "इस बार तू मेरे दीपक को अच्छा कर दे, फिर कभी उसे अकेला नही छोड़ूगी।' लगभग आधा घटे बाद दीपक को कुछ पसीना आया। शशि ने कपडे से पोछा, दीपक ने आखें खोल दी। बुखार कुछ हल्का हो गया था। उसने पानी मागा, शशि ने उसे पानी पिलाया, वह राकेश से बोला, "ताप आया था।"

राकेश ने कहा, "मार दिया ताप को। अब नही आयेगा।'

राकेश की बात सुनकर दीपक को सतोप मिला, वह आखें बद करके फिर सो गया। दीपक की आवाज सुनकर शशि की आखो मे आसू छलक आये।

सवेरे दीपू का बुखार बिल्कुल उतर गया था, पर शशि का काम आज बहुत बढ गया था। उसने बगले की एक एक नाली बद करवा दी। स्नानगृह की नाली जिसपर लोहे की जाली लगी हुई थी उस पर भी उसने एक बडा पत्थर मगाकर रखवा दिया। बगले के कोने-कोने को उसने साफ करवा दिया। कही घास या कूडे का नाम नही रहने दिया।

डॉक्टर से साप के विषय मे बात की गई। उन्होने राय दी कि उन्हे अपने पास वे चीजें और दवाइया अवश्य रखनी चाहिए जो साप के काटते ही काम मे लाई जानी चाहिए। उनका प्रयोग अस्पताल ले जाने से पहले ही कर देना चाहिए। डॉक्टर ने एक पतली सी तेज छुरी और दवा दी और बताया कि जहा साप काटे छुरी से वहा का थोडा-सा मास हटाकर यह दवा भर देनी चाहिए।

आज साप निकलने की बात आस पास के सब बगलो मे फैल गई। कुछ की राय हुई, आगन मे रात की रानी का पेड होने के कारण उसकी खुशबू की कशिश से साप आगन मे आ गया। उसी दिन वह अपना प्यारा पेड भी शशि ने वहा से कटवा दिया। शशि ने उसको बडे चाव से लगाया था। उसकी महक उसको बडी अच्छी लगती थी, रात को कमरे मे भी उसकी महक भर जाती थी।

उस दिन से जो शशि के घर आता, उससे साप निकलने की बात कही जाती और वह भी जगह जगह साप निकलने की घटनाए सुनाता। एक दिन एक ने आकर कहा कि उसके पडोस के एक बच्चे की मत्यु साप के काटने से हो गई। मा बाप को साप के काटने का पता भी नही लगा। नौकर के साथ बच्चा बाहर बाग मे खेल रहा था, फिर अदर आकर वह सो गया। जब खाना खान के समय उसे जगाया तब तक उसकी मत्यु हो चुकी थी। उसके हाथ मे खेलते समय कही साप ने काट लिया था। बच्चे ने सोचा होगा, काटा चुभ गया है। शशि का दिल ऐसी एसी खबरें सुनकर और भी घबरा उठता।

एक सप्ताह हो गया। अब शशि हर समय दीपक के साथ रहती। नौकर के साथ छोडने मे भी अब वह डरने लगी थी। पर वह दो वष का बच्चा दिन भर शशि को अपने पीछे-पीछे इतना भगाता कि वह शाम तक थककर चूर-चूर हो जाती। शशि बहुत चेष्टा करती थी कि वह बठकर खेले, खिलौना का उसके पास ढेर लगा देती, पर वह कभी कमरे मे, कभी बरामदे मे और कभी आगन मे भागता रहता और शशि को उसके पीछे पीछे दौडना पडता। शाम को आगन मे पलग बिछाकर शशि सब खिलौने लेकर बैठ जाती, दीप जब नीचे उतरने को कहता

तब वह उससे कह देती, "साप आ जाएगा।" यह सुनकर कुछ देर पलग से नही उतरता, अधिक जिद करता तो शशि को गोद मे लेकर उसे घुमाना पडता।

आसपास के सभी बगला मे साप निकल चुके थे। उसने कितनी ही बार राकेश से उस बगल को छोड देने को कहा, पर उन्होने कह दिया, "ऐसा बगला कही और नही मिलेगा। साप तो हर जगह ही निकलते हैं। ध्यान से रहो और दीपू को कही अकेला मत जाने दो।"

यह बात कहने म जितनी आसान है, करने मे उतनी नही। इसका अनुभव शशि को हो चुका है। वह जानती है कि वह दो वष का बच्चा उसे कितना थका देता है। नौकर पर स्वय शशि को भरोसा नही। कुछ देर भी वह दीपक को उस नौकर के भरोसे छोडना नही चाहती, क्योकि वह जानती है वह नौकर कितना निडर है। अधेरे मे वह कही भी चला जाता है। वह चिल्लाती रह जाती है जूते तो पहनकर जा, पर वह कह देता है, "जूते पहनकर ही क्या होगा? काटना होगा तो फिर भी काट लेगा।" ऐसे निडर नौकर के पास वह अपने बच्चे को कैसे छोड दे? साप निकलने से पहले दीपू घटा नौकर के साथ खेलता था, पर अब शशि हर समय उसे अपनी आखो के सामने ही रखने लगी।

एक दिन शशि ने नौकर से पूछा, "क्या तुम्हारे आसपास किसी को साप ने कभी नही काटा?"

उसने कहा "बस एक बार काटा था, उसे मदिर म देवता का चढा दिया था वह अच्छा हो गया।'

देवता को कसे चढा दिया?' शशि ने आश्चय से पूछा।

'मदिर मे जाकर देवता के सामने रख दिया, चढावा बोल दिया। वहा जो पुजारी था उसने मत्र पढकर उसका सब जहर चूस लिया, वह अच्छा हो गया।'

शशि को उसकी बात पर विश्वास नही हुआ।

एक दिन जमादारनी नही आई। शाम का जमादार आया तो शशि

ने दोपहर को जमादारनी के न आने का कारण पूछा। उसने कहा, "दोपहर को कचरा उठा रही थी तब साप ने उसे काट खाया।"

"अब वह कहा है ?" शशि ने चौककर पूछा।

"घर पर ही है।'

"अस्पताल नही ले गए ?'

"नही, झाडने वाले को बुलाया है, वह झाड रहा है।"

'झाडने वाले से क्या होगा, अभी अस्पताल ले जाओ, नही तो मर जाएगी।' रात को कई बार शशि को जमादारनी के हाल जानने की इच्छा हुई।

अगले दिन जमादार को आता देखकर उसे कुछ सतोष मिला। जल्दी दरवाजा खोलकर उसने जमादारनी का हाल पूछा।

जमादार ने कहा, 'अब तो ठीक है।'

शशि ने उत्सुकता से पूछा, "किस डॉक्टर का इलाज करवाया ?"

जमादार ने कहा "झाडने वाले ने ही ठीक कर दिया।'

शशि ने पूछा, झाडने मे क्या करते है ?"

जमादार ने कहा 'मत्र पढकर पानी सिर पर डालते है।"

'कितना पानी डाला ?"

"सौ सवा सौ घडे।"

इस घटना से शशि को झाडने पर विश्वास हो गया। उसने सोचा— ऐसे समय पर डाक्टरी इलाज तो कराना ही चाहिए, पर साथ ही झडवाने को भी भूलना नही चाहिए। झाडने वाले भी जहर उतारने के उपाए जानते है।

एक महीना हो गया। शशि तो बहुत ही परेशान रहने लगी। उसके मुह की रौनक चली गई। वहा के प्राकृतिक दृश्यो को तो वह भूल ही गई। कब सूरज निकलता है और कब डूबता है इसे देखने के लिए अब उसके पास समय नही है। सवेरे से शाम तक वह दीपक के पीछे रहती है। एक दिन उसने सुना, एक बच्चे को पलग पर सोते-सोते साप ने काट लिया। शशि को विश्वास नही हुआ। पलग पर कैसे काट सकता है ! लेकिन फिर उसे मालूम हुआ कि वह बात

सच्ची थी। बच्चा मा क पास सो रहा था, एकदम चिल्लाया। मा ने हल्की रोशनी म देखा, सार पलग के पास स जा रहा था। बच्चे के हाथ मे काटा था, उससे सबको यह ध्यान हुआ कि बच्चे का हाथ नीचे लटक रहा होगा और साप ने यह समझ कि कोई उसे मारना चाहता है उसे काट लिया।

इस घटना के बाद शशि और राकेश ने मच्छरदानी लगाकर सोना शुरू कर दिया।

एक दिन दीपक ने सध्या समय नीचे उतरने की जिद की। शशि उस लेकर छत पर चली गइ। वहा उसने उसे गोदी स उतार दिया। वह बडा खुश होकर छत पर दौडने लगा।

छत पर से शशि ने देखा, चारा और मक्का के खेत हैं। खेतो के बीच म छोटी छोटी झोपडिया हैं। घर के पीछे के खेत म ही एक औरत गाय का दूध निकाल रही है। शशि को दीपक के लिए गाय के दूध की बडी आवश्यकता थी। किसानो के घर गायें थीं पर व दूध बेचना अच्छा नही समझते थे।

शशि ने सोचा, स्वय जाकर इससे कहूगी तो शायद यह तैयार हो जाये। वह दीपक को गोद म लिए हुए नौकर को साथ लकर पीछे खेत मे चली गयी। शशि के जाने स खेतवाली और उसके बच्चे बडे खुश हुए और उसके चारो ओर इकटठे हो गये।

शशि न खेत वाली को बताया कि डाक्टर न बच्चे को गाय का दूध बताया है। बेचती तो वह भी नही थी पर वह इस बात के लिए तैयार हो गई कि भैंस के दूध के बदले म वह गाय का दूध दे दिया करेगी।

शशि ने झोपडी में झाककर देखा, रस्सी के झूले पर एक बच्चा सो रहा था, जो जमीन स मुश्किल से एक बालिश्त ऊचा होगा। झोपडी मे दस-बारह मटके रखे हुए थे। खाट वगैरा कुछ नही था।

शशि ने पूछा, "क्या तुम जमीन पर सोते हो ?"

खेतवाली ने जवाब दिया, 'हा जी, हमारे यहा खाट कहा है ?'

शशि का दिल थर्रा उठा—चारो ओर मक्का के खेत और ये जमीन मे सोते है !

शशि चलने को हुई। इतने मे खेतवाली ने अपने सात-आठ वष के लडके स कुछ भुटटे तोडकर लाने को कहा। वह एकदम उस खेत म घुस गया जिसके पास से निकलने मे भी शशि को डर लग रहा था।

शशि ने कहा, "बच्चे को वहा क्या भेजती हो ? मक्का के खेत म तो, सुनते ह, साप बहुत रहते हैं।"

"हा जी, खेता मे तो साप रहते ही हैं।"

"फिर तुम क्या इस तरह बच्चा को भेज देती हो ?"

"अजी, भगवान का भरासा है। विना उसकी मरजी के कुछ नही होता। काटना होगा तो घर बैठे काट लेगा। हमे ता इस खेत मे रहते बीस बरस हो गये। सब बच्चे-बडे ऐसे ही फिरते है, अभी तक ता भगवान की दया है।"

"क्या यहा साप नही निकलते ?"

"साप तो फिरते ही रहते है।"

बच्चा बाला, "साप तो कल ही निकला था।"

"फिर क्या किया ?"

"दादा ने मार दिया।"

दूसरा बच्चा बोला, "एक साप तो हमारे कुए पर रहता है।"

"तुम उसे मारत क्या नही ?"

खेत वाली ने कहा, "नही, वह देवता है, वह हमे कुछ नही कहता।"

शशि ने सोचा, 'कैसा अटल विश्वास है इनका !'

जो बच्चा खेत म घुसा था, वह बहुत सारे भुटटे तोड कर लाया। खेतवाली सब-के-सब भुटटे शशि को देने लगी। शशि ने उनमे से थोडे-से लिए और वहा से उसी पतली-सी पगडडी पर, जिस पर से वह आई थी, वापस चल पडी। पर अब उसके पैरा मे वह कपकपाहट नहीं थी जो पहले मक्का के खेत के पास से जाने मे हुई थी। "अजी भगवान का भरोसा है। बिना उसकी मरजी के कुछ नही होता, काटना होगा तो घर बैठे काट लेगा।" खेतवाली के ये शब्द उसके

कानो मे गूंज रहे थे और वह सोचती जा रही थी—कितना अटल विश्वास है इनका ईश्वर में ! भगवान के भरोसे रहकर ये कितने सुखी और निश्चित रहते हैं ! उसके मन से जैसे किसी ने भय को निकाल फेंका और एक नये विश्वास के प्रकाश से उसकी आत्मा जगमगा उठी ।

## हडताल

लगभग एक सप्ताह से मसूरी बादलो मे डूबा हुआ था। एक सप्ताह पहले ही रेखा अपने पति प्रमोद और पाच वष के पुत्र सौरभ के साथ मसूरी आई थी। जिस होटल म रेखा ठहरी हुई थी, कभी कभी उसे ऐसा लगता जैसे जहाज की भाति वह समुद्र के बीच मे है और उसके चारो ओर पानी ही पानी है। कोहरे जैसे बादलो म आसपास की सब चीजें ढक जाती और वह कोहरा एक अनत समुद्र के समान दिखाई देने लगता। दो-तीन गज दूर की चीज भी दिखाई न देती।

ऐसे ही मौसम मे रेखा एक दिन प्रमोद व सौरभ के साथ घूमने के लिए अपने होटल से नीचे उतर आई, पर बाहर निकलने पर ही उन्हे लगा कि कोहरे जैसे उन बादलो मे से पानी का एक बहुत बारीक झरना सा झर रहा है, जो कुछ दूर चलने पर ही कपडो को तर-ब-तर कर देने के लिए काफी था। थोडी देर मे ही उन लोगो को वापिस अपने होटल मे लौट आना पडा।

उत्तरप्रदेश की सख्त गर्मी मे से आने पर रेखा का आरभ मे यह दृश्य बडा सुहावना लगा था, लेकिन कई दिन एक-सा मौसम देखने के पश्चात वह खुला आकाश देखने के लिए बेचैन हो उठी। सौरभ दिन-रात कमरे म ही बद रहने के कारण मसूरी से ऊब उठा और मरठ लौट आने के लिए जिद करने लगा, जहा बिल्लू, रमेश, सुरेश, शारदा

उसके सभी साथी थे। यह अधकारमय प्रदेश उसे सूना दिखाई दे रहा था। प्रमोद टेबल लैंप की रोशनी म अग्रेजी उपन्यासो के पढन म समय बिता रहा था।

एक सप्ताह बाद अचानक एक दिन तीसरे पहर उस पवतीय प्रदेश मे काली घटाए घिरने लगी। सध्या होने से पहले ही चारो ओर कालिमा पुत गई, जैसे आखो के सामने एक घना काला पर्दा पड गया हो। उस पर्दे मे से पेडो की साय साय सुनाई दे रही थी, जो उस भयानक कालिमा को चीरती हुई ऐसी लग रही थी जैसे वक्ष भी घुमडती घटाओ के विकराल रूप को देखकर भय से सिसक रहे हो। डरावने काले-काले बादलो ने एकत्रित होकर गरजना और बरसना शुरू कर दिया। थोडी देर मे ही मूसलाधार वर्षा होने लगी और मसूरी की समस्त पहाडियो मे एक भयानक चीत्कार सा गूज उठा। क्रोध से भरे हुए बादलो ने पृथ्वी को छेद डाला। वायु के तीव्र झाको न कमजोर लगे हुए टीनो को छता से उखाडकर फेंक दिया। सैकडो कमजोर पेड टूट कर गिर पडे और बाद मे पता लगा कि स्प्रिंग रोड वाली सडक पर एक पूरा-का पूरा टीला खिसककर घाटी की गोद म समा गया था और अपने साथ ढाल पर बने हुए कई छोटे छोटे मकानो को भी जड से उखाडकर लेता गया था।

इसी प्रकार कई घटे बीत गय। रात के सन्नाटे मे उस तूफानी वर्षा, बादलो की कडक और बिजली की चमक से रेखा का हृदय काप-काप जाता। उसे लग रहा था जैसे बादल उसके कमरे की छत से टकराकर जा रहे है, और बिजली भी उसी के होटल पर गिरने के लिए बार बार कडकडा उठती है। आधी रात तक वर्षा की यही दशा रही, उसके बाद उसकी तेजी मे जब कुछ कमी आई तब रेखा को जरा नीद आई।

सवेरे जब उसकी आख खुली, सूय का प्रकाश उसके कमरे मे फला हुआ था। खुशी से उसका हृदय नाच उठा। वह उठकर बाहर छज्जे पर आई। उसने देखा कि गहरा नीला आकाश उसके ऊपर तना हुआ था

और दूर दूर तक फैली पहाडिया और घाटिया तथा उसम बनी हुई झोपडिया सभी स्पष्ट दिखाई देने लगी थी। सामने हिमालय की बर्फ से ढकी चोटिया सोने के बने पहाडो के समान चमक रही थी। उसने जल्दी से आकर अपने पति को खुशी से झकझोरते हुए कहा "जल्दी उठो, देखो हिमालय की चोटिया कितनी साफ दिखाई दे रही है।"

प्रमोद एकदम उठ बैठा, साथ ही उसके पास सोया हुआ सौरभ भी जाग गया। हिमालय को देखने की उनकी इच्छा पूर्ण हो गई, यह देखकर उन्हे बडी प्रसन्नता हुई। बडी देर तक वे तीनो छज्जे पर खडे खडे हिमालय की चोटिया देखते रहे और बरफ से ढकी हुई उन चोटियो की ओर से ठडी तेज हवा के झोके आ आकर उनके शरीर को कपाते रहे।

प्रमोद ने रेखा से कहा, आज मौसम बडा अच्छा रहेगा। जल्दी चाय पीकर तैयार हो जाओ, आज दिन भर घूमने का प्रोग्राम रहेगा। सौरभ के लिए एक घोडा ले लेंगे और दूर तक चलेंगे। चाहो तो तुम अपनी सखी पदमा को ले लेना, पर उसके साथ यदि वकील साहब भी चलने को तैयार हो गये और उन लोगो ने दो चार छोटे बच्चो को साथ ले लिया तो सारा मजा ही किरकिरा हो जायेगा।

रेखा को भी इस सुहावने मौसम मे एक भीड को साथ लेकर चलने की कल्पना अच्छी नही लगी। तय यह हुआ कि वे लोग अकेले ही निकल पडेंगे।

सब लोग जल्दी-जल्दी अपने काम निबटाने लगे। सौरभ को जल्दी से तैयार करके रेखा स्वय तैयार होने लगी। सौरभ तैयार होकर छज्जे पर जाकर खडा हो गया। वह जोर से वही से चिल्लाया, "ममी, जल्दी आओ। देखो कितना लबा जुलूस चला जा रहा है, मीलो तक फैला हुआ।'

रेखा जूडे मे फूलो की वेणी बाधती हुई बाहर छज्जे पर दौडकर आई। लायब्रेरी से कुलडी बाजार तक की जितनी भी सडक उनके होटल से दिखायी दे रही थी वह सब मजदूरो से भरी हुई थी। मैले-कुचैले कपडे पहने हुए मजदूरो का जैसे एक महासागर उमड आया

हो।

"मजदूर नेता जिंदाबाद!" "गाधी जी की जय!" "मजदूर एकता जिंदाबाद!" के नारो से सारा वातावरण गूज उठा। प्रमोद भी वहा आ गया। कमरे का ताला बद कर तेजी से तीनो नीचे उतरे, क्योकि उनके मन मे यह जानने की उत्सुकता थी कि यह इतना लबा जुलूस क्यो निकल रहा है। नीचे उतरने पर मालूम हुआ कि मसूरी के सभी मजदूरो ने, जिनमे रिक्शा चलाने वाले, घोडा चलाने वाले सामान ढोने वाले सभी प्रकार के मजदूर शामिल हैं, हडताल कर दी है। उन्होने अपनी मागो की एक सूची बना ली है, और तब तक काम पर लौटने के लिए तयार नही है जब तक उनकी मागें पूरी नही हो जाती।

कुलडी म लायब्रेरी तक की सडक जो सेंट की सुगध से भरी रहती थी, जिस पर कीमती कपडा व जेवरा से सजी हुई युवतिया अपन लिपस्टिक से रगे हाठा की ओर सबको आकर्षित करती हुइ इस पार से उस पार तक घूमती रहती थी, जिनकी बाहो मे पडे बडे-बडे पस और उनकी चाल-ढाल देखकर दूकानदार उ ह अपनी दुकान म बुलाने व उन्हें अपनी चीजें दिखाने के लिए बेचैन हो उठत थे, और वह सडक जिस पर रेखा ने मसूरी की अपनी पिछली सभी यात्राओ म अमीरी व शान शौकत का ही अधिकार देखा था, आज एक नये रूप, नई वेश भूषा, नई साज सज्जा मे उसके सामने भूखे और नगे मजदूरो से भरी हुई थी। उनकी दुगध से बचन के लिए उस सडक पर घूमने वाले भद्र लोग बडी बडी दुकानो मे घुस गये थे।

लाइब्रेरी के सामन की वह समतल भूमि, जो सदव बडे आदमियों के एक-दूसरे से मिलने व बातचीत करन का अड्डा बनी रहती थी, आज मजदूरा के अधिकार मे दिखाई दे रही थी। मजदूरो का यह जुलूस लायब्रेरी के निकट आकर उसी स्थान पर रुक गया जहा प्रत्येक दिन बडे-बडे व्यक्ति आकर रहते थे, ठहरत थे व बातचीत करते थे। वहा उन्होने एक बडी सभा की। रेखा भी एक बडी दूकान के चबूतरे पर चढकर उन लागो के भाषण सुनने लगी। जिन लोगो को वह अब

तक निपट गवार और सर्वथा बुद्धिहीन समझती थी उन लोगो को वडे जोश मे भाषण देते हुए देखकर उसे बडा आश्चय हुआ। लच्छेदार-साहित्यिक शब्दावली का भडार उनके पास नही था। पर जो वे कहना चाहत थे, स्पप्ट शब्दा मे कह रह थे। उन शब्दा मे ओज था और सचाई छलछला रही थी। जब तक हमारी सब मागे पूरी नही होगी, हम हडताल नही तोडेगे, इस निश्चय के साथ उ होने सभा भग की।

जितने मजदूर यहा थे उनकी दशा वडी शोचनीय थी। उनके कपडे मैल के कारण काले पड गये थे। सभी ने जाडे से बचने के लिए कोट पहिन रखे थे, पर उन कोटा से क्या सचमुच उनकी सर्दी का बचाव होता होगा? कोट अधिकतर सबके ही सूती थे, जिनमे जगह जगह फटने के कारण थेगलिया लगी हुई थी। रेखा न ध्यान से देखा कि एक-एक बाह पर चार चार, पाच पाच थेगलिया लगी हुई थी। उनके बाल तेल न पडने के कारण बुरी तरह उलझे हुए थे। सभी के सिर पर काली-काली छोटी छोटी टोपिया थी। छोटे छोटे पायचे के पाजामे पहिने नगे पैर हजारो की सख्या मे वे माल रोड पर जमा थे। कुछ मजदूर जो रेखा के बिलकुल पास थे उनमे से कितना के ही हाथो, पैरो की अगुलिया फटने के कारण सूजी हुई दिखायी दे रही थी। रेखा उनका ध्यान से देख रही थी। तभी प्रमाद ने आकर उससे कहा, "चलकर जरा मोटर स्टैंड का तमाशा तो दखो आज वहा बहुत ही मजा आ रहा है। टक्सिया से जो लोग नीचे आ रहे हैं, मजदूर न मिलने के कारण, वही अपने सामान लिय बठे है।"

रेखा और सौरभ दाना सडक के दूसर किनारे पर जाकर उस स्थान का दश्य देखने लगे जहा टैक्सी और प्राइवेट कारें आकर रुकती थी।

वास्तव मे वहा का दश्य बडा ही मनोरजक था। जगह जगह सामान के ढेर लगे हुए थे, और सामान के मालिक-मालकिन और उनके बच्चे कोई बक्स पर बैठे थे, कोई बिस्तरे पर और कोई आसपास घूम रहे थे। कुछ लोग अपना थोडा थाडा सामान लेकर ऊपर बाजार मे आने के लिए चढाई पर चढ रहे थे। सबकी शक्लें उतरी हुई थी। कुछ

सूटेड-बूटेड विद्यार्थी जो सभवत टेनिस टूर्नामेंट मे भाग लेने के लिए आये थे, क्योंकि सबके पास टेनिस के बल्ले थे, दो दो मिलकर अपने बक्सो को ऊपर लाने की चेष्टा कर रहे थे पर वे ऊपर चढने म असमर्थ थे। जिन महिलाओ को केवल अपने पस लटकाकर चलने की ही आदत थी, उन्हे थैले मे कुछ सामान लेकर चलने मे ही मसूरी जसी ठडी जगह पर पसीने आने लगे थे। उनका पाउडर पसीने से बह-बहकर साफ हो गया था। लिपस्टिक लगे होठो पर पपडी जम गई थी। धूप निकल आने के कारण वातावरण म कुछ गर्मी भी आ गई थी।

सभा समाप्त करके मजदूरो का जुलूस कुलडी बाजार की ओर लौट पडा। वे लोग उस समय भी बडे जोरो से नारे लगा रहे थे। दो दो बासो म कपडे लगाकर उन्होने उस पर अपनी कुछ मार्गे लिख रखी थी। रेखा ने पढा, कुछ पर लिखा था, "माटरो को ऊपर आने की इजाजत न दी जाये।" "हमारी राटी का प्रबध करो।" "मार्गे पूरी न होने तक हडताल बद न होगी। अपनी सभी मार्गे इसी प्रकार लिखकर वे जुलूस के रूप मे वापिस लौट रहे थे। जुलूस कुछ आगे निकल गया। माल रोड पर सन्नाटा-सा छाने लगा। कुछ इक्के-दुक्के सभ्रात व्यक्ति और कुछ महिलाए अब चलते फिरते दिखाई देने लगे थे। रेखा माल रोड पर खडी देहरादन से आने वाली सडक की ओर देख रही थी। आज तो देहरादून के मकान भी चमचमाती धूप म स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। इतने मे रेखा ने देखा कि एक १२ १३ वष का मजदूर लडका भागा हुआ उम स्थान पर जा रहा है जहा सब अपना सामान लिए बैठे थे। उसके पहुचते ही कई लोग उसके पास आ गये। एक-दो मिनट म ही उसने एक साहब से मजदूरी तय की और एक बडा बक्स और बिस्तरा अपनी पीठ पर लादकर वह चढाई पर चढने लगा। ऊपर जितने भी व्यक्ति खडे थे सभी की दृष्टि उस लडके पर थी और सभी को यह देखकर आश्चय हो रहा था कि यह इतना छोटा लडका इतना भारी बोझा उठाकर चढाई पर कसे चढ रहा है। आधी से ज्यादा चढाई वह चढ चुका था कि पीछे से दो तीन मजदूरो की बडे

जोर की आवाज आई, "पकडो, पकडो, कौन है ? यह सामान क्यो उठा रहा है ? रोको रोको, मारा इसे।"

मजदूरा की इस कडकती हई आवाज से जो लाग वहा खडे थे, सत्र सहम गए। रेखा का दिल धडकने लगा। पर वह लडका सामान लिए ऊपर चढता रहा। एक दो बार उसके पैर लडखडाए पर फिर सभलकर वह और तेजी से चढने लगा और उस चढाई को उसने पार कर लिया जिसके लिए उसने मजदूरी ठहराई थी, पर सिर का बोझ उतारकर पैसे लेने का उसे समय नही मिला। इसी बीच मजदूर दौडकर उसके पास पहुच गये और उसे बुरी तरह से पीटने लगे। मजदूरा की एकता को उसने भग करने का साहस किया था, उसे सजा देना उनकी दृष्टि मे उनका धार्मिक कर्तव्य था। एक धार्मिक जोश की भावना से अपने कर्तव्य को पूरा करने मे वे जुट गये थे।

वह साहब, जिनका सामान वह लडका उठाकर लाया था, अपना सामान किसी होटल मे मेहतर के सिर पर लदवाकर, जो सम्भवत इसी तलाश म कही छिपा हुआ था, कही चले गये, बिना इसकी जरूरत समझे कि इस लडके मे जो मजदूरी ठहरायी थी वह इस दे देनी चाहिए।

जहा व मजदूर उस लडके को पीट रहे थे, रेखा उस स्थान से काफी दूर थी पर उसका मन कर रहा था कि वह वहा जाकर उस लडके को पिटने से बचाये। कुछ दर तक देखते रहने के बाद जब उससे वहा का दृश्य सहन नही हुआ उसने प्रमोद से कहा, 'हम जाकर उस लडके को बचाना चाहिए। ये मजदूर बहुत क्रोध से भर हुए हैं, मुझे डर है कि य उस बच्चे की हड्डी पसली न तोड दें।"

प्रमोद ने कहा, 'तुम भी क्या बात करती हो ? हमे उन लोगो के आपसी झगडे मे क्या मतलब ? उस लडके की गलती है। अपने सघ की बातो को उसे मानना चाहिए था। उसे सजा मिलनी ही चाहिए।"

रेखा ने कहा, "मालूम हाता है कि लडका बडी मुसीबत मे है। पैसे की बडी आवश्यकता होगी, तभी उसने ऐसा काम किया।'

प्रमोद ने कहा, "अपने सघ को धोखा देने से भूखो मरना अच्छा

था।" पास खडे हुए दो-तीन व्यक्ति बोले, "साहब, यह लडका चालाक मालूम होता है। उसने सोचा, आज मजदूरी अच्छी मिलेगी, इसलिए चुपचाप जुलूस म से खिसक गया।" और लोग भी उनकी हा मे हा मिलाने लगे।

जहा वे मजदूर उस लडके को पीट रहे थे वहा बहुत भीड जमा हो गई थी। वहा क्या हो रहा था, यह सब दिखाई भी नही दे रहा था। फिर भी कुछ देर तक सब वहा खडे रहे।

खाने का समय हो गया था, सौरभ का भी भूख लग रही थी। प्रमोद के कहने से रेखा को होटल मे खाना खाने जाना पडा, पर उसका मन उस लडके मे ही पडा रहा।

खाना खाकर लौटने मे लगभग दो घटे लग गये। जहा मजदूर उस लडके को पीट रहे थे और भीड जमा थी, वहा अब कोई भी व्यक्ति दिखाई नही दे रहा था। दो चार आदमी इधर-उधर बठे थे अथवा चल फिर रहे थे।

रेखा ने प्रमोद से उस ओर चलने को कहा जहा मजदूरो ने उस लडके को पीटा था। प्रमोद चलने को राजी हा गया और वे उस ओर चल पडे। वहा पहुचकर जो लोग वहा बैठे थे उनसे रेखा ने पूछा, "उस लडके का क्या हुआ, जिस मजदूर पीट रहे थे ?"

उन्होने कहा, "मजदूरो ने उसे बुरी तरह पीटा। बेचार को अध मरा करके ही छोडा। वह बडी देर तक यहा पडा पडा कराहता रहा, फिर जब उसे जरा होश आया तो उसने पूछा, 'वह बाबू जिसका मैं सामान लाया था, किधर गया ? ' हम कुछ नही बता सके। वह कह रहा था— वह बाबू पस दे जाता तो मैं अपने भाई के सुई लगवा देता, उसे बचा लेता। डाक्टर ने कहा था, निमोनिया हो गया है, सुई लगने से बच सकता है ' बस इतना कहकर फिर वह यहा से चला गया।"

रेखा ने प्रमोद से कहा, 'मैं तो पहले ही कह रही थी, उसे पसे की बडी आवश्यकता होगी, तभी उसने ऐसा काम किया।'

प्रमोद ने कहा "पर हम कर ही क्या सकते थे ?"

सध्या को रेखा जब फिर घूमने निकली तब माल रोड का समस्त

उल्लास और उसकी सदा की सी चहल पहल फिर लौट आई थी। मौसम बडा सुहावना था। आकाश म मडराते हुए रुई के गोले से बादल एक अदभुत आभा से उदभासित हो रहे थे। वे आपस म आखमिचौनी खेलते से प्रतीत हो रहे थे। कभी पवतश्रेणिया की ओट मे छिप जाते, कभी उनके पीछे से निकलकर भागना आरभ कर देते। सबेरे के गहरे नीले आकाश म इस समय भाति भाति के रग दिखाई दे रहे थे। सूय डूब रहा था और डूबते हुए सूय की किरणो ने उन सफेद रुई जैसे बादलो मे भी कही-कही सुदर रग भर दिय थे। पर रेखा की नजर उस लडके को ही खोज रही थी और वह उसे कही दिखाई नही दे रहा था। अनेक कुली अपने अस्तव्यस्त कपडो मे निठल्ले घूम रह थे। उनम से अनेक को सभवत दिन भर खाना नही मिला था। कुछ कुलियो ने अपने साथिया की नजर बचाकर रेखा के सामने पसे के लिए हाथ फैलाये। रेखा ने उस दिन किसी को भी मना नही किया।

रेखा की दप्टि एक क्षण के लिए प्रकृति के सौदय पर रुकती, पर दूसरे ही क्षण वह उस लडके को खोजने लगती। शाम को कुलडी के एक होटल मे खाना खाते समय भी रेखा के मन मे यही विचार आता रहा कि पता नही आज कितने मजदूरो के घर मे चूल्हा नही जला होगा और कितने छोटे छाटे बच्चो को भी अपनी भूख दबाकर सोना पड रहा होगा। अमीरी और गरीबी का यह अतर अपने देश मे कब तक इस प्रकार चलता रहेगा, इसका उत्तर उसके पास नही था, इस कारण इस प्रश्न को उसने अपने मन म ही दबा दिया।

अगले दिन सवेरे फिर आकाश बिल्कुल साफ हो गया और हिमालय की बफ से लदी सुनहली चोटिया स्पष्ट दिखायी देने लगी। लाल टिब्बे से यह दश्य बडा ही सुदर दिखायी देता है, और पर्वत श्रेणियो मे डूबता हुआ सूय तो उसमे और चार चाद लगा देता है यह सोचकर प्रमोद ने शाम का प्रोग्राम लाल टिब्बे जाने का रखा।

य लोग कुलडी बाजार तक ही पहुचे थे कि इन्होने देखा कि मजदूरो का जुलूस कुलडी मे से होता हुआ माल रोड की ओर आ रहा

है। मजदूर बडे खुश हैं, बडे जोश मे भरे हुए है और जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं, हमारी मागें मान ली गइ !" 'मजदूर नेता जिंदाबाद !" "गाधी जी की जय !"

"मजदूर एकता जिंदाबाद,' के नारे लगाते हुए वे आगे बढ रहे है। प्रमोद और रेखा एक बडी दुकान के अदर खडे हो गये सौरभ को उन्होने गोद मे ले लिया था। रेखा की आखें उस भीड मे भी उस लडके को खोज रही थी।

प्रमोद ने कुछ मजदूरो से पूछा, 'तुम्हारी क्या क्या मागें थी ? उनमे से कितनी पूरी हो गईं ? पर उन्हे यह भी मालूम नही था कि उनकी क्या-क्या मागें थी और उनमे से क्या-क्या मान ली गयी थी।

उन्होने बडे जोश मे उत्तर दिया, 'हमारी सब मागें पूरी हो गयी। सरकार हमारे लिए मकान भी बनवा देगी।' यह कहते हुए वे चलते गये।

कुछ देर मे ही सारा जुलूस उधर से निकल गया। रेखा के मन मे उस लडके के न मिलने का बडा दुःख हुआ। वह मन मसोसकर प्रमोद के साथ लण्ढौर बाजार की ओर चल पडी।

वे लोग कुछ आगे चले ही थे कि नीचे घाटी मे से पाच छ आदमियो को उन्होने ऊपर आते देखा। उनमे से एक अधेड आदमी के हाथो मे पाच छ वर्ष के बच्चे का शव था। एक आदमी उस अधेड आदमी को सहारा दे रहा था। पीछे-पीछे एक लडका रोता हुआ उसके साथ आ रहा था। उस लडके को देखते ही रेखा पहचान गई, यह वही लडका था जिसे उसकी आखें दो रोज से बराबर खोज रही थी।

उसने प्रमोद से कहा 'इस बच्चे को बचाने के लिए ही इस लडके ने इतनी मार खाई, पर बेचारा उसे बचा न सका।' यह कहते-कहते रेखा का गला भर आया। वह आगे न बोल सकी।

मजदूरो का जुलूस अब काफी दूर चला गया था, पर कभी-कभी उसके नारो की हल्की सी गूज सुनाई पड जाती थी। रेखा ने साडी के पल्ले से अपने आसू पोंछे तभी उसके कानो मे दूर से आती हुई एक

हल्की-सी प्रतिध्वनि टकराई, "मजदूर एकता जिंदाबाद !" उसने दूसरी ओर देखने का प्रयत्न किया। शव को लेकर जाता हुआ छोटा-सा जुलूस भी अब दृष्टि से ओझल हो गया था, और उसके साथ ही उस मजदूर लडके की आकृति भी, जिसके संबध मे सोचकर ही रेखा की आखो मे बार-बार आसू छलक आते थे।

## सजय

"मौछी (मौसी), ये चप्पल मम्मी के हैं।' दो वर्ष का सजय दौड़ता हुआ आया और अपनी मौसी रेखा से बोला।

रेखा ने हसकर कहा, "मम्मी के नही, ये मेरे ही चप्पल हैं, मैंने अपने ही चप्पल पहन रखे हैं।"

सजय ने दृढता के साथ कहा, 'आपके चप्पल तो काले रग के हैं। ये लाल रग के चप्पल तो मम्मी के हैं।'

रेखा ने मुस्कराकर उसकी बात स्वीकार करते हुए कहा, "अच्छा, यह तो बताओ, तुम्हारी बुश्शट किस रग की है?"

"पीले रग की है।"

'और इस पर हाथी किस रग के बने है?"

"हाथी काले रग के हैं।"

'तुम्हारा मुह किस रग का है?"

सजय जरा रुककर बोला, गोरे रग का है।"

रेखा ने कहा, "नही, तुम्हारा मुह तो काले रग का है।"

सजय ने दृढता से कहा, "नही, मरा मुह गोरा है।"

रेखा ने कहा, 'पर तेरी मम्मी तो काली है।'

सजय ने चिढ़कर कहा, 'नहा मरी मम्मी अच्छी है, काली नहीं है।'

"और कैसी है ?"

"गोरी है।"

रेखा ने कहा, "अच्छा, तुम्हारे दोस्त की साइकिल किस रग की है ?"

"हरे रग की है।"

साइकिल का नाम सुनकर वह फिर वही भाग गया जहा उसका दोस्त साइकिल लिए खडा था। उसका दोस्त उससे लगभग एक वप वडा था। वह भागकर साइकिल के पीछे बैठ गया और उसका दोस्त साइकिल चलाकर उसे वाहर ले गया।

सजय की मा शशि, उसकी सारी बातें सुनकर बठी-वठी मुस्करा रही थी। जब वह चला गया तो वह रेखा से बोली "जीजी, क्या करू, यह तो अभी से बहुत शैतान हो गया है। बडे बच्चा जैसी बातें करने लगा है।"

रेखा ने कहा, "करती क्या, अच्छी ही तो है, अभी से दिमाग इतना तेज है। भगवान उसे बडी उम्र दे, देखना वडा होकर कितना नाम रोशन करेगा।"

शशि ने कहा, "जीजी, वहा मुहल्ले मे इसे कोई दो वप का समझता ही नही, अपनी वातो और स्वास्थ्य के कारण यह तीन चार वप से कम का नही लगता।"

रेखा ने कहा, 'अच्छा ज्यादा नही कहते, क्या वार बार उसे टोकती है। पहली पहल के बच्चे का स्वास्थ्य तो ऐसा होना ही चाहिए। फिर तू उसके स्वास्थ्य का ध्यान कितना रखती है, दिन भर उसी मे लगी रहती है।'

शशि ने कहा, "हा, जीजी, यह बात तो है मैं इसे कोई ऐसी-वसी चीज नही खाने देती। इस बात के कारण मुझे इसकी दादी के ताने सुनने पडते हैं, पर मैं चुप लगा जाती हू। उन लोगो की तो यह आदत है कि दाल सेव बचने वाला आया तो वह लेकर बच्चे के हाथ मे रख दिय मिठाई आयी तो वह ढेर-की-ढेर खिला दी। इस आदत के कारण इसकी बुआ का लडका तो तीसो दिन बीमार रहता है।'

रेखा ने कहा, "कुछ लोगो मे खाने खिलाने का लाड होता ही बहुत है। जहा जो मिला स्वय भी खाते हैं, और बच्चा को भी खिलाते हैं।'

शशि ने कहा "मैं तो इसी कारण, सजय को घर पर अकेला छोडकर कभी कही जाती ही नही। अभी गर्ल्स कॉलेज मे एक लेक्चरर की आवश्यकता थी। वह मुझे रखने को तैयार थे, घर म भी सबकी इच्छा थी पर मैंने इनसे कह दिया कि जब तक सजय ढाई वष का नही हो जायेगा और मैं इसे मोंटेसरी स्कूल मे नही भर्ती करा दूगा, तब तक सर्विस नही करूगी, क्योकि मैं यह नही चाहती कि मेरे कॉलेज जाने के बाद यह मुहल्ले के आवारा बच्चा के साथ खेलता फिरे।'

रेखा ने कहा "यह बात तो ठीक है, नौकरी करने के बाद से, मा बाप को रुपये की तक्लीफ तो नही रहती, पर बच्चो की बुरी गत हो जाती है। मैंने भी इसी कारण कभी नौकरी नही की।'

सजय फिर दौडता हुआ आया और बोला, "मम्मी, निकर भीग गया। दूसरा बदल दो।'

शशि ने कहा, "जाओ अपने बक्स मे से ले आओ, और अपनी अगरेजी की किताब भी ले आना।"

सजय 'अच्छा कहकर कमरे मे चला गया।

रेखा ने कहा "तू तो अभी से उसमे बडे बच्चा जसे काम लेने लगी है।'

"जब वह बडे बच्चा जैसे काम करने लगा तो फिर मैं ही उसका काम क्यो करू। देख लेना जीजी पूरा सूट निकालकर लायेगा।'

कुछ ही देर मे सजय नीले रग की निकर और बुशशर्ट और अगरेजी की किताब ले आया। शशि उसके कपडे बदलने लगी। रेखा ने अगरेजी की किताब म से उससे पूछना शुरू किया। उसने सबके मतलब—कैट माने बिल्ली, रैट माने चूहा, टेबिल माने मेज, कप माने प्याला आदि सब ठीक ठीक बता दिये। रेखा ने कहा "शाबाश तुम्हे तो सब याद है।'

सजय खुश होकर बोला, "मौछी, गिनती भी छुनाऊ ?"

रेखा ने कहा "हा सुना।'

दोनो बहनें बैठी-बठी मुस्कराती रही और उसन १०० तक की गिनती बिना कही भूले सुना दी। रेखा ने सजय को खूब प्यार किया, और कहा, "तुम बडे अच्छे बच्चे हो।'

शशि ने तरकीब से उसे अपन पास लिटा लिया और उस कहानी सुनाने लगी जिससे वह बाहर न जाकर उसके पास सो जाए। शशि सजय को सुला रही थी और रेखा मन ही मन ईश्वर से प्राथना कर रही थी—हे भगवान इसे बटी उम्र देना, एस होनहार बच्चे इम दुनिया में रहने के लिए नही आते है। जब ऐसे बच्चे चले जाते है तो सब यही कहते है वह इस दुनिया मे रहने लायक नही था। इस विचार से ही रेखा के शरीर मे एक सिहरन सी दौड गयी।

सजय को वहा आये १५ दिन हो गय थे, पर कभी किसी ने उसे रोते नही सुना था। वह अपने पिताजी से बहुत हिला हुआ था, पर उनके जान के बाद भी वह नही रोया। जब कोई पूछता 'पापा कहा है?" ता बडे समझदार बच्चा की तरह कह देता "लखनऊ गय है जल्दी आ जायेंगे, मेरे लिए बहुत मारे खिलौने लायेंगे।' पर शशि क दूर जाने से वह घबराता था। जब कभी वह किसी बात की जिद करता, जैसे दवा न पीने की, तो शशि के यह कहने पर ही कि मैं दूर चली जाऊगी वह झट अपनी जिद छोड देता। कभी कोई बात वह जल्दी न मानता तो शशि कमरे के दरवाजे से बाहर निकलकर चली जाती और दरवाजे के पीछे छुप जाती ता तुरत ही सजय के आठ थोडे बाहर निकल जात और वह दुखी होकर रेखा से कहता, "मम्मी को बुला लो, अब मैं कहना मानूगा।'

यह मुनकर रेखा शशि को बुला लेती, सजय खुश होकर उसम चिपट जाता। दोनो मे मुलह हो जाती।

लेकिन एक दिन जब शशि की बठे बठे अचानक हृदय की गति रुक जान के कारण मृत्यु हो गइ और वह सदैव के लिए उसे छोडकर चली गयी तब भी वह यही समझा कि मम्मी किसी बात पर उमसे नाराज होकर चली गयी है और जल्दी ही आ जायेगी।

उसकी आदतो में एकदम परिवतन आ गया। उससे जो कोई भी जो कुछ कहता वह तुरत कर दता। वह सबको उदास और रोते हुए देखता वह नही रोता। उसक मुह की सब रौनक फीकी पड गयी थी, पर वह पापा का रात देखकर उन्हें हसान की चेष्टा करता, अपने हाथ से कौर तोड-तोडकर उन्हे खाना खिलाता। वह सोचता—नाराज होकर मम्मी चली गई है। सबका ख्याल रखना मेरा काम है। रात को उसके पापा उस अपन पास सुलाते। वह आखें बद किये पडा रहता, मम्मी की याद म उसे नीद नही आती, पर वह किसी से कुछ नही कहता। कोई उससे पूछता "मम्मी कहा है ?" तो कह देता, "लखनऊ गई हैं, पर उन शब्दो म बेबसी और दुख भरा रहता।

एक दिन रेखा किसी को पत्र लिख रही थी तो आकर बोला, "मम्मी को लिख दो, मैं अब अच्छा लडका बन गया हू, वह जल्दी आ जायें।" रेखा ने भरे हुए गले स उससे कह दिया, "हा, लिख दूगी, तुम बहुत अच्छे हो गए हो।" रेखा क मन म आया वह उसे चिपटाकर उससे कह दे—मम्मी तुमसे ही नाराज होकर नही गयी है वह सबस ही नाराज होकर चली गयी है। यह दुनिया ही उसे अच्छी नहीं लगी, वह अब कभी नही आयेगी। पर यह बच्चा इन बातो को क्या समझे, यह सोचकर वह चुप हो गई और उसके जाने के बाद मन भर कर रोई और ईश्वर से कहा कि हे निष्ठुर ! तुझे इस बच्चे पर भी तरस नही आया !

कुछ दिनो बाद जब सजय के पिता उसे अपने साथ लखनऊ ले गये तो वहा जाकर वह मन ही मन बडा दुखी रहने लगा। उस घर मे वह सबसे अधिक अपने पापा को चाहता था। उन्ही के साथ सोता व खाता था। उनके दफ्तर चले जाने पर वह पडोस के बच्चो के साथ खेलता रहता। कपडे भीग जाते या मिट्टी मे भर जाते, पर अब वह पहले की भाति घर मे आकर किसी स कपडे बदलने के लिए नही कहता था। पापा के दफ्तर से आने की प्रतीक्षा करता रहता। वह आते तो उनसे लिपट जाता। वह भी उस बहुत प्यार करते थे।

पर कुछ दिनो मे उसने देखा, पापा भी उससे कुछ नाराज-से रहने लगे हैं। जब वह उनके पास सोने जाता तो कह देते, 'अब तुम दादी

के पास सोया करो ।" वह पापा के साथ ही सोना चाहता था पर दादी जबरदस्ती उसे अपने पास सुलाने की चेष्टा करती । उसे दादी के पास नींद नहीं आती पर वह इस डर से कि कहीं पापा भी छोड़कर न चले जायें, चुपचाप आँखें बंद किये पड़ा रहता ।

दो महीने पहिले वाला संजय अब बिलकुल बदल गया था । न अब उसमें वह चंचलता थी, न अब वह गठा हुआ शरीर ही रह गया था । उसके मन की वेदना अब उसके मुख पर झलक आयी थी । कभी-कभी पापा और दादी से जब वह दबी हुई आवाज में कहता, "मम्मी को बुला लो," तब वे कह देते, "हाँ बुला लेंगे ।' वह सुनकर चुप हो जाता और घंटों तक पड़ा पड़ा दीवार पर टंगी हुई मम्मी की तस्वीर को देखता रहता ॥

एक दिन उसने देखा कि सब लोग बड़े खुश हैं । घर सजाया जा रहा है । सब गा रहे हैं । खूब हँस रहे हैं । उसने सोचा, जरूर आज मम्मी आने वाली हैं, तभी सब इतने हँस रहे हैं । उसे भी नये कपड़े पहनाये गये हैं, उसकी मम्मी के हाथ का बुना हुआ सूट ही उसे पहनाया गया है । उसे वे दिन याद आ गए जब मम्मी उसके लिए वह सूट बुन रही थी । उसे मम्मी की याद आने लगी । इतने में तांगा आकर रुका । उसने पापा को और उनके साथ ही किसी औरत को घूंघट काढ़े तांगे में से उतरते देखा । उसकी मम्मी भी कभी-कभी घूंघट काढ़ती थी । वह खुशी से उछल पड़ा । "पापा, मम्मी को ले आये ।' यह कहकर वह दौड़ा और रास्ते में घूंघट में लिपटी हुई नयी बहू के पैरों पर, "मम्मी आ गयी ! मम्मी आ गयी !" कहकर लिपट गया । लेकिन घूंघट में झाँककर जो उसने देखा, वह एकदम चिल्ला पड़ा, "नहीं, यह मम्मी नहीं है !" और जोर जोर से रोकर जमीन पर लोटने लगा ।

भीड़ में से किसी ने कहा, "रोते नहीं हैं, यह मम्मी ही है ।"

संजय ने रोते रोते जोर से चीखकर कहा, "नहीं, यह मम्मी नहीं है । ये कोई और है, काली-काली है ।" वह कुछ और भी कहता पर

वह पापा के चिल्लाने से सहम गया। पापा ने चिल्ला कर कहा, "रोये जायगा, चुप नहीं होगा, अभी आकर पीटूंगा।" उसने पापा को कभी ऐसे क्रोध में भरकर चिल्लाते हुए नहीं देखा था। वह सुबकियां लेता हुआ वहां से उठकर चला गया। कहां गया और कब तक रोता रहा, यह देखने वाला वहां कोई नहीं था। सब नयी बहू के आने के स्वागत में थे।

रात को सोने के समय जब सबने अपने अपने कपड़े उठाये तो उसे उन कपड़ों के ढेर में पड़ा हुआ देखा। वह कई घंटे रोने के बाद, वहीं पड़ा पड़ा सो गया था। वहां से उठाकर किसी ने उसे उसकी दादी के पलंग पर सुला दिया। उसे उस समय तेज बुखार चढ़ा हुआ था। रात भर बुखार में कभी 'मम्मी' कभी 'पापा' कहकर वह बड़बड़ा उठता था। कई दिन वह तेज बुखार में पड़ा रहा। पापा आते, दो चार मिनट उसके पलंग के पास खड़े होकर चले जाते। ब्याह का घर था। उसके पास बैठने का समय किसके पास था! वह भी चुप पड़ा रहता। किसी को अपने पास नहीं बुलाता, क्योंकि वह मन में सबसे नाराज था। सोचता था, मेरी मम्मी नहीं आयी, सब झूठे हैं, उसे मेरी मम्मी बताते हैं।

कई दिन बाद जब वह ठीक हुआ, वह अपनी मम्मी के कमरे में गया, जहां वह रहती थी और आजकल जहां वह घंटों बैठकर अपनी मम्मी की दीवार पर टंगी फोटो देखता रहता था। उसने देखा, दीवार पर उसकी मम्मी की तस्वीर नहीं थी। और मम्मी के पलंग पर ही उस काली औरत को देखकर उसे बड़ा धक्का लगा। उसने देखा उस औरत ने उसकी मम्मी के कड़े हाथों में पहन रखे हैं, और उनकी घड़ी बांध रखी है। यह देखकर वह चिल्लाया। फिर बोला, "यह कड़े तो मेरी मम्मी के है, यह घड़ी भी मेरी मम्मी की है, तुमने क्यों पहनी?"

उसने पापा को चिल्लाकर कहते हुए सुना, "संजय को बाहर ही दूसरे कमरे में क्यों नहीं रखते हो!" और उसकी बुआ उसे उठाकर वहां से ले गयी।

कुछ देर बाद वह फिर चुपचाप उस कमरे में आ गया। उसने देखा, वही औरत उसकी मम्मी का बक्स खोले बैठी है। उसने आकर

उमसे चाबी छीन ली और बोला, "तुम मेरी मम्मी का बक्स क्यो खोलती हो ?" यह कहकर वह बक्स पर बैठ गया और वहा तब तक बैठा रहा जब तक कि उसके पापा ने आकर उसे डाटकर वहा से नही हटाया। उस दिन किसी के भी कहने स न उसने दूध पिया न खाना खाया।

अगले दिन सजय का मामा अनिल वहा पहुच गया। क्योकि सजय के पिता ने सजय का सब हाल लिखकर उसे वहा बुलाया था।

मामा को देखकर वह मामा से चिपटकर बहुत रोया और कहा, 'तुम मम्मी का अपने साथ क्यो नही लाये ? अब मुझे मम्मी के पास ले चलो।'

अनिल ने उसे सात्वना देते हुए भरे हुए गले से कहा, "हा, तुम्हें मम्मी के पास ले चलेंगे, मम्मी अस्पताल मे हैं, इसलिए उसे साथ नही लाया।"

सजय ने कहा "मम्मी को जल्दी बुला लो। यहा एक औरत आ गयी है। वह मम्मी का बक्स खोलती है, उनके कपडे पहनती है, घडी पहनती है, साडी पहनती है। वह मम्मी की सब चीजें खराब कर देगी, गदी कर देगी।"

अनिल ने कहा, "तुम्ह रेल कैसी लगती है ?'

'अच्छी लगती है।'

अनिल ने उसे गोद म उठाकर कहा, "हम तुम्हे रेल में बिठाकर अपने साथ ले चलेंगे। तुम चलोगे हमारे साथ ?'

सजय ने जरा रुककर कहा, "मम्मी का बक्स, मम्मी की सब चीजें ले चलोगे ?"

"हा, ले चलेंगे।'

सजय का मुरझाया हुआ चेहरा खिल उठा। उसने कहा, "मम्मी की सब चीजें बक्स मे रख लेना, अस्पताल मे उन्हें दे देंगे।'

अनिल ने सजय की दादी से कहा, "सजय सबसे ज्यादा दुखी इस बात से है कि आपकी नयी बहू उसकी मम्मी के बक्स को खोलती है

और उसके गहने व कपडे पहनती है। वह कह रहा था, मम्मी का बक्स अपने साथ ले चलो। उसे आप खाली कर दीजिएगा, उससे उसकी कुछ तसल्ली हो जायेगी।"

सजय की दादी ने सुनकर कहा, "उसका बक्स कैसे द दू ? उसमे दूसरी का सारा सामान जो रखा है।

अनिल ने क्रोध मे भरकर कहा, "उसके बदले म, मैं अपना चमडे का सूटकेस छोड जाऊगा, जो कीमत म उससे चौगुना है। बच्चे की तसल्ली के लिए कह रहा हू। हमे आप लोगो स ऐसी आशा नही थी। अपने सुख और रुपये के लिए आपने इस मासूम बच्चे तक के दिल की परवाह नही की। साल डेढ साल भी बीत जान देते तो वह अपनी मम्मी की शक्ल भूल जाता फिर आप उसे धोखा देकर किसी को भी उसकी मम्मी बता सकते थे पर आपको तो इतनी जल्दी पडी कि हमारे और इस मासूम बच्चे के आपने आसू भी नही सूखने दिये।'

जरा रुककर, अपने बहनोई की ओर देखकर वह फिर बोला, 'हम अपने सबधियो म मुह दिखाने योग्य नही रहे। लोग क्या सोचते होगे हमने अपनी बहिन के लिए कैसा घर ढूढा था। आपने मतात्मा का अपमान किया है, साथ ही यह समस्त नारी जाति का अपमान है। उसे यह दिखाना है कि मत्यु के बाद वह उसे, पैर की टूटी हुई जूती के समान फेंक कर, दूसरी ला सकता है। पर आजकल ऐसे नीच पति किसी भी जाति म दिखायी नही पडते कम से कम एक वप या छ महीने तो सभी सब्र करते है। पर आपने तीन महीने भी सब्र नही किया। आपके पास तो वह बच्चा छोड गयी थी, जिसस आप अपना मन बहला सकते थे। मतात्मा की भाति उसके बच्चे को भी आपने ठुकरा दिया है। मैं उस ले जा रहा हू, अब सदव के लिए आपका उससे सबध टूट गया है।'

सजय को आता देखकर अनिल चुप हो गया। वह अपने खिलौना की टोकरी लाया और अनिल से बोला, 'मामा, यह भी साथ रख लेना।'

अनिल ने उसे गादी म उठाकर चूम लिया और कहा, "हम तुम्हारी सब चीजें ले चलेंगे।'

और उसके गहने व कपडे पहनती है। वह कह रहा था, मम्मी का बक्स अपने साथ ले चलो। उसे आप खाली कर दीजिएगा, उससे उसकी कुछ तसल्ली हो जायेगी।"

सजय की दादी न तुनककर कहा, "उसका बक्स कसे दे दू ? उसम दूसरी का सारा सामान जो रखा है।"

अनिल न क्रोध म भरकर कहा, "उसके बदले मे, मैं अपना चमडे का सूटकेस छोड जाऊगा, जो कीमत म उससे चौगुना है। बच्चे की तसल्ली के लिए कह रहा हू। हम आप लोगो स ऐसी आशा नही थी। अपने सुख और रुपये के लिए आपने इस मासूम बच्चे तक के दिल की परवाह नही की। साल डेढ साल भी बीत जान देते तो वह अपनी मम्मी की शक्ल भूल जाता फिर आप उसे धोखा देकर किसी को भी उसकी मम्मी बता सकते थे, पर आपको तो इतनी जल्दी पडी कि हमारे और इस मासूम बच्चे के आपने आसू भी नही सूखन दिय।'

जरा रुककर, अपने बहनोई की ओर देखकर वह फिर बोला, "हम अपने सबधियो मे मुह दिखान योग्य नही रहे। लोग क्या सोचत होगे हमने अपनी बहिन के लिए कैसा घर ढूढा था। आपने मतात्मा का अपमान किया है, साथ ही यह समस्त नारी जाति का अपमान है। उसे यह दिखाना है कि मत्यु के बाद वह उसे, पर की टूटी हुई जूती के समान फेंक कर दूसरी ला सकता है। पर आजकल ऐसे नीच पति किसी भी जाति म दिखायी नही पडत कम से कम एक वष या छ महीन तो सभी सब्र करत है। पर आपने तीन महीने भी सब्र नही किया। आपके पास तो वह बच्चा छोड गयी थी, जिससे आप अपना मन बहला सकत थे। मतात्मा की भाति उसक बच्चे को भी आपन ठुकरा दिया है। मैं उस ले जा रहा हू, अब सदैव के लिए आपका उससे सबध टूट गया है।"

सजय को आता देखकर अनिल चुप हो गया। वह अपने खिलौनो की टोकरी लाया और अनिल से बोला, "मामा, यह भी साथ रख लेना।'

अनिल न उस गोदी म उठाकर चूम लिया और कहा "हम तुम्हारी सब चीजें ले चलेंगे।'

सजय न उत्सुकता से पूछा, "और मम्मी की ?"

अनिल न कहा, "हम मम्मी की भी सब चीजें ले चलेगे। अच्छ तुम अपनी और सब चीजें ले आओ, ताग। आने वाला है।"

सजय फिर अदर भाग गया। इस बीच सब लाग अदर चले गए अनिल ने अपना सूटकेस खाली करके अदर भेज दिया। कुछ ही दे मे शशि का खाली बक्स जिसम दा तीन पुरानी सूती साडिया ब्लाउज थे, वहा आ गया। अनिल न अपन कपडे उसम भर दिए औ ऊपर से शशि के पुराने कपडे उन पर फैला दिए।

सजय वडी खुशी से मामा के साथ तागे पर चढ गया, क्योंकि उसने देखा उसकी मम्मी का बक्स पहले से ही तागे म रखा है। ताग चढत चढते उसने पूछा, 'मम्मी की सब चीजे बक्स मे रख ली है ?'

मामा ने भरे हुए गले से कहा "हा सब चीजे रख ली है।'

सजय का मामा के साथ जात दखकर सबन वडे सताप की सा ली।

# साप का जहर

चाय का प्याला मेज पर रखते हुए राकेश ने कहा, "आभा, कल तुम्हें पद्रह व्यक्तियो के लिए डिनर का प्रबध करना है।"

आभा ने चौंककर कहा, 'पद्रह का, आप तो दस ग्यारह के लिए ही कह रहे थे !"

'हा, सोच तो मैं भी यही रहा था कि इससे अधिक का निमत्रण न दू तुम्हारे लिए काम बहुत बढ जायेगा, लेकिन कल जब मैं मिश्रा जी के घर डिनर पर गया, तो मैंने देखा कि मि० और मिसेज डेविस भी कल सवेरे के जहाज से यहा पहुचे हैं। इग्लड मे मेरी उनसे बडी घनिष्ठता हो गई थी। मिसेज जाज की भी उनसे मित्रता है, इसलिए मिसेज जाज के साथ उन्हें बुलाना आवश्यक था। एक और बडे इडो-नेशियन चित्रकार, जो मुझे इग्लैंड जाते समय जहाज मे मिले थे, यहा आए हुए है। उनका मुझे पता भी नही था। दो-तीन दिन यहा ठहरेंगे, फिर अपने चित्रो की प्रदर्शनी करने के लिए दिल्ली जा रहे हैं। उन्हें भी बुलाना होगा। उनकी पत्नी भी उनके साथ है। इग्लड मे कई बार उन्होंने मुझे अपने घर खाने के लिए बुलाया था।"

"खर, चार-पाच के बढने स कोई विशेष अतर नही पडेगा। अब आप यह बताइए, डिनर म क्या-क्या चीजें बनानी चाहिए ?"

राकेश ने आश्चय से कहा, "इसके लिए मैं बताऊ ? यह सब काम

नो तुम्हारा है, तुम तो दावत के लिए चीजें बनाने में निपुण हो।"

आभा ने कहा, "इन लोगों की पसंद की चीजों के संबंध में आप अधिक जानते हैं इसी कारण आपसे पूछ रही थी।"

राकेश ने कहा, "इन्हें तो हिंदुस्तानी खाना बहुत पसंद आता है। कल जब मिश्रा जी के घर मैंने मि० और मिसेज डेविस व मिसेज जाज को खाने का निमंत्रण दिया तो मिश्रा जी उनसे कहने लगे—आज तो आपको मामूली सा खाना मिला है बढ़िया खाना तो आपको कल मिलेगा। तुम्हारे खाने की मिश्रा जी बड़ी प्रशंसा कर रहे थे।"

आभा ने कहा, 'पहिले से ही उनके सामने प्रशंसा कर दी। अच्छा न बना तो और बदनामी होगी।

राकेश ने कहा, 'तुम तो बेकार में ही घबराया करती हो कभी आज तक कोई चीज तुम्हारी दावत में बिगड़ी है?'

अगले दिन सवेरे से ही आभा डिनर की तैयारी में लग गई। खाना बनाने के लिए नौकर था, लेकिन दावत वाले दिन आभा कोई भी चीज नौकर से नहीं बनवाती थी। इस दावत में तो उसे बहुत सी चीजें बनानी थीं। हिंदुस्तानी खाने के अतिरिक्त वह वे चीजें भी तैयार कर रही थी जो अंगरेज और अमरीकन लोगों को पसंद होती हैं।

शाम को सात बजे सब चीजें तैयार करके आभा रसोई के बाहर आ गई क्योंकि उसे सबका स्वागत करने के लिए तैयार होना था।

कपड़े बदलते-बदलते उसने सोचा कि बीच में जाकर मेवा को बड़े प्लेटों में सजाकर रख दे। रसोई का दरवाजा खोलते ही एक काला लंबा साँप तेजी से उसके पैरों के पास से होता हुआ बाहर निकल गया। उसका सारा शरीर थर्रा गया। साँप काट लेता तो दावत ही रह जाती। नौकर साँप मारने के लिए लाठी लेकर दौड़ा, पर साँप आंगन में जाकर कहीं गायब हो गया। आभा का दिल धड़क रहा था। वह सोच रही थी अभी तो वह रसोई में से गई थी। इतनी देर में ही साँप कहाँ से आ गया? क्या पता वह सवेरे से ही कहीं छिपा बैठा हो। ये सब विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर लगाने लगे। मेहमानों के आने का समय भी निकट आता जा रहा था। इस कारण जल्दी से उसने अपना

काम फिर आरभ कर दिया । नौकर से फिरनी की प्लेटें बाहर बिछे हुए तख्त पर रखने के लिए कहकर वह प्लेटो म दही-वडे लगाने लगी। पर उसके दिमाग से साप की बात गई नही थी । उसके मन म आ रहा था कि साप ने किसी चीज म मुह न डाल दिया हो ? पर साप क्या कभी खाने की वस्तुओ मे इस प्रकार मुह डालता है ? कभी सुना तो नही । वह स्वय से ही सवाल-जवाब कर रही थी । एकदम इस ध्यान ने उसे चौका दिया कि सवेरे से रसोई म दूध का पतीला भरा हुआ रखा था । हल्की सी जाली ढकी हुई थी, उसे वह आसानी स सरका सकता था । दूध तो साप को बहुत पसद होता है क्या पता साप सवेरे से ही रसोई म कहीं छिपा बैठा हो और उसन दूध पिया हो या फिरनी जमाने के लिए जब प्लेटो म रखी थी तभी उसने उन्हें चाट लिया हो या फुकार छोड दी हो ! इस प्रकार के अनेको विचार उसके मन में आते रहे ।

राकेश नहाते समय बाथरूम में साप निकलने का शोर सुन चुका था । साप आभा के पैरो मे से निकलकर गया यह उसने सुन लिया था । जल्दी से नहाकर बाहर आने पर उसन आभा से कहा, "तुम बहुत बची । साप काट लेता तो क्या होता ?"

आभा ने कहा, "मैं तो बच ही गई, पर मुझे डर है, साप ने खाने की किसी चीज मे मुह न डाल दिया हो ।"

राकेश ने कहा, "तुम भी क्या बात करती हो, क्या वह यहा बैठा हुआ तुम्हारी बनाई हुई चीजो को ही चख रहा था !"

आभा ने जरा चिढकर कहा, 'आप तो हर एक बात को मजाक मे ले लेते हो । दूध को तो साप पीता ही है, फिरनी भी चाट सकता है । सवेरे से दूध आज रसोई मे रखा था । खराब न हो इसलिए ढकना भी जाली का ढक रखा था । मुझे तो बडी चिंता हो रही है ।"

राकेश ने लापरवाही के साथ कहा, "नहीं जी, तुम भी किस चिंता मे पडी हो, जल्दी जल्दी सभी चीजें खाने के कमरे म भेजो, मेहमान आते ही होगे ।"

इसी बीच आभा के प्रिय कुत्ते टाइगर ने, अवसर पाकर पजा के

पल खड़े होकर बाहर तख्त पर रखी हुई फिरनी की आठ-दस प्लेटें साफ कर दी।

आभा को बड़ा बुरा लगा, उसने झुंझलाहट के साथ कहा, "पता नहीं आज क्या हो रहा है ? मुझे लग रहा है आज दावत म जरूर कोई विघ्न पड़गा।" कुत्ते को बाहर निकालकर दरवाजा बन्द करने को कह-कर वह फिर काम मे लग गई।

डिनर का समय आठ बजे का था, ठीक आठ बजे कार का हॉर्न सुनाई दिया। राकेश और आभा मेहमानो का स्वागत करने के लिए बाहर बरामदे म चले गए। गहरे नीले रग की ब्यूक कार आकर रुकी, जिसमे से मिसेज जाज तथा मि० व मिसेज डेविस उतरे। मुस्कराहट के साथ सबकी आखें मिली। आभा मिसेज जाज की मुस्करा-हट पर ही मुग्ध थी, पर आज मिसेज डेविस की मुस्कराहट मे भी उसे वही मिठास मिली। इतने में ही दूसरी कार आ गई। वह कार वहा के एक बड़े सेठ की थी। वह अपनी ही कार मे मिश्रा जी को, जो उनके ही बगले म किरायदार है और इडोनेशियन चित्रकार व उनकी पत्नी को, जो उनके पास ही एक होटल मे ठहरे हुए थे, ले आए थे। बारी-बारी स सबका परिचय एक दूसरे से कराया गया, फिर सब लोग आकर ड्राइग रूम म बठ गए और आभा खान का प्रबन्ध करने के लिए भीतर चली गई।

अतिथियो को खाने म बड़ा मजा आ रहा था और आभा को उन लोगो की जुड़ी हुई मजलिस म। आभा की दृष्टि कभी किसी पर जाकर अटक जाती कभी किसी पर। मिसज जाज की आयु ४५ के लगभग थी पर देखने म वह ३० से अधिक नही लगती थी। बॉब्ड हेयर, हल्के गुलाबी रग के चेहरे पर गहरे लाल रग की लिपस्टिक से रगे हुए पतले होठ। प्लास्टिक का गुलाबी रग का घुटनो तक का फ्राक, शरीर के रग के जाघ तक के मोजे सुडौल गठा हुआ शरीर, कसी हुई मासल सुडौल बाहे। उनके बगल मे मिसज डेविस बठी हुई थी। वह भी अपनी आयु से बहुत कम लगती थी।

पुरुषो मे डेविस और सेठ जी पर आभा की दृष्टि बार बार रुकती।

वे दोनो बराबर ही बैठे थे। मि० डेविस लबा कद, छरहरा बदन, रग गोरा कुछ गुलाबीपन लिए चेहरा लबा जो बाल कम होने के कारण कुछ और लबा दिखाई देने लगा था। गाल कुछ पिचके हुए। उनके बराबर मे बैठे हुए सेठ जी उनसे बिल्कुल भिन्न थे। कद छोटा, शरीर कुछ मोटा, पर गठा हुआ, सिर पर काले-काले घने बाल, उनका जमा गोरा रग आभा ने अब तक किसी पुरुष का नहीं देखा था। उनके गोरे रग मे उनके शरीर का रग चमक रहा था। सेठ जी को स्वय अपने स्वास्थ्य पर गर्व था। फिरनी की दूसरी प्लेट को अपनी ओर सरकाते हुए सेठ जी बोले, फिरनी बहुत बढिया बनी है। मैं मीठी चीज का बहुत शौकीन हू और आपको एक बात सुनकर आश्चय होगा कि मैं 'डायबिटीज का मरीज हू। डाक्टर ने मुझे मीठी चीजें खाने के लिए मना कर दिया है पर मैंने अब तक कभी मीठा नही छोडा, खूब मिठाइ खाता हू। घी दूध, मक्खन जो मन मे आता है खाता हू। डाक्टरो को भी आश्चय होता है कि यह सब चीजें खाने पर भी मेरा मज क्यो नही बढता ? क्या आप कह सकते हैं कि मुझे कोई बीमारी है जिसके लिए मैं परहेज करू ?

सबके ही मुह से निकल पडा, नही स्वास्थ्य तो आपका खूब अच्छा दिखाई देता है। उसके बाद कई बार उनको मिठाइ और फिरनी दी गई।

खाना समाप्त होने पर जसे ही आभा भीतर की ओर गई, नौकर ने कहा "बीबी जी टाईगर मर गया।

आभा ने चौंककर घबराहट के साथ पूछा हैं मर गया ?" राकेश भी वहा आ गया था, उसने धीरे से आभा से कहा "मालूम होता है, फिरनी मे जहर था।"

'हा मुझे तो पहिले ही डर था। अब क्या होगा ? उसने अपने बडे-बडे नेत्र राकेश के चेहरे पर गडा दिए।

'घबराओ मत मैं अभी डाक्टर से फोन पर बात करता हू। सभव है कोई ऐसी दवा दे सके जिससे जहर का असर चला जाए।

आभा के सिर मे चक्कर आने लगा। उसे लगा जैसे स्वय उसे

पर जहर का असर होने लगा हो। वह माथा पकड़कर वहीं बैठ गई। राकेश ने आभा से कहा, "देखो यह बात किसी को मालूम न हो।"

राकेश ने टेलीफोन करके सब बात अपने एक अतरग डाक्टर मित्र स कही। डॉ० ने कहा, "आपकी बात ठीक स तो समझ म नही आई, पर फिरनी खान से कुत्ता मर गया इसलिए फिरनी म अवश्य कोई, जहरीली चीज होगी। एक दवा भेज रहा हू चाय या काफी मे यह डालकर सबको पिला दीजिये, यदि किसी की हालत कुछ बिगडे तो मुझे तुरत सूचना देना, मैं आ जाऊगा।'

काफी के लिए पानी चढा दिया गया। राकेश का जी भी कुछ भारी सा होने लगा था। राकेश और आभा दवा की बेचनी से प्रतीक्षा कर रहे थे।

मेहमान अकेले थे। इसलिए आभा को फिर वहा उन लोगो के बीच जाना पडा। आभा की शक्ल एकदम उतरी हुई देखकर मेहमान कहन लगे, "अब आप बैठिय, आराम कीजिये आपको तो आज बहुत ही काम करना पडा है।" आभा वही आरामकुर्सी पर बैठ गई, उसम उठने का साहस ही नही था, उसे चक्कर आ रहे थे।

लगभग दस मिनट के अदर कपाउडर कार म आकर दवा दे गया। काफी बनाने का सब प्रवध राकेश न किया। सबने कॉफी पी ली, लेकिन सेठ जी मे बहुत मिन्नत की पर उन्होने काफी नही पी। भेद की बात आभा और राकेश कह ता कसे? असली भेद वह सब पर प्रगट करना नही चाहते थे।

काफी पीने के बाद से आभा की तबीयत कुछ सुधरने लगी लेकिन सेठ जी की ओर से उस चिता बढ रही थी। चलत समय तक आभा और राकेश ने चेष्टा की कि सेठ जी किसी तरह काफी पी लें, पर उन्ह सफलता नही मिली। सब लाग आभा और राकेश को दावत के लिए धन्यवाद देकर चले गए।

आभा को चिता हुई कि सठ जी का क्या होगा। उसन राकेश म कहा, "अब आप सेठ जी के घर जाकर सब बातें उनसे कहकर उन्हे दवा दे आइय।"

"हा, सोच तो मैं भी यही रहा हू, जल्दी से जल्दी चला जाऊ। ड्राइवर कार लेकर लौट आए, बस इसकी प्रतीक्षा मे हू।"

थोडी देर दोनों चिंता मे डूबे बैठे रहे। कार आते ही राकेश दवा लेकर सेठजी के घर चला गया।

राकेश जब सेठजी के घर पहुचा, सेठजी गहरी नींद सो चुके थे। राकेश को देखकर सेठानी ने पूछा, 'क्या बात है, आप इस समय कैसे आए ?'

राकेश को सेठानी से सब बातें कहनी पडी। सेठानी पहिले तो झल्लाकर बोली, "आपको वहीं दवा दे देनी चाहिए थी, बडे से बडे डाक्टर को बुलाकर इजेक्शन लगवाने चाहिए थे। अपनी गलती को छिपाने के लिए आपने दूसरो की जान की भी परवाह नहीं की।" फिर बिलखती हुई सी बोली, "हाय मुझे क्या खबर थी कि यह दावत नहीं, जहर खाने जा रहे हैं। हे भगवान, अब क्या होगा ?" यह कहते-कहते वह रो पडी रोते-रोते ही बोली, "वह तो जब से आए हैं बेसुध पडे है। मैं तो समझी थी कि गहरी नींद आ गई है। मुझे क्या पता था कि यह जहर का असर है।'

राकेश ने कई बार समझाया कि आप घबराइये मत, जल्दी काफी बनवा दीजिये, यह बडी अच्छी दवा है, पर सेठानी ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। अत मे फिर जब राकेश ने कॉफी के लिए कहा तो सेठानी यह कहकर कि अब किसके लिए कॉफी बनवाऊ ?—जोर जोर से रोने लगी। इतने म राकेश की आवाज सुनकर सेठ जी का लडका वहा आ गया। उसने सब बातें सुनकर तुरत नौकर से कॉफी बनाकर लाने को कहा। सेठ जी को मुश्किल से जगाया गया। जब उन्हें पता लगा कि खाने म जहर था, तो वह और भी घबरा गए। उन्होंने रोते हुए कहा, "अब दवा कुछ असर नहीं करेगी। मुझे तो जहर चढ गया है। बेहोशी के कारण मुझसे आखें भी नहीं खोली जा रही हैं। मुझे तो मोटर मे ही नशा सा चढने लगा था। सेठानी उनके पलग पर ही बैठी हुई रो रही थी। उसे अपनी ओर खींचकर वह कहने लगे, 'मैं जा रहा हू, तुम अब क्या करोगी ?' सेठानी और भी फूट-फूट कर रोने

लगी और अपना सिर पीटने लगी। घबराहट के मारे राकेश के भी हाथ काप रहे थे। उसने जल्दी काफी म दवा घोलकर सेठ जी को जबरदस्ती पिलाई।

सेठ जी का लडका, राकेश की कार मे डाक्टर को बुलाने चला गया। राकेश सिर पकडकर बैठ गया। उसका दिल बड़े जोरो से धडक रहा था।

उधर राकेश के जाने के बाद आभा को अपने टाइगर का ध्यान आया। जब टाइगर ने फिरनी खाई थी, उसे उस पर कितना क्रोध आया था! उसे क्या पता था कि इस पार्थिव जगत म यह उसका अतिम भोजन था। उसने स्वय जहर खाया पर मर कर कितने आदमियो की जान बचा दी! आभा की आखो म आसू भर आए और वह अपने प्यारे टाइगर को देखने के लिए बेचैन हो उठी।

बाहर जाकर आभा न नौकर से पूछा "टाइगर कहा है?" टाइगर के पास पहुचकर वह एकदम चौक पडी "यह क्या, यह तो खून से लथ पथ है।"

नौकर ने कहा, "सडक पर, जहा मोटर इसके ऊपर से उतरी थी यहा से चौगुना खून पडा है।'

आभा के सामने टाइगर के मरने का रहस्य घूम गया। राकेश के जाने से सेठ जी के घर क्या खलबली मच गई होगी, उसे इतना ध्यान आया। उसने टाइगर के मरने का कारण लिखकर नौकर को तुरत साइकिल पर सेठ जी के घर भेजा। सेठ जी का लडका डाक्टर को लेकर उसी समय पहुचा था।

आभा के पर्चे को पढकर राकेश की जान मे जान आई और उसने झटपट सबको टाइगर के मरने का कारण बताया। सुनते ही सब लोग खिलखिलाकर हस पडे। सेठ जी की नीद भी सबकी हसी से खुल गई।

डॉ० ने स्टेथास्कोप अपनी जेब मे ठूसते और अपना बैग उठाते हुए कहा, 'आप लोगो को यह नही मालूम कि साप का जहर इस तरह से खाने की चीजो मे नही आ जाता। साप का जहर तो जब वह काट लेता है, तब रक्त की नाडियो के द्वारा ही चढता है।"

# जो गरजते है वे बरसते नही

"पापा खाना ले जाऊ ? अजलि ने अपने पिता रविमोहन से पूछा।

'नही आज मैं खाना नही खाऊगा।'

'क्या क्या बात है ?"

"आज मेरी तबीयत ठीक नही है।"

शीला को जब अजलि से पता चला कि रविमोहन की तबीयत ठीक नही है तब उसने तवा अगीठी पर स उतार दिया और पति के पास आकर पूछा 'कसी तबीयत है आपकी ? खाने को क्या मना कर दिया ?'

रविमोहन ने सोफे पर लेट लेट ही उत्तर दिया, 'सिर म बहुत जोर का दद हो रहा है। आज जैसा हृदयद्रावक दृश्य मैंने पहले कभी नही देखा। बहुतो क साथ श्मशान गया हू, जाना ही पडता है लेकिन आज तो मेरी भी तबीयत घबरा गई। ईश्वर ने बहुत ही बुरा किया।

शीला (दुख भरे स्वर म)—"बडी जवान मौत हुई है। सुना है मा के घर स भी सब लाग आ गए थे, उनका तो बुरा हाल होगा ?

"उनका तो बुरा हाल होना ही था लेकिन सबस कठिन तो उसके पति को सम्हालना हो गया। तीन चार आदमियो ने उसे पकड रखा था, वरना शायद वह चिता म कूद पडता।'

"मैने भी यही सुना है कि वह उसस बडी मोहब्बत करता था। लडकी भी तो लाखा मे एक थी। पर मौत के सामने किसी का भी बस नही चलता।'

तभी रविमोहन की मा वहा आ गई और बडे दु ख से बोली—"अरे वह लडकी नो मेरी देखी हुई थी। वडी सुदर और सुशील थी। उसकी हाथ की वनी हुई तस्वीरे देखकर तो मेरी आखें खुल गई थी। पढी लिखी होकर भी घर के सारे कामो मे चतुर थी। इतने वडे बाप की बटी थी, लेकिन सबसे इतना मीठा बोलती थी कि जी करता था उसकी बातें ही सुनती रहू।"

शीला ने जरा तीखे स्वर मे कहा—"अम्मा जी, बुरा न माना ता एक बात कहू। सास के सामने ता बहू चाह सोने की वनकर आ जाए, लेकिन वह उसम खोट निकाले विना नही रहती। अब इस ही दख लो। किसी बात की कमी थी इसमे ? लेकिन सास ने कभी चैन स नही बठन दिया। चार बरस मे ही घुल घुलकर आधी हा गई थी।"

'ठीक ही कहती हो बहू ! लेकिन सब सासे एक सी नही होती। अब तू ही बता मैंने कभी तुझे टेढी आखो देखा है ?"

'आप तो देवी है। ऐसी सास ता शायद ही किसी भाग्यवान को मिलती हा।"

'बात यह है बहू कि सास बहू को बटी मानकर चले आर उसके दु ख दद की पीर समझे। एसी साम का क्या है, चार दिन पीछे बट का घर बसा लेगी। बटी जिसकी गई जिंदगी तो उसकी बिगड गई।'

रविमोहन—"पर नही मा, वह लडका ऐसा नही है जो इतनी जल्दी उसे भूल जाएगा। उसकी हालत देखती ता ऐसा न कहती तुम। वह तो पागल हो रहा है रो राकर।

मा (व्यग्य से)—'जो गरजते है वे वरसत नही। यह रोना पीटना कुछ ही दिनो का है। सास ने भी ता आज घुटने और छाती पीट-पीट-कर नीली कर ली बताते है। पर मैं सब समझती हू।'

रविमोहन—"मा, सास कैसी भी हा वह लडका उस बडा प्यार करता था। दो चार वरस से पहले तो वह घर म ब्याह का नाम भी

नही लेने देगा ।'

मा ने और भी दढ़ना मे कहा, 'तू कह क्या रहा है ? मैंने ये बाल धूप म सफेद नही किए है। मैं उसकी मा का अच्छी तरह जानती हू । उसे कोई मोटा आसामी मिल गया तो वह बेटे को एसे जाल मे फसाएगी कि वह निकल ही नही सकगा ।

एसा क्या वह दूध पीता बच्चा है ? उस अपने बच्चे का भी तो ध्यान है । उस वह इतनी जल्दी दूसरी मा के हाथो मे कभी नहीं देगा ।'

'अच्छा देख लेना, माई-माई, बाल कितने ? जिजमान आगे को ही आ रहे है ।'

'मा तुम ता पुरान जमान की बात कर रही हो । पहले इतनी जल्दी दूसरी शादी कर लेत थे, क्योकि तब औरतो की कद्र ही क्या थी, मद औरता का "

बात बीच मे ही काटकर मा बोली—'बस रहने द पहले जमाने की बात मत कर । यह तो इस जमाने म ही पत्थर पड रह है कि लुगाई के बिना चैन ही नहीं पडता । जिदा रहती है तो पीहर नहीं जाने दत कहत हैं तुम्हारे बिना रह नही सकते और मरने के बाद तुरत ही दूसरी के सपने देखने लगत हैं ।'

मा, सब लोग एक से नही होते, न सबकी परिस्थितिया ही एक सी होती हैं । जिनक घर मे कोई नही होता, व जल्दी कर लेते हैं । पर इनका ता पूरा कुटुब भरा हुआ है ।"

"अच्छा, अभी क्या कहू । कुछ दिन बाद मेरी बात याद कर लेना । मैं तो उसकी मा को अच्छी तरह जानती हू ।"

सुरेश की मा (चिल्लाकर)— 'सुरेश, यहा आकर मुन्ने को देख, मैं अदर जा रही हू ।'

सुरेश— 'मा अभी तो मैंने नहाकर कपडे भी ढग से नही पहने । तुम पाच मिनट भी इसे नही रख सकती ?"

'मेरे बस का नही है यह कभी यहा भागता है कभी वहा । फिर

दोष देगा मुझे कि उसने मिट्टी खा ली, उसने चूना खा लिया।"

"तो तुम उस रोक नही सक्ती ! अभी तो तुम बुढिया नही हुई हा। बुढिया हो जाओगी तभी एसी बात कहना।"

"बुढिया हुइ हू या नही, पर मेरे बस का उसक पीछे पीछे फिरना नही है।"

"वीणा को बुला लो।'

"वह पढ रही है।'

सुरेश (चिल्लाकर)— सबका काम है बस मैं ही फालतू हू। मेरा भी तो ध्यान करा, सारा दिन मैं उस पास रखता हू। पाच मिनट को भी छोडता हू ता तुम आफत कर लेती हो। डेढ महीने से छुट्टी ले रखी है। क्या बराबर छुट्टी ही लेता रहूगा ?

"आफत तो तूने जानबूझ कर मोल ले रखी है। कब तक उस राता रहेगा ? रोने से क्या वह आ जाएगी ? कह रही हू जल्दी ब्याह कर ले, वह आकर बच्चे को सभाल लेगी।'

सुरेश (व्यग्य स)— 'वह बच्चे को सभाल लेगी ! दूसरी मा आकर तो उसे सभाल लेगी और तुम जो उसकी दादी हो, उसे अपनी आखो का तारा, जिगर का टुकडा कहती हा, तुम उसे नही सभाल सकती !

मा (कुछ सकपकाकर)—' मैं क्या करू, जब वह मेरे पास रहता ही नही।"

"वह नही रहता या तुम उस रखना नही चाहती ! मैं तुम्हारी सब तरकीबें जानता हू। तुम मुझे जान बूझकर तग कर रही हो, जिस से मैं शादी करने के लिए मजबूर हो जाऊ। पर सोच लेना यह तुम्हारी भूल है। मुन्ना जब तक ३ वष का नही हो जाएगा और मैं उसे माटेसरी स्कूल मे दाखिल नही कर दगा, जो उस की मा की इच्छा थी तब तक मैं ब्याह नही करूगा। तुमने ज्यादा परेशान किया तो मैं घर छोडकर चला जाऊगा।"

"चला जा, चला जाएगा तो क्या मेरा भाग्य ले जाएगा ? औरत को जितना रो रहा है, मा को उतना थाडे ही रोएगा। मा का क्या है चाहे कल की मरती आज मर जाए। घर का काम करते करते तलुए

घिस गए। बुढ़ापे मे यह सुख मिल रहा है बेटा पैदा करने का।"

'अभी तुम्हारा बुढापा कहा आया है ?"

मा (रोते हुए)—"जब मैं मर जाऊगी तब सुख देना। अब मेरी हड्डिया को पेल डाला। दुनिया मरती चली जा रही है, पर मेरे लिए इश्वर के घर भी जगह नही है।'

"जरा-सी बात हुई कि तुम ने रोना शुरू कर दिया, मैं तो तग आ गया हू इस जिन्दगी से। क्या करू, कहा जाऊ, कुछ समझ म नही आता।"

सुरेश के पिता न पत्नी से कहा—'तीन खत आए हैं। लडकिया तीनो ही बडी अच्छी है। इन म से एक ता इकलौती बेटी है। न मा है, न कोई भाइ बहन। सब रुपया इसी का है। बस सूरत शक्ल मे साधारण सी है, पहली जसी सुन्दर नही है।'

'सुन्दर नही है तो क्या हुआ। तुम तो यही बात पक्की कर लो।"

"पर तुम्हारा सुरेश मानगा भी, वह तो ब्याह के नाम से भभक उठता है।'

'अजा मुन्ना नही होना तो कुछ भी झगडा नही था। मैं उसे कभी का शादी के लिए तयार कर लेती। पर वह तो मुन्ने के पीछे दीवाना है। ननिहाल वालो के पास छोडने को भी तयार नही होता।

"पर अभी बहू का मरे दिन ही कितने हुए हैं परसो दो महीने होग। इतनी जल्दी ता करनी भी नही चाहिए।'

'ता क्या य लोग इतजार म बैठे रहेंगे ? अच्छे पसे वाले हैं। तुम तो इन्ही का हा लिख दो।"

"मैं तो लिख दूगा, पर सुरेश को समझाना तुम्हारा काम है।

"वह सब मैं देख लूगी, तुम उन्हे यहा आने तो दो।'

सुरेश—"मा, तुमने मुन्ने को रात को क्या खिलाया था ?'

"जो सब ने खाया था, वही इसने खाया था।"

"अच्छा, यह अभी से बडे आदमियो की तरह खाने-पीने लायक

हो गया ! मुझे रात आने में जरा देर हो गई तो जो उसके मन मे आया उसने सबके साथ बैठकर खा लिया। रात भर उसे दस्त आए हैं और उल्टियां हुई है।'

"तो मैं क्या करू, मेहमानो की खातिर करती या उसे लिए बैठी रहती ?"

"तुम भला उसे क्यो लिए बैठी रहती ! जब से वह गई है, एक दिन भी मुन्ना अच्छा नही रहा।"

"वह तो अच्छी थी ही, बुरी तो मा है।"

"अच्छा यह बताओ, कल ये मेहमान कौन आए थे ?"

"तेरी चाची के भाई-भावज थे।'

"यहा क्यो आए थे ?"

'मेरे से मिलने आए थे।'

"तुम्हारी उनसे कब से जान पहचान हो गई ?"

'बहुत पुरानी है।

"मैं सब जानता हू। बडे शर्म की बात है ! उसे मरे अभी दो महीने भी मुश्किल से ही हुए हैं कि तुम दूसरे ब्याह की बातचीत करने लगी। मैं सब सुन रहा था। किसी को पता लग गया तो कोई क्या कहेगा ?"

"सब जगह ऐसा ही चलता है। किसी के मरने जीने मे दुनिया का काम नही रुकता। कोई किसी के पीछे मर नही जाता।"

"मैं मर जाता तो क्या वह दूसरी शादी कर लेती ?'

"औरत कौन कर लेती है जो वही कर लेती ?"

"वह तो मुझे जिंदगी भर बैठकर रोती और मैं कुछ वर्ष भी उस की याद मे नही बिता सकता !"

"तू उसकी याद मे ही रोता रह, मा चाहे रोती-रोती मर जाए।" (रोकर) "जिस बेटे को पालने मे मैंने इतने पापड बेले, उसे मा के सुख का जरा भी ध्यान नही। ब्याह कर ले, बहू घर आकर घर को सम्हाल ले। मुझे छुट्टी मिले। पर मेरी तो तकदीर ही खोटी है। हरि की मा को देखो, एक बेटा पैदा करके लखपती बन गई। तीसरी शादी मे भी

२० हजार नकद लेकर आया है । मा को रानी बनाकर बठा रखा है।"

रात को सुरश के पिता ने सुरश को बुलाकर कहा, "दखो, तुम्हारी मा की सेहत दिन पर-दिन गिरती जा रही है । उनके वस का अब घर-गहस्थी को सम्हालना नही है । तुम्हें अपनी मा का कुछ ध्यान करना चाहिए । कल जा लाग आए थे वे रिश्ता करने का तैयार है । मैंन और तुम्हारी मा ने रिश्ते का वायदा कर लिया है । ऐमा घर तुम्ह फिर नही मिल सकता । लडकी अकेली है वस बाप है । जो कुछ है सब लडकी का ही है । सामान दन का मैंन मना कर दिया है । पहली वहू के घर का सामान रखने का ही घर मे जगह नही है । नकद रुपया दन को कह दिया है । बीस हजार देन को तैयार है । तुम्ह सब बाता का ध्यान रखना चाहिए ।"

"पर इतनी जल्दी तो मैं नही करना चाहता।"

'लडकी वाला क्या तुम्हार लिए वैठा रहेगा ? तुम्ह मेरा भी तो ध्यान रखना चाहिए । मेरी पेंशन हो गई है । तुम्हारी दो बहनें अभी ब्याहने का वैठी है । (जरा रुककर) बीस हजार रुपये मे एक मकान बनवा सकते हो ।"

सुरेश कुछ नही बाला, बाहर चला गया ।

मा-बाप चुप होने का कारण स्वीकृति समझकर गदगद हो गए ।

सुरेश के घनिष्ठ मित्र नरेन्द्र न आकर सुरेश से कहा—"सुरेश, एक बडी अजीब सी बात सुनी है, विश्वास तो नही होता, बुरा न मानो तो पूछ लू ? है तो वह अफवाह ही ।"

सुरेश (झेंपत हुए)—"क्या बात है ?"

'मैंन सुना है, तुम्हारी शादी पक्की हो गइ है और इसी महीने म होने वाली है ?"

"हा, बात ता ठीक है । क्या करू, यह मुन्ना बार बार कहता है ममी का बुला लो, ममी को बुला ला ।"

नरेन्द्र (व्यग्य स)—"तो तुम मुन्ने के लिए ममी ला रहे हो, अपने लिए पत्नी नही !'

"हा, मुझे तो कोई आवश्यकता नहीं थी। पर मैं अकेला इसे कैसे पाल सकता हू। अम्मा हमेशा बीमार रहती है।"

नरेन्द्र—"मैंने तो तुम्हारी मा को कभी बीमार नहीं देखा। उनकी सेहत तो बडी अच्छी है।' (बात बदलकर) "सुरेश, तुम वही बातें कह रहे हो जो साधारण लोग ऐसे अवसर पर कहते है। वे जानते है कि वे जो कह रहे है वह सत्य नहीं है, पर अपने को और दूसरो को धोखा देने के लिए वे यही कहते हैं। मुझे तुमसे ऐसी आशा नही थी। तुमसे मित्रता करने का मुझे गर्व था, पर अब वह मित्रता मेरे लिए शर्म की चीज बन गई है।'

"मैं क्या करू ? मैं तो नहीं चाहता था, अम्मा और बाबू जी बहुत जोर दे रहे है। अम्मा दिन भर रोती रहती है। आखिर मैं भी आदमी हू। कहा तक बर्दाश्त करू। आखिर वह भी मेरी मा है।'

"मा रोती है, अपने आराम के लिए और रुपये के लिए। पर मेरी समझ मे नहीं आता तुम इतनी जल्दी भाभी की जगह किसी दूसरी को कैसे दे सकते हो। तुम कैसे बर्दाश्त कर सकते हो कि भाभी की चीजो पर किसी दूसरी का अधिकार हो। चार दिन पहले तुम उनके कपडे और जेवर देख देखकर रोते थे। उनकी बनाई हुई चीजो को हीरे-मोतियो की तरह सम्हाल कर रखते थे। उनके चित्रो को अपनी मेज पर सजा कर रखते थे। उनके पलग पर उस दिन क्या कहा था—यह पलग इस कमरे मे से नहीं उठेगा। वह चली गई पर उसकी आत्मा मुझे और अपने मुन्ने को अकेला छोडकर नही जा सकती। वह यहीं रहेगी। तुम आदमी नहीं पत्थर हो। तुमने उनकी चिता भी ठडी नही होने दी। इतनी जल्दी इस कमरे मे किसी दूसरी के साथ रहते तुम्हारा दिल नही फटेगा ? छह महीने तो हो जाने देते। उनके आसन पर इतनी जल्दी किसी दूसरी को बठाकर तुम मृतात्मा का अपमान कर रहे हो।"

"नरेन्द्र, तुम मेरी परिस्थिति नही समझ रहे हो।"

"मैंने अच्छी तरह तुम्हारी परिस्थितिया समझ ली है, सुरेश ! अच्छा मैं जाता हू, विदा।'

"रवि की वहू, जरा यहा तो आ !" रविमोहन की मा ने आगन मे से आवाज दी ।

'हा अम्मा जी, क्या बात है ?"

जरा रवि को भी बुला ले ।

रविमोहन (आकर)—' मैं तो तुम्हारे बिना बुलाए ही आ रहा था । आज तुम कहा गई थी ?"

' हरि के घर गई थी । अब देख लो, मेरी बात सच्ची हो गई या नही । इतनी जल्दी की तो मुझे भी आशा नही थी ।"

'क्या बात, मा ? '

'अरे भूल गया उस दिन की बात जब तू मुझसे बहस कर रहा था । आज हरि के घर सुरेश की मा मिली थी । बडी खुश थी । कह रही थी, सुरेश की सगाई हो गई है । अगले महीने मे शादी है ।

रविमोहन—"क्या सच ? इन्होने तो गजब कर दिया । तीन महीने भी नही होने दिए । तुमने सच ही कहा था मा, जो गरजते हैं वे बरसते नही ।

वीरा को रुपये मिलने की खुशी हुई, लेकिन साथ ही नौकर के बदन पर पड़े हुए बेंत के निशानों को देखकर उसके रोंगटे खड़े हो गये। उसने नम्रता से नौकर से कहा, "सोहन, मैंने तुझे कितना समझाया कि तू मुझे रुपये दे दे, मैं किसीसे तेरा नाम नहीं लूंगा। कोई दूसरा नौकर घर पर नहीं है, जो उस पर शक हो। पर तूने मेरी बात नहीं मानी। मुझे चुपचाप दे देता तो तेरी यह दशा क्या होती ?"

नौकर ने रोते हुए कहा, "बीबी जी, मैंने रुपये नहीं लिए।"

वीरा ने आश्चर्य से कहा, "अभी तो तूने माना है ?"

उसके उत्तर में देवर ने कहा, "माना तो था, पर तुम्हारी मीठी मीठी बातें सुनकर उसने सोचा कि शायद फिर तुम उसके रोने से पसीज जाओ। बड़े बदमाश होते हैं ये लोग।"

फिर नौकर की ओर मुड़कर कहा, "क्यों बे उल्लू के पट्ठे, फिर मुकर गया ?'

नौकर ने रोते हुए कहा, "मैंने माना कहा था, मैंने तो यह कहा था कि सोच लूं।"

देवर ने एक बेंत उसकी टांगों पर फिर जड़ दी और गरजकर कहा "चोरी की है या नहीं, यह बात भी सोचकर बताने की है ?"

बेंत की चोट से नौकर तड़फड़ा उठा। वीरा का हृदय कांप गया। उसने देवर के हाथ की बेंत पकड़ ली और क्रोध से कहा, "बस, अब मत मारो।"

इतने में वीरा के पति रानेश आ गये, बाहर एक मीटिंग में गये हुए थे।

उन्होंने यह दृश्य देखकर आश्चर्य से कहा, "यह क्या हो रहा है ? मैं तो सोच रहा था कि तुम नाग सिनेमा जाने के लिए मुझे तैयार मिलोगे। बारिश की वजह से टैक्सी लेकर आया हूं।"

सुरेश ने कहा, "यहां दूसरा ही सिनेमा हो रहा है।"

वीरा बोली, "सिनेमा जाने के लिए बीस रुपये बक्स में से निकाल कर मैंने अपने पर्स में रखे थे। मुंह हाथ धोने के लिए बाथरूम में गई। बस इतनी सी देर में पर्स में से सब रुपये गायब हो गये।"

राकेश ने गभीरता स कहा, "सोहन के अलावा और कौन है यहा रुपय लेनेवाला ?" सुरेश ने कहा, "उसन तो हा कर ली थी, पर भाभी को देखते ही फिर मुकर गया।'

राकेश बाला, 'लेकिन घर पर इस तरह मारना ठीक नही है।"

इस पर सुरेश न अकडकर कहा, 'अभी हवालात म लिए जाता हू। रात भर जेल की कोठरी मे वद रहकर सवर वहा की मार खाकर ही रुपये देगा।'

पास ही पुलिस लाइन थी, सुरेश और राकेश दोना उसे वहा ले गये। सुरश मजिस्ट्रेट था। इसलिए उसका हुक्म मिलते ही सोहन को जेल की काठरी मे बद कर दिया गया।

वीरा को उस रात कइ घटे नीद नही आई। कितना चार है वह नौकर! दा महीने मे इसने कितनी चीजें और रुपये चुरा लिए। वीरा सोचती रही और कितने ही दृश्य चलचित्र की भाति उसकी आखो के सामने आने लगे। दो महीन पहले वीरा दूसर मकान म रहती थी। वहा उसके पास जो नौकर था वह वडा ईमानदार था, कई वप स वह काम कर रहा था। उसकी ईमानदारी के कारण वीरा रुपये पैसे रखने मे बडी लापरवाह हा गई थी। नोट के बचे रुपये पैसे कभी कई कई दिन तक रेडियो की मेज पर रखे रहत कभी बिस्तर पर तकिये के नीचे, कभी ड्राइग रूम की कोर्निस पर, लेकिन कभी एक पैसा भी न खोता था। पर इस मकान मे जब वीरा आई तब पुराना नौकर आने का तैयार नही हुआ, क्योकि यह घर उसके घर से तीन मील दूर पडता या और रात को वह घर साने जाता था।

नये घर म आकर सोहन को नौकर रखा। इसके आते ही कभी अठ नी गायब, तो कभी रुपया। यह देखकर वीरा ने अपने रुपये पैसे सम्हालकर बक्स म रखने आरभ कर दिये। पर इस समय सिनेमा जाने की जल्दी म वह अपना पस मेज की दराज मे रखकर वाथरूम मे चली गई थी। इतनी जल्दी वह रुपये निकाल लेगा, इसका उसे ध्यान भी नही था।

इस समय वीरा के मन मे रुपये जाने के दुख के साथ, नौकर की

पिटाई का भी दुख था। उसे नौकर पर तरस भी आ रहा था और क्रोध भी। तरस यह सोचकर आता था कि बचपने से ही गरीबी के कारण मा-बाप ने चोरी करने की आदत डाल दी। क्रोध इस ध्यान से कि कितना पक्का चोर है, इतना पिटने पर भी एक बार हां करके फिर मुकर गया। इन्ही विचारो मे लीन, न जाने कब उसे नीद आ गई।

सवेरे बच्चे के जागने से उसकी नीद खुली। आख खुलते ही रात का सारा दृश्य उसके सामने आ गया। उसे ध्यान आया, आज तो घर का सारा काम उसे ही करना है। यह सोचकर एकदम उठ बैठी।

सुरेश दूर के रिश्ते मे राकेश का भाई लगता है। पहले वकील था। फिर मुसिफ हुआ, अब मजिस्ट्रेट होकर उसी शहर मे आ गया था। उसका मकान पास ही था। सिनेमा जाने का उस दिन सब का प्रोग्राम था। इसीलिए वह उस समय आया था। सोहन को जेल मे बद करके रात का वह घर चला गया था।

सबेरे नौ दस बजे के लगभग सुरेश ने आकर कहा, "भाभी, अब तो मिठाई खिलाओ। पाच से कम की मिठाई नही खाऊगा।"

बीरा ने कहा "बताओ तो क्या हुआ?"

सुरेश ने घमड से कहा, "होता क्या? उसने मान लिया। अभी उसके भाई और बाप रुपये लेकर आ रहे है। कल उसने रुपये अपने भाई को ले जाकर दे दिये थे।

कुछ देर मे सोहन अपने शरीर पर पड़े हुए बेंत के निशानो को चादर मे छिपाए हुए आया और दरवाजे की ड्योढी पर किवाड का टेका लगाकर बैठ गया। भाई ने दो नोट दस दस के मेज पर रख दिए।

सोहन का बाप सुरेश के पैरो पर गिरकर, रोकर कहने लगा, "आप हमारे मा बाप है। हम पर दया करो। बच्चा था, कसूर हो गया। अब उसका नाम चोरी मे मत लिखाओ, मेरा बुढापा डूब जायेगा। कोई मुफ्त मे भी उसे नौकर नही रखेगा।

राकेश ने सुरेश से कहा, 'अब इसे जाने दो, नाम मत लिखवाओ।"

सुरेश न बिगडकर कहा, 'यह भी कोई घर का खेल है ! हवालात मे बद करने का मैं क्या सबूत दूगा ? यह तो लिखना ही पडेगा कि इसने रुपये चुराये थे। अब सजा कुछ नही दे रहे, यह क्या कम बात है !"

वीरा और राकेश की इच्छा के विरुद्ध ही सोहन का नाम चोरो की लिस्ट मे लिखा गया। रिपोट पर अपने अगूठे का निशान लगाकर सोहन अपने बाप और भाई का सहारा लेकर खडा हुआ और वहा से चला गया। चलते समय उसकी आखो मे आसू देखकर वीरा की आखो मे भी आसू आ गये। वीरा का गाद का बच्चा नौकर को जाता देख उसकी ओर झुका और उसके न लेने पर रोने लगा। सेठ जी का लडका उसे बाजार ले जाने का आश्वासन देकर वहा से ले गया।

कई महीने बीत गय, वीरा को कोइ अच्छा नौकर न मिला। बेबी का आज जन्मदिन था। कितने ही मेहमानो को खाने का निमत्रण दिया गया था। आज वीरा को साहन की बडी याद आ रही थी, वह होता तो दावत का सारा काम सम्हाल लेता। खाना बनाने मे बडा होशियार था। पर आज तो सारा काम वीरा के ऊपर ही आ गया था। वह बडी परेशान थी। मेहमान आने वाले थे। एकदम वीरा को ध्यान आया कि अभी बाजार से दही और रबडी मगाई ही नही। यह सोच कर उसने कढाई चूल्हे से उतारी और चाबी लेकर रुपये लेने कमरे की ओर लपकी। लेकिन वह दरवाजे पर ही ठिठक गइ। उसने देखा सेठ जी का लडका, मेज की दराज खोले खडा है और उसक पस मे से रुपये निकाल रहा है। वीरा को देखते ही उसके हाथ से पस छूट गया। रुपये-पसे कमर म बिखर गए।

वीरा के मुह से एकदम निकल गया, 'ओह, तो चोर तुम हो ! बेचारा सोहन तो झूठमूठ ही मारा गया।

सेठ जी का लडका वीरा के परो पर गिरकर रोने लगा, रोते रोते उसने कहा, "हा, वे रुपये भी मैंने ही लिए थे। पिताजी से मत

कहना, नही तो वह मुझे जान से मार डालेंगे।"

बीरा की आखो के सामने सोहन का बेंतो से उभड़ा हुआ शरीर उभर आया। 'बीबी जी मैंन रुपये नही लिए। साहन के ये शब्द उसके कानो म गूज उठे। ओफ, उसका बूढ़ा बाप उस दिन किस तरह गिड-गिडा रहा था। बीरा के हृदय मे एक गहरी टीस उठी। वह पृथ्वी पर बिखरे रुपयो-पसा और परो के पास रोते हुए सेठ जी के लड़के को अवाक देखती रही।

कुछ सम्हलकर बीरा ने आश्चय से सेठ जी के लडके से पूछा, 'तुझे रुपय की क्या कमी है ? तू रुपय क्या चुराता है ?"

उसने रोत हुए कहा "अब नही चुराऊगा।"

बीरा ने झुझलाकर कहा, 'अब तो नही चुरायेगा, पर अब तक क्यो चुराता था ? उन बीस रुपयो का तूने क्या किया ?"

जुआ खेला था।"

"ओ तो तू जुआ भी खेलता है ?"

'हा, पिताजी भी तो खेलत हैं।' उसने हकलात हुए कहा।

'तो फिर, तू पिताजी से रुपये क्यो नही लेता ?" बीरा ने चिढकर कहा।

"मुझे वह रुपये नही दते। 'कहत ह जुआ खेलना बुरा होता है। अपने आप ता रातभर अपने दास्तो मे खलत ह।"

'तो, तू किसके साथ खेलता है ?"

"नौकरा के साथ।

बीरा को मेहमाना के आने का ध्यान आया। उसने जमीन पर से कुछ रुपये उठाये और दरवाजे से वह निकलने को हुई कि लडका उसका पल्ला पकडकर रोता-राता बोला 'जुआ खेलने की बात भी पिताजी से मत कहना। मैं अब कभी भी नही खेलूगा।

बीरा को उसकी भोली भाली आखो मे सच्चाई का आभास मिला। उसने कहा, "अच्छा रो मत, नही कहूगी, पर अगर फिर कभी एक पसा भी उठाते देखा तो सब अगली पिछली बात कह दूगी।" यह कहकर बीरा चली गई।

# उसकी याद मे

"देवियो और सज्जनो ! मुझे यह घोषणा करते हुए बडी प्रसन्नता होती है कि आज की 'फसी ड्रेस प्रतियोगिता' मे मिस चित्रा को सबसे श्रेष्ठ स्थान मिला है। मैं उनसे प्रार्थना करता हू कि वह मच पर आकर अपना पुरस्कार ग्रहण करें।"

तालियो की गडगडाहट से हाल गूज उठा और आश्चर्य और खुशी मे डूबी चित्रा अनायास ही उठकर धडकते हुए हृदय से मच की ओर चल दी।

उसके मच पर पहुचते ही एक बार फिर तालियो की गडगडाहट हुई और जिस समय इलाहाबाद के चीफ जस्टिस ने अपनी कुर्सी पर से उठकर उससे हाथ मिलाया और चादी का नटराज पुरस्कार-स्वरूप भेंट किया उस समय 'चियर्स चित्रा' की पुकार से हाल गूज उठा।

चित्रा के लिए यह सबसे बडी खुशी का दिन था। घर लौटते ही वह दौडी दौडी कमरे मे ड्रेसिंग टेबल के सामने जा खडी हुई—अपना वह रूप निहारने के लिए जिसने उसे अपने नगर मे प्रसिद्धि के शिखर पर पहुचा दिया था।

शीशे के सामने खडे होते ही चित्रा चिहुक पडी। अनायास ही आम की फाक जैसी दो बडी बडी शर्मीली आखें और गुलाब की पखुडियो जैसे मुस्कराते होठ नाच उठे। चित्रा जैसे उन्हे एकटक देखती रह गई

और उसकी आखो म आसू छलछला आय। वह वही मूढे पर बैठ गई। एक महीने पहल का दश्य चलचित्र की भाति उसकी आखो के सामने घूमने लगा।

चित्रा को 'फसी ड्रेस प्रतियोगिता' मे भाग लेना था। बहुत सोचन पर भी यह निश्चित नही कर पा रही थी कि कैसा वेश बनाए। वह इसी उधेडबुन मे थी कि एकाएक किसी के पायला की जनकार सुनाई दी। उसने देखा कि होरी (किसान) की नई नवेली बहू रग बिरगे कपडे पहने मुसकराती, इठलाती पानी भरने चली आ रही है। वह राजस्थान की ही रहन वाली थी और उसके गोरे गार अगा पर रगीन लहगा और दुपट्टा बहुत ही फब रहा था। एकाएक वह खुशी से नाच उठी और दौडी दौडी मा के पास जाकर बोली—"मा, मा मैं राजस्थानी ड्रेस पहनकर जाऊगी। हारी की बहू से कपडे और जेवर माग लूगी। देखा न, वह कितनी सुदर लग रही ह।"

दुत पगली! कही किसी क पहरे हुए कपडे और जेवर पहने जाते है! मैं तुझे उसके कपड नही पहनने दूगी।"

मा ने समझाया, लेकिन चित्रा कब मानन वाली थी, बोली—"मा, उसके पास एक जाडा तो बिलकुल नया रखा है, एक दिन उसने मुझे दिखाया था।

इस बीच हारी की बहू न आगन का नल खोल लिया था और वह अपने घडे मे पानी भरन लगी थी। चित्रा दौडकर उसके पास पहुची। चित्रा को देखकर उसकी बडी बडी कजरारी और शर्मीली आखा म एक चमक सी आ गई और उसके होठ खुशी से खिल गय।

"बीबी, अच्छी ता हो?' उसने मुसकराकर पूछा।

"हा, मैं तो अच्छी हू, पर तू इतन दिना स पानी भरने क्या नही आई? मुझे ता तुझसे बडा जरूरी काम है।

"दो-तीन दिन के लिए मैं पीहर चली गई थी।" उसने हसकर कहा। "मुझसे तुम्हारा एसा क्या जरूरी काम आ पडा?"

'परसो हमार कालिज मे फसी ड्रेस शा ह सब लडकिया तरह-

तरह के वेश बनाकर आयेंगी—कोई सपेरे का तो कोइ बजारिन का। मैंने सोचा है मैं तेरा वेश बनाकर जाऊं।"

'तुम मेरा भेस बनाकर जाओगी? रहने भी दो बीवी!" होरी की बहू बोली और खिलखिलाकर हंस पड़ी।

'हां, तू मुझे अपने सब जेवर और वह नया वाला कपड़ा का जोड़ा ला दे। खराब नहीं करूंगी, ज्यों-का त्यों लौटा दूंगी।"

जेवर का नाम सुनकर होरी की बहू का कमल जैसा खिला चेहरा मुरझा सा गया। उसने संकोच भरे स्वर में कहा, 'बीवी, गहने तो मेरे पास और नहीं हैं जो पहन रही हूं, वे ही है।"

चित्रा ने आश्चर्य से कहा— शादी के बाद जब तू हमारे घर आई थी तब तो तूने बहुत सारे जेवर पहन रखे थे। और भी तेरा मांगे का था। तूने कहा था, सब जेवर तुझे शादी में मिले हैं, तेरे ही है।"

'हां वे सब थे तो मेरे ही।'

'पर अब उनका क्या हुआ?'

'वे गहने रहन रख दिये हैं।'

रहन रख दिये है? क्या मतलब?" आश्चर्य से चित्रा ने कहा।

उन गहनों को रेहन रखकर हमने दो सौ रुपया उधार लिया है। जब हम रुपये लौटा देंगे, तब गहने वापिस मिल जायेंगे।"

'दो सौ रुपयों के बदले तुमने इतने सारे गहने दे दिये?"

महाजन जितना रुपया देता है, उससे चौगुनी चीज रहन रखवा लेता है बीवी!

'तो जेवर देने की तुझे ऐसी क्या जरूरत पड़ी थी?"

'पिछले फागुन में जब हमारा बैल मरा था, तब रहन रखने पड़े थे। बैल मरने में इन्हें तो बड़ा ही दुख हुआ था, दो दिन रोटी भी नहीं खाई थी इन्होंने। उसके पहले कई दिन से बड़े खुश थे, खेत में गेहूं की फसल लहरा रही थी। ऊंची, उठान भरी भरी बालें, मोटे मोटे दाने देख देखकर सभी को खुशी होती थी। सोचते थे, मेरी शादी में लिया हुआ कर्जा तो चुक ही जायेगा, इस बार शायद कुछ बच भी जाय। सच मानो बीबी ऐसी फसल मैंने अपनी याद में कभी नहीं देखी थी।

शादी के साल ही इतनी अच्छी फसल हो रही थी यह देखकर यह तो बहुत खुश थे। तुम्हें याद होगा तभी एक दिन बडे जोर की आधी आई और मेह बरसा। थोडी देर में बडे बडे ओले पडने लगे। हमारा तो खेत-का-खेत बिछ गया। उसी रात न जाने कैसे बैल ने रस्सी तुडा ली और बहुत सारे गीले गेहू खा लिए। सवेरे देखा तो वह खेत मे पडा मिला, पेट अफरा हुआ था। बहुत दवा-दारू की पर बैल बचा नही। बैल के मरने से तो हमारा सारा काम ही चौपट हो गया। यह बडे उदास रहने लगे। एक दिन जिद करके मैंने अपने गहने दिये तब नया बैल खरीदा गया।'

फिर मुसकराकर बोली—'इस बार हमारी मक्का की फसल बडी अच्छी हो रही है पिछले दिनो जो मेह बरसा तो यह कहने लगे—मेह क्या, यह तो चादी बरस रही है। कह रहे थे इस बार सब गहने छुडा लेंगे।

बादलो मे जैसे बिजली कौंधी, खिलखिलाते हुए होठो के बीच होरी की बहू के मोती जैसे दात चमक उठे, वह बोली, 'बीबी तुम मेरे साथ चलो, मैं कपडे दे दू—गहने अपनी भौजाई से लाकर मैं तुम्हें कल दे दूगी।

इस बीच घडा भर चुका था और पानी तेजी से वह रहा था। बातचीत में उस ओर किसी का ध्यान नही गया था। होरी की बहू ने घडा सिर पर रखा और आगन के जिस पिछले दरवाजे से वह आई थी उसी से बाहर निकल गई। उसकी पायलो की रुनझुन फिर मुखर हो उठी और धीरे धीरे लुप्त हो गई।

होरी का घर चित्रा के बगले के पीछे ही थोडी दूर पर खेतो के पार था। चित्रा को वहा जाने की मनाई नही थी। मा से कहकर वह भागती हुई वहा पहुच गई।

बगले की पिछली दीवार को पार करते ही खेत शुरू हो जाते थे। खेत मे कोई जानवर न घुस जाये, इसलिए होरी ने अपने खेत की मेड पर एक बडा सा फाटक लगा रखा था। होरी की बहू के वहा पहुचने-

पहुचत चित्रा भी दौडती हुई जा पहुची । काटा के बने हुए उस फाटक को हारी की वहू ने एक हाथ से हटा दिया और चित्रा के अदर आने पर बद कर दिया । फाटक के खोलने और बद करने म उसका घडा सिर पर हिला भी नही न उसका पानी ही छलका, यह देखकर चित्रा को वडा आश्चय हुआ ।

हारी के खेत म मक्का के वडे वडे पौधे खडे थे । एक एक मे कई कइ भुटटे लगे हुए थे । हरे पीले भुटटा म मे गहरे वादामी रग के चम-कीले वाल लटकते हुए वडे ही सुदर लग रह थे ।

होरी की वहू ने कहा—"देखा, इस वार कितन भुटटे लग है । सब दाना स भरे हैं । दाने भी वडे मोटे है ।'

'हा भुटटे खूब लवे लव और मोटे है । एक एक पेड म पाच पाच छ छ भुटटे लग जाते है यह ता मैंने आज ही देखा था । हरएक पत्ते की जड मे एक भुट्टा निकल रहा है ।'

जिस रास्ते पर होरी की बहू सिर पर घडा रखे बखटके वातें करती चली जा रही थी, उम पर चित्रा को बहुत सभल सभलकर पर रखने पड रह थे ।

होरी के खेत मे चित्रा पहले भी कई वार आई थी । कुए की मेड पर वठकर उसन हारी की बहू के हाथ के सिके हुए भुटटे भी खाय थे, पर उसकी झोपडी के भीतर वह पहल कभी नही घुसी थी । आज जब वह झोपडी के भीतर गई तब वह उसे बहुत अच्छी लगी । भीतर से वह वडी साफ सुथरी थी । एक कोने मे चक्की रखी थी । उसके पास टोकरी म मक्का रखी थी । दूसर कोने म दो वोरिया नाज से भरी खडी थी । एक काने म कुछ टोकरिया और वोरिया चिनी हुई रखी थी । एक चटाई जमीन पर विछी हुइ थी । दीवार पर कुछ कलेंडर लटक रहे थे ।

चित्रा ने कहा 'तुम्हारा घर वडा अच्छा है ।"

होरी की वहू मुस्करा दी वाली, "हमारा घर तुम्हें अच्छा लगा ? तुम्हें विठाने तक को तो हमारे पास कुछ है नही ।'

चित्रा ने चटाई की आर इशारा करके कहा—"क्यो, वह चटाई

बिछ तो रही है।' यह कहकर चित्रा हसी और बोरिया देखने लगी। एक मे मक्का थी, दूसरी का मुह सिला हुआ था। चित्रा ने कहा "इस बोरी मे क्या है ? इसका मुह क्या सी रखा है ?"

"इसमे गहू है।'

"फिर इसे सी क्यो रखा है ?"

"यह हमने बीज के लिए रखा है।"

"तो क्या तुम आजकल केवल मक्का की रोटिया ही खाती हो ?"

"हा ! मक्का म क्या बुराई है ?'

'खाली मक्का खाने से तुम्हारे पेट म दद नही होता ?"

यह सुनकर होरी की बहू हसी, बोली— हमारा तो खून ही मक्का से बना है, हमार दद क्यो होगा ?"

'तुम सोते कहा हो ?"

होरी की बहू ने चटाई की ओर इशारा कर दिया।

चित्रा की आखे आश्चय से फटी की फटी रह गइ। वह बोली— 'क्या जमीन पर सोते हो ? आजकल तो चारो तरफ इतने साप निकल रहे है।"

'जब तक किसी की मौत ही न आई हो, साप क्यो काटने लगा ? मौत आ गई हो तो खाट पर भी काट लेगा।'

'फिर भी सावधानी से तो रहना ही चाहिए।'

बीबी, हम तो भगवान के भरोसे रहते है। उसने ही जन्म दिया है, वह जब चाहेगा बुला लेगा।"

भगवान पर उसके इतने अटल विश्वास को देखकर चित्रा को आश्चय हुआ। इस बीच होरी की बहू ने एक छोटा सा बक्स जो उसने कई बोरियो और टोकरियो के बीच छिपा रखा था, निकाल लिया था। उसमे उसके विवाह के कपडे थे। उसके विवाह को अभी डेढ वष ही हुआ था। सब कपडे बिलकुल नये जैसे लग रहे थे।

"तू इन्हे कभी पहनती नही ?' चित्रा ने पूछा।

"जब किसी का ब्याह होगा, तब पहनूगी।' फिर हसकर बोली— "तुम्हारे ब्याह मे पहनकर आऊगी।'

'हट मैं ब्याह कराऊगी ही नही।" चित्रा ने कहा। "अच्छा ला, कपडे मुझे दे दे। जेवर मुझे कल शाम तक ला देना।"

'थोडा बैठो तो एक ताजा भुट्टा तोडकर सेक लाऊ!"

"नही, मुझे जल्दी कालिज जाना है"—कहकर कपडे लेकर वह वहा से चल दी। रास्ते मे मन ही मन वह होरी की बहू और अपनी पडोसिन की तुलना करती रही। होरी की बहू ने बडी खुशी से, जिद करके, अपना सारा जेवर पति को रहन रखने के लिए दे दिया था, और उसकी पढी लिखी पडोसिन का आये दिन अपने पति से पैसे का लेकर झगडा चलता रहता था। कल पच्चीस रुपये पर कितना झगडा हुआ था। वह कह रही थी—'मुझ से जो पच्चीस रुपये उधार लिये थे वह क्या नही देने हो?' पति कह रहा था—"अगले महीने मे दे दूगा, इस महीने मे इक्यावन रुपये देने है।' 'नही मुझे अभी चाहिए,' और तब उसने जब तक रुपये ले नही लिए, पति को दफ्तर नही जाने दिया।

अगले दिन तीसरे पहर होरी की बहू जब जेवर देने आई तब घटा घिरी हुई थी और बारीक-बारीक बूदें पड रही थी।

चित्रा ने कहा—"क्या, यह मेह बरस रहा है या चादी?'

होरी की बहू ने चिंतित स्वर मे कहा, 'न बीबी, यह तो चादी नही बरस रही। अब बरसेगा तो फसल खराब हो जायगी।

परन्तु पानी बरसना जो आरभ हुआ तो ऐसा लगा कि कभी थमेगा ही नही। रात भर बरसता रहा, और बीच-बीच मे तेज आधी चलती रही। पौ फटने के समय कुछ रुका-सा, लेकिन फिर और भी तेजी के साथ बरसने लगा। वर्षा और आधी दोनो का वेग बराबर बढता जा रहा था। वर्षा कुछ कम होती तो आधी-तूफान का शोर गुल बढ जाता और आधी का वेग कुछ धीमा पडता तो वर्षा तेज हो जाती। प्रलय का सा दृश्य था। तार, टेलीफोन, बिजली आदि सब की व्यवस्था टूट गई थी। घर से बाहर निकलने का किसी को साहस नही था। चित्रा का घर तो नगर की सीमा पर था। वहा वैसे भी नगर के

समाचार कम पहुच पाते थे, पर चारा ओर बडे बडे वक्षो के टूटकर गिरने, झोपडियो के छप्परो के उडने और आसपास के नालो के तेजी से बहने की आवाजें बराबर आ रही थी।

चौबीस घटे की अनवरत वर्षा के बाद उसका वेग कुछ थमा। शाम तक सडकें और पगडडिया पानी से कुछ उभरने लगी। नालियो मे बहते पानी का जोर कुछ कम हुआ। दूर सडको पर और खेतो म इक्के दुक्के आदमी चलत फिरते दिखाई दिये।

इन चौबीस घटो मे चित्रा के सामने लगातार होरी की बहू की मुरझाई हुई शक्ल और उसका मक्का का लहलहाता हुआ खेत घूमता रहा और कानो मे गूजते रहे होरी की बहू के वे शब्द— 'यह कह रहे थे कि इस बार मक्का की फसल भी बडी अच्छी हो रही है ये मेरे सब गहने छुडा देंग।" और वह ईश्वर मे निरतर यही प्राथना करती रही —"हे भगवान ! होरी की बहू को तो तुम म इतना अटल विश्वास है, फिर, तुम उसे इतना दु ख दे रहे हो ? इस वर्षा से वह बहुत दु खी हो रही होगी।" पर ईश्वर न कब किसकी सुनी है ? रात को पा का जोर फिर बढ गया।

तीसरे दिन दोपहर पानी का वेग फिर कम हुआ, पर आस पास के खेता मे और निचाई में बने मकानो में खलबली फैल गई। नदी में पानी बढने लगा था। बाढ आने का डर था, इस कारण लाग बाग अपना अपना सामान सिरो पर रखकर नगर के ऊचे स्थानो पर ठहरन के लिए चल पडे थे। उस वर्षा मे भी एक मेला सा लग गया था।

चित्रा के घर भी नीचे के कमरो का सामान ऊपर के कमरो मे पहुचाया जाने लगा। सैकडा की भीड नदी की ओर यह देखने के लिए जाने लगी कि नदी का पानी कहा तक चढ आया है। खतरे की अतिम सूचना देने के लिए नगरपालिका की ओर से तोप दागी जा चुकी थी। जिन आशावादी व्यक्तियों का इरादा घर पर रहकर ही इस बाढ से मुकाबिला करने का था, वे सामान लेकर जात हुए व्यक्तिया का मजाक उडा रहे थे और अपनी बहादुरी के लिए कह रहे थे—"दो बरस पहले भी ऐसे ही खतरे की तोप चली थी, तब भी खेत के खेत खाली हो गये

थे, पर हम तो अपने मकान मे ही डटे रहे, नीचे के खेतो मे दो दो फुट पानी आकर रह गया। बाढ आयेगी तब देखेंगे।"

चित्रा ने छत पर चढकर देखा, होरी का खेत थोडा ऊचाई पर था। इससे उसे कुछ सतोष मिला।

नदी म पानी के बहने की आवाज बडे जोरो से आ रही थी। अब भी हल्की सी बूदाबादी हो रही थी। चित्रा और उसके माता पिता छतरिया लेकर तिमजले पर पहुच गये और वहा से नदी का दृश्य देखने लगे। मकान से तीन चार फर्लांग के अतर पर नदी थी। नदी का पाट इस समय बहुत चौडा हो गया था। इनके मकान की चहारदीवारी के पास के नाले और नदी मे कोई अतर नही रह गया था—बीच के खेत उन दोनो के मिले जुले पानी मे डूब गये थे, पर बहाव की दिशा दूसरी थी। खेतो को चीरती हुई नदी की वह धारा अपने साथ बडे-बडे कद्दू और छोटे छोटे पेडो को बहाये लिये जा रही थी। बहते हुए कद्दू दूर से आदमियो के सिरो जैसे दिखाई दे रहे थे। बडी देर तक ये लोग खडे-खडे नदी का वह भयानक दृश्य देखते रहे।

एकाएक जोर का शोर सुनाई दिया—"पाल टूट गई, पाल टूट गई। चारो ओर भगदड मच गई।

यह खतरा एक दूसरी ही दिशा से और बडे अप्रत्याशित रूप से उठ खडा हुआ था। शहर से कुछ दूर एक तालाब था जिसमे आस पास के पहाडी नालो का पानी इकटठा होता था। तालाब बहुत गहरा और पुराना था और उस पर पुराने जमाने की एक पक्की पाल बधी हुई थी, जिसके टूटने की कोई कल्पना भी नही कर सकता था। पर, तालाब मे इतना पानी इकटठा हो गया था कि पाल जोर न सह सकी, और उसमे बडी बडी दरारें पड गइ जिनमे से पानी तेजी से नगर की ओर बह चला। दूसरी ओर नगर को रेल के स्टेशन से जोडने वाले नदी के दोनो पुलो के टूट जाने से नगर का बाहर की दुनिया से सपर्क ही नही रह गया।

चित्रा की दृष्टि बराबर होरी के खेत और झोपडी की ओर थी।

तभी उसने दखा कि होरी सिर पर एक बक्स रखे उसके घर की आर भाग रहा है और पीछे पीछे होरी की बहू बैलो की रस्सी पकडे उसका साथ देने का प्रयत्न कर रही है। पानी का बहाव बढता जा रहा था। तभी पानी का एक जोर का झोका आया और बैलो और पानी के धक्के से अपने को सभाल न पाने के कारण—होरी की बहू गिर गई। बैलो की रस्सी उसके हाथ से छूट गई। रस्सी के साथ साथ वह भी पानी म बहने लगी।

चित्रा ने एक जोर की चीख मारी और आखें बद कर ली लेकिन यह देखने के लिए कि होरी की बहू अब कहा है उसने तुरत ही आखें खाल दी।

इस बीच होरी सिर का बक्सा फेंक कर पत्नी की ओर दौड पडा था। पानी के तज बहाव ने उसे भी गिरा दिया। वह तैरना जानता था—वह तैरकर पत्नी को पकडने की चेष्टा कर रहा था। लेकिन तभी पानी का एक बहुत ही तज बहाव आया और दोनो को अपने साथ बहाकर ले गया।

इस हृदयद्रावक भयकर दृश्य को देखकर चित्रा चीख उठी, वह गिरत गिरते बची। माता पिता ने आकर उसे सभाला लेकिन जो कुछ भी होरी और उसकी बहू पर बीता था उससे वे लोग भी बडे दुखी थे। उस विनाशकारी दश्य को देखकर सबके हृदय दुख से भरे हुए थे। चित्रा के घर के नीचे के हिस्से मे पानी भर आया था, वैसे खाने का सब सामान पहले ही ऊपर पहुचा दिया था। पर उस दिन किसी का खाना बनाने का मन नही किया। बिजली का सबध एक दिन पहले ही टूट चुका था। मिट्टी के तेल की लालटेन और मोमबत्ती जला जलाकर सब अपना आवश्यक काम पूरा करके जहा जिस स्थान मिला पड गये।

सबरे प्रकृति का वह काला परदा हटा। पानी के बहाव म अब काफी कमी आ गई थी। पर मकान के चारो ओर और खेतो मे पानी भरा हुआ था। उस घर के सामने जितनी झापडिया थी वे सब पानी के क्रूर थपेडा से छिन्न भिन्न हा चुकी थी। होरी का खेत जिस स्थान पर था

—वहा उसके कुए की पक्की मौड पर लगी केवल दो बल्लिया दिखाई दे रही थी।

इन दश्यो म खोई चित्रा न जान कब तक मूढे पर ही बैठी रही। देर हो जाने पर भी जब वह खाने के लिए नही आई तब उसकी मा उसके कमरे म गई और उसकी सूजी हुई आखो को देखकर वह उसक हृदय की वेदना को समझ गई। आज इन्होने तो जिद्द करके चित्रा को व कपडे पहनने को कहा था।

मा चित्रा को समझाती रही। थोडी देर मे उसके पिता भी वहा आ पहुचे। उन्ह देखकर चित्रा अचानक गभीर हो गई और रोते रोते ही बोली—'पापा, आप तो म्यूजियम कमटी के सदस्य है न! आप मेरी एक बात पूरी कर सकते हैं?

क्यो नही! तू क्या चाहती है, चित्रा?'

'मैं चाहती हू आप होरी की बहू जैसी एक सुदर मूर्ति बनवायें और उस य जेवर-कपडे पहनाकर यहा म्यूजियम म रखवा दीजिए जिससे ये अमर हो जाए।'

पिता अपनी पुत्री की इस भावनामयी सूझ पर मुग्ध हो गये। आप आज भी इन्द्रपुर के सग्रहालय के 'राजस्थान-कक्ष' मे एक सगमरमर की मूर्ति देख सकते हैं—जिसका सरल सहज सौदय आपको आकर्षित किए विना नही रह सकता। सग्रहालय के क्यूरेटर आने वाले यात्रियो को इस मूर्ति की अमर कहानी जरूर सुनाते हैं और शायद ही कोई आख हो जो रोये बिना वहा से हटी हो।

# सोना और रूपा

ट्रेन को आता देखकर सब अपना-अपना सामान उठाकर दौड़े। ट्रेन के रुकते ही धक्कम धक्का आरभ हो गया। जिन्हे उतरना था वे उतरने की जल्दी मे थे, जिन्हे चढना था वे किसी तरह अपने सामान के साथ उसमे घुसना चाहते थे। उतरने वाले आने वालो को अपने जोर से धकेलकर बुरी भली कहते हुए उतर पडे। चढने वालो ने भी हिम्मत नहीं हारी। जिनमे शक्ति थी वे चढ ही गए। जो निबल थे, जिनम अपने सिर का बोझा सभालने का दम ही नही था, वे उस भीड म कैसे चढ पाते ? वे प्लेटफाम पर कम भर डिब्बो की तलाश मे आगे की ओर दौडे।

यह दशा थी दूसरे दर्जे की। पहले दर्जे मे दशा इससे कुछ सुधरी हुई थी। कुली अपने सिरा पर सामान रखकर डिब्बो म घुस गए थे, और अपनी सवारियो को चढाने और जगह दिलाने म सहायता कर रहे थे।

फस्ट कलास मे जाने वाले वडे आराम के साथ अपने डिब्बो के बाहर खडे हुए अपने मित्रो के साथ बातचीत मे मशगूल थे। उन्ह गाडी मे चढने की कोई जल्दी नही थी, जैसे टेन उन्ही की हो।

एक देश म रहने वाले और एक ही ट्रेन से जाने वाले यात्रिया म कितना अतर है ! रेखा जो अपने एक सबधी को लेन स्टेशन आई थी, इसी विषय म सोच रही थी। एक ओर तो उसके सामने सिर पर

भारी गठरी रखे   वह  बुढिया थी, जिसे  किसी ने ट्रेन मे चढने नही दिया था और दूसरी ओर कलाई पर  बग लटकाए  हुए तितलियो की तरह प्लेटफाम पर फुदकती हुई  और अपनी वेशभूषा से दूसरो के मना का आर्कापित करती हुई आधुनिकाए ।

रेखा का ध्यान उधर से खिचकर अपने पास ही खडी हुई  दो लड-कियो की ओर गया, जो सामान के  एक  बडे  ढेर  के पास खडी थी। सामान काफी कीमती मालूम होता था,  इसलिए  उसके पास उन लड किया को—जिनकी गरीबी उनके मुह  और कपडा से टपक रही थी—देखकर उसे आश्चय हुआ । उनकी भोली आकृति  पर उसे दया आई। दस बारह वष के लगभग उनकी आयु होगी ।  दोनो  बहनें जान पडती थी ।

रेखा को उनके विषय मे सोचने की अधिक आवश्यक्ता नही पडी। ऊपा, जिसे वह स्टेशन पर लेने आई थी, सामने  के  डिब्बे  से उतरती हुई दिखाई दी । उसकी गोदी मे बच्चा था, एक लडकी  दौडकर उसके पास गई और गोद के बच्चे को ले लिया ।  रेखा समझ गई कि ये लड-किया उसके  साथ है ।

ताग म बठते हुए रेखा ने ऊपा से पूछा—"य  लडकिया तुम्हे कहा स मिल गइ ?

ऊपा ने कहा, "क्या पूछती हो  भाभी, यह भी एक किस्सा है । घर चलकर बताऊगी ।"

घर पहुचकर रेखा तो इन लडकियो के काम की फुर्ती और होशि-यारी देखकर दग रह गई ।

छोटे बच्चे को पाखाना कराना, दूध गरम करना, कपडे धोना आदि सारे काम व दोनो लडकिया भाग भागकर कर  रही थी ।  तीन  और बडे बच्चे थे । सब का काम उन्होने सभाल रखा था । ऊपा तो आराम से आकर पलग पर लेट गई थी ।

बच्चो का खाना खिला  देने  के  बाद जब रेखा और ऊपा खाना खान बैठी तब फिर रेखा न ऊपा से पूछा, 'हा, बताआ ता ये लडकिया तुम्ह कहा से मिली ?"

ऊषा न हसकर कहा, "आ हो, तुम्ह तो चन ही नहीं पड रहा है। अच्छा सुनो—पिछली गर्मिया म जब मैं बीमार थी, तब बीमारी के साथ एक बडी मुसीबत यह और आ गई कि नौकर भी चला गया। बतन साफ करने वाली भी छोडकर बैठ गई। बस मैं बडी परेशान थी। एक दिन जब मैं अस्पताल जा रही थी तब ये दोना मेरे तागे के पीछे पसा मांगती हुइ भागी। एक बार तो मैंने मना कर दिया, तागा आग चल गया, पर भीड क कारण तांगा आगे जाकर कुछ रुका। ये दोना फिर पास आ गइ और तागे पर लटक गइ। मैंन कहा, 'ऐसे पसा नही मिलता, नौकरी करनी हो तो चलो, पेट भरकर खाना मिलेगा।' बस इतना मेरा कहना था कि ये तांगे म बैठने को तयार हो गईं। मैंने कहा, 'बस, एक चलो। तो कहने लगी—'नही, हम दोनो ही चलेंगी, हम दोना बहनें हैं और हमारे कोई नही है।' उस समय तो मुझे जरूरत थी, मैंने दोना को ही बिठा लिया। तब से इन दोना ने सारे घर का और बच्चो का काम सभाल रखा है। बडी तो रोटी भी बना लेती है, पर मैं तो अब एक को रखना चाहती हू। मुन्ना भी बडा हो गया है। चाहती हू, छोटी चली जाए पर जाती नही। कहती है दानो साथ ही रहेंगी। बडी को तो मैं हटाना नही चाहती। उसने तो सारे घर का और बच्चा का काम सभाल रखा है, पर छाटी को रखना अब बेकार है।"

रेखा ने कहा, "छाटी को भी रहने दो। कहा जायगी वह अकेली।'

ऊषा ने हसकर उत्तर दिया, "भाभी, राशन का जमाना है। दो दो का खिलाना भी आसान नही है।"

बाता ही बातो म दोना खाना खा चुकी थी, ऊषा ने थाली म जा रोटी, चावल आदि बचाकर और कुछ जो बच्चो की प्लेटो मे था, समेटकर उन दोना लडकियो को बुलाकर दे दिया।"

रखा न कहा, "यह क्यो देती हो ?

ऊषा न धीरे स कहा, 'चुप भी रहो भाभी, मैं तो ऐसे ही इनके खाने का काम चला देती हू।"

दोनो बहनें उसी जूठन को खाने बैठ गइ। रेखा ने कुछ और चीजें भी—खीर, हलुआ आदि लाकर उन्हें दे दिया जिससे व बडी खुश हुइ। सब काम से निबट कर दोनो ने दोपहर-भर ऊपा के पर दबाए और बच्चो का काम सभाला। रेखा उनके काम को देखकर सोचती रही कि मुझे भी कोई ऐसा नौकर मिल जाए तो कितना आराम रहे। बडे नौकरो से तो बधा हुआ काम ही करा पाते हैं।

बडी का नाम सोना था, छोटी का रूपा। दोनो ही सुदर थी। बिना तेल के बाला और फटे कपडो मे भी वे आकपक दिखाई देती थी। अगले दिन सवेरे रूपा के हाथ स दूध की शीशी छूट पडी। पत्थर से टकराते ही दा टुकडे हो गए। दोनो बहनो के रग उड गये। छोटी काप उठी। ऊपा शीशी टूटने की आवाज सुनकर रसोई मे आई और पैर से चप्पल निकालकर रूपा को मारने लगी। रूपा जमीन पर गिर गई, पर ऊपा का मारना नही रुका। सोना भी रोने लगी। रसोई मे यह हगामा सुनकर रेखा अपने कमरे से दौडकर आई। उसका दिल धक धक करने लगा। कितना मारा है—इसका अनुमान उसे हो गया। उसने ऊपा के हाथ से चप्पल छीन ली, 'बस अब छाड दा और कितना मारोगी ? इतना मारना नही चाहिए।"

ऊपा जो क्रोध मे लाल हो रही थी, झुझलाकर वोली—"क्या करू, इसने मेरा नाक म दम कर रखा है। कहती हू, चली जा तो जाती नही। आज यह तोडा कल वह तोडा। मेरा बस चले तो इसे जान से ही मार डालू।

रेखा ने ऊपा का यह रूप पहले कभी नही देखा था। एक भयानक - कठोरता उसके चेहरे पर थी। क्रोध से अभी तक वह काप रही थी। ऊपर से इतनी सहृदय और कोमल दीखने वाली ऊपा का यह रूप देख कर रेखा को आश्चय हुआ। उसने ऊपा से कहा, "तुम्हे तो बडा गुस्सा आता है।

ऊपा ने कुछ चिढकर दु ख और परेशानी के साथ कहा—'बताओ, मुन्न को दूध कैसे पिलाऊगी ? वह तो रो रोकर आधा हो जायेगा, बिना बोतल के वह एक बूद भी दूध नहीं पियेगा।"

रेखा ने सात्वना देते हुए कहा "अभी दूसरी बोतल मगाये देती हू, सामा ही दुकान पर मिलती है।"

तीन चार दिन बाद ऊषा चली गई। भाई की शादी के लिए कुछ सामान खरीदन आई थी। जाते समय रेखा स भी शादी मे आने का वायदा करवा गई। ऊषा के जाने के बाद रेखा को ऊषा और उसके बच्चो का इतना ध्यान नही आया जितना उन दोनो बहनो का। उन का भाग-भागकर काम करना उसके सामने घूमता रहता और उस दिन की रूपा की पिटाई का ध्यान करके तो उसके रोगटे खडे हो जाते। इसलिए उसने यह निश्चय कर लिया कि विवाह से जब लौटूगी, तब छोटी को समझाकर अपने साथ ले आऊगी।

विवाह मे वह बारात चढने के समय पहुची क्योकि उसके पति को ज्यादा छुट्टी नही मिल सकी। तागा रुकते ही वे दोनो बहनें दौडकर आइ। आज व दोनो बहुत खुश थी। लगता था जैसे उन्ही के भाई की शादी हो रही हो। सब मेहमानो के मुह पर उन्ही दोना का नाम था। सबका काम वह दौड दौडकर कर रही थी। रेखा के आने पर उसकी ओर उनका ध्यान विशेष रूप से खिच गया।

ऊपा और उसकी मा दोनो काम म बहुत व्यस्त थी। रात को बारात जान वाली थी। बहू के लिए जो जेवर कपडा भेजना था, उन सब पर चिट लगाकर बक्सो मे रख रही थी। रेखा ने पहुचते ही उन दोना के काम म हाथ बटाना आरभ कर दिया था।

सोना ने एक साडी को देखकर कहा, "यह साडी भाभी के बडी अच्छी लगेगी।"

ऊषा की मा ने चिढकर कहा, 'फिर तून भाभी कहा, कह दिया न, छोटी बहू जी कहा कर।"

सोना ने कहा, 'मैं भूल गई। अब छाटी बहू जी ही कहा करूगी।"

बाजा आ गया था, आगन मे नौशे को सजाया जा रहा था। सब अपने बढिया से बढिया कपडो मे थे। हडो की रोशनी ने सलम और जरी के कपडा म और चार चाद लगा दिए थे। रेखा भी बढिया सलमे

की साडी पहनकर अपने कमरे से निकली, पर रसोई के पास आकर ठिठक गई। रसोई मे से रूपा के रोने और ऊपा के चिल्लाने की आवाज आ रही थी। वह आगन म जाते जाते रसोई म चली गई। वहा का दश्य देखकर वह सन्न रह गई।

ऊपा हाथ म दूध का गिलास लिए हुए यह कहती हुई बाहर निकली "खूब शोर मचा, जार-जोर से रो, जो कोई यह समझे कि बहुत जल गई।" पर बाजे ने रूपा के राने की आवाज को रसोई की दीवारो से बाहर नही निकलने दिया।

रेखा ने ऊपा से पूछा, "क्या हुआ ?'

ऊपा ने कहा, 'कुछ नही, गिर गई, वहा थोडी सी आग पडी थी, हाथ थोडा सा जल गया।" जाते जाते ऊपा कहती गई, "भाभी, जल्दी आओ तुम्हे काजल डालना है।

ऊपा के चले जान पर वहा जो मिसरानी थी उसने ऊपा की बात को दोहराया, "गिर गई! अपने आप तो उसे ऐसा जोर का धक्का मारा कि चूल्ह मे आ पडी। मैं न होती तो छोकरी जल ही जाती। सिर चूल्हे म जाकर टिकता। गजब का गुस्सा है। तभी तो कोई नौकर टिकता नही। ये बिचारी तो यो पडी है कि इनके कोई है नही।

रखा ने देखा, रूपा की पूरी बाह झुलस गई है और वह बुरी तरह विलख रही है। रेखा दौडकर अपने कमरे मे गई। नारियल के तेल की शीशी और रुई लाई। सोना से कहा कि वह उसकी बाह का उस तेल मे तर कर दे और रुइ के फोहे से बराबर तेल टपकाती रहे।

उधर रेखा को बुलाने के लि ए बाहर आवाज लग रही थी, क्योकि उसे दूल्हे के काजल डालना था। सोना को तेल देकर वह बाहर चली गयी। दूल्हा घोडी पर चढ गया था। सब खुशी से फूले नही समा रहे थे। बाजे वाले भी बडे जोश मे बाजा बजा रहे थे। उस खुशी मे हिस्सा लेनेवाली केवल वे ही दोनो बहनें वहा नही थी लेकिन यह देखने वाला भी वहा उनका कौन था ? रेखा का मन अवश्य उस समय उस घूमधाम से हटकर उन्ही मे पडा था।

बारात चली गई। और सब भी बारात के साथ मंदिर तक गये। रेखा नही गई, वह लौट आई। उसने देखा, रूपा उसी तरह तडप रही है, साथ मे सोना की आखो से भी आसू बह रहे है।

रेखा ने सोचा, थोडा सा जलने पर तो नारियल के तेल से थोडी देर मे ठडक पड जाती है, पर यह तो बहुत गहरा जल गया है। इस पर तो कुछ और लगाना चाहिए, पर क्या लगाए, यह उसकी समझ मे नही आ रहा था। उसने बैठकर और थोडा तेल लगाया, प्यार से रूपा को समझाया कि इतना मत रो, अभी जल्दी ठडक पड जायेगी।

मिसरानी ने कहा कि नारियल के तेल पर सूखी मेहदी भी बुरक देनी चाहिए। सूखी मेहदी भी बुरक दी पर उसके ठडक नही पडी।

कुछ देर मे सब औरतें वापिस आ गइ। बारात चली गई थी। बधाइया गाई गइ। फिर खाने का काम शुरू हो गया। सब औरते पगत मे बैठ गईं। सोना रूपा को आवाजें लगने लगी।

ऊषा ने कहा, "रूपा का तो हाथ जल गया है सोना को बुला लो।" सोना ने आकर परसना शुरू किया, पर उसकी आखें भी रोने के कारण लाल हो रही थी।

एक दो ने पूछा, रूपा कहा है ? हाथ कैसे जल गया ?"

सोना ने कहा, "उसकी सारी बाह जल गई है।" यह कहते हुए उसकी आखो से आसू टपक पडे।

ऊषा की मा झल्ला उठी। डाट कर कहा, 'तू तो नही जल गई, खबरदार जो रोई। अभी तो बारात गई है। मनहूस कही की, लगी आसू टपकाने।"

सोना ने जो आसू आ गए थे, उन्हे पोछ लिया और जो आ रहे थे उन्हे पी लिया।

ऊषा की मा ने फिर कहा, 'पता नही, कहा से इसने यह कूडा भर लिया। इससे तो एक बडा नौकर रख ले जो सब काम सभाल ले।' ऊषा जो पास ही पलग पर थककर लेटी हुई थी। बोली, 'बस शादी तक ही इन्हे रख रखा था, क्योकि मुन्ना इन पर हिल गया था। अब लौटते ही इन दोनो का झगडा काट दूगी।"

सोना के हृदय मे ऊपा के शब्द तीर की तरह लगे, कातर दृष्टि से उसने ऊपा को देखा और एक ठडी सास खीचकर चुप रह गई।

रेखा ने सोचा, ऊपा को पता भी नही है, रूपा कितनी जल गई है, उस देखने की उसे फुसत ही नही मिली, या उसने जरूरत ही नहीं समझी। पर रेखा ने उसका ध्यान उधर आकर्पित करने के लिए ऊपा से आकर कहा, "रूपा की बाह बहुत जल गई है। वह बुरी तरह तडप रही है। उसे किसी डाक्टर की दवा मिलनी चाहिए।'

ऊपा ने कहा 'भाभी वह तो बहुत ऊधम मचाती है, जरा-सी चोट लगन पर रोने बठ जाती है।

रेखा ने दढता के साथ कहा, 'नही, यह बात नही है। वह बहुत जली है। चलकर देखो तो।"

ऊपा की मा न कहा, "नारियल का तेल और मह्दी लगा दो ठीक हो जायेगी।"

रेखा ने कहा, वह तो घटा पहले लगा दी थी।"

रेखा के कहने पर ऊपा रूपा के पास गई। उसके जले हुए भाग को देखकर ता उसके रोगटे खडे हो गये। बडे-बडे छालो ने उसकी बाह और हथेली के कई भागा को कई गुना फुला दिया था। रूपा की व्यथा देखी नही जा रही थी। ऊपा ने स्वप्न म भी यह अनुमान नही किया था कि रूपा इतनी जल गई है। उसे बिलख बिलखकर रोत देख कर उसका दिल भर आया और उसे उस दिन की याद आ गई जब उसकी लडकी की अगुली जल गई थी और वह घटो उसे गोदी मे लिटाकर थपथपाती रही थी और दवा लगाती रही थी। अगुली के जल जाने पर ही वह कितनी रोई थी। ऊपा ने चाहा कि वह उसी समय एक पर्चा लिखकर डाक्टर के पास भेजे और डाक्टर को बुलाकर रूपा को दिखा दे। मा से उसने राय ली, पर उसकी मा ने कहा 'डाक्टर क्या यहा पास रहता है! डेढ मील से कम दूर उसका मकान नही है और घर मे कोई मद भी नही है जो इस आधी रात मे जाकर डाक्टर को बुला लाये। सवेरे तक तेल और मेहदी लगाते रहो, जब दिन निकल आयेगा तब अस्पताल भेज देता।'

मा की बात सुनकर ऊपा ने डाक्टर को बुलाने का इरादा छोड दिया। सब अपने अपने कामो मे लग गये। रात को सब रतजगे के कायक्रम की तैयारी मे लगे हुए थे। उसम विशेष कार्यक्रम रेखा का ही था, क्योकि वह गाने, नाचने की बहुत शौकीन थी। पर रेखा ने कह दिया, "मेरे सिर मे तो दद है, मै तो इस समय वहा जाकर बैठ भी नही सकूगी।' उसके मना करते ही रतजगे का कायक्रम बिगड गया। सब थके हुए थे, सोने की तैयारी मे लग गए।

सब सो गए पर रेखा को नीद नही आई। तीन बजे के लगभग जब रूपा का कराहना कम हुआ तब वह सोई। दिन निकलने के कुछ पहले ऊपा ने सोना को जोर की आवाज लगाई, "सोना मुन के लिए दूध गरम करके ला, वह जाग गया है।'

ऊपा की आवाज से रेखा की नीद खुल गई। उसे रूपा का हाल जानने की उत्सुकता हुई। पर रूपा का कराहना बद है, इससे उसे कुछ सतोष मिला। लेकिन तभी सोना के जोर जोर से रोने की आवाज ने सबको जगा दिया। सब उठकर उधर भागे। सोना रूपा के मत शरीर से लिपट कर रो रही थी।

दो दिन बाद रेखा शादी मे से लौटी पर यह दो दिन उसे वहा दो वर्षों जस लगे। एक दिन जब ऊपा के पत्र से रेखा को पता लगा कि सोना बिना कहे ही घर छोडकर कही चली गई थी, तब उसे बडा सतोष मिला।

# फैसला

"गाधी जी का यह चित्र यहा नही जचता, दूसरा बडा वाला लगाना।' यह कहता हुआ दिलीप दूसरे कमरे मे टनिस का बल्ला लेने चला गया।

गीता ने 'अच्छा' कहकर उसकी बात का समर्थन किया। दिलीप क्लब जाने की जल्दी मे था, इसलिए वह उससे और कुछ बात नही कर सकी। उसके चले जाने पर वह फिर ड्राइग रूम मे जाकर उसे सजाने मे लग गई। गाधी जी की वह तस्वीर उसने उतारी, दूसरी लगाई, पर वह उसे वहा अच्छी नही लगी। उसके दो कारण थे—एक तो वह आकार मे कुछ बडी थी, दूसरे उस कमरे मे सब चित्र उसके बनाए हुए थे, एक वही छपा हुआ था। वह चाहती थी उस कमरे म सब उसके बनाए हुए चित्र ही हो। कई बार उसने वह चित्र टागा और उतारा। अत मे इस विचार से कि दिलीप के आने पर वह उससे इसके विषय मे बात कर लेगी, उसने पहले वाला चित्र ही टाग दिया। फिर उसने जल्दी जल्दी कमरे मे फश लगाकर सब फर्नीचर जमा दिया। नई नई गद्दिया कुर्सिया पर और नए-नए मेजपोश मेजो पर बिछा दिए। ये नई चीजें उसने पहले दिलीप को नही दिखाई थी। पहले उसके पास केवल एक कमरा था, अब पहली बार उसे चार कमरो का मकान मिला था। मकान सजाने का उत्साह उसके मन म भरा

हुआ था। रात रात जागकर उसने ये सब चीजें बनाई थी। रेडियो के कवर पर तो उसने बडा ही सुदर पेंटिंग किया था। वह सोच रही थी एकदम नई नई चीजें देखकर दिलीप चौक पडेगा, बडा खुश होगा, उसकी प्रशसा करेगा। पूछेगा, ये चीजें तुमने कब बना डाली। एसे ही विचार उसके मन म आ रहे थे और वह बडी शीघ्रता से सब काम कर रही थी, क्योकि वह चाहती थी कि दिलीप के आने से पहले ही ड्राइग रूम सज जाए।

डाइग रूम को सजाने के बाद वह शीघ्रता से नहाई और कपडे बदलकर ड्राइग रूम मे जाकर दिलीप के आने की प्रतीक्षा करने लगी। आज वह बहुत खुश थी और दूर से दिलीप को आते देख उसकी खुशी और भी बढ गई। वह ड्राइग रूम मे ही उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। दिलीप आया और दरवाजे पर ही ठिठक गया और झल्लाते हुए बोला, "आखिर तुमने वही तस्वीर टागी जिसे मैंने मना किया था।

गीता ने सिटपिटाते हुए कहा, "मैंने उसे टागा तो था पर फिर "

"और फिर उतार दिया, क्योकि मैं उसे टागने के लिए कह गया था," दिलीप ने बात को काटते हुए कहा।

"नही, मैंने सोचा था "

'क्या सोचा था? तुम हमेशा वही सोचती हो, जिसे मै मना करता हू। देखो, आज इस बात का फैसला हो जाना चाहिए, इस घर म किस का कहना चलेगा।'

गीता तो इस समय कुछ और ही सोचे बैठी थी। उससे कुछ उत्तर देते नही बना। बोली 'मुझे क्या खबर थी आप इतनी सी बात पर नाराज हो जाएगे। लीजिए," यह कहकर उसने वह तस्वीर उतार कर दूसरी टाग दी।

पर दिलीप सतुष्ट नही हुआ, बाला 'अब क्या है? एक बार तो तुमने मेरा अपमान कर ही दिया।" और यह कहते हुए वह दूसरे कमरे मे चला गया।

गीता के मन के अरमान मन मे ही रह गए। खाना दोनो ने साथ बठकर ही खाया, लेकिन दिलीप ने उससे कोई बात नही की। रात को

वह सो गया। पर गीता को कई घंटे नींद नहीं आई। कभी वह अपने पर झुंझलाती कि वह तस्वीर उसने पहले ही क्या न टांग दी थी, फिर सोचती आखिर यह भी कोई गुस्सा करने की बात थी! सारे दिन वह मेहनत करती रही थी। टांगें फिर से दुखने लगी थीं। इतने क्लेश के बाद उसका सिर भी दर्द कर रहा था। वह बिस्तर पर पड़ी करवटें बदलती रही और रात के कई घंटे इसी तरह बीत गए।

सवेरे उठकर गीता दूसरे कमरों को जमाने में लग गई पर उसके मन में पहले दिन जैसा उत्साह नहीं था। ड्राइंग रूम के विषय में दिलीप की उससे कोई बात नहीं हुई थी। उसकी नई नई चीजें जैसे दिलीप ने देखी ही नहीं थीं।

विवाह को दो वर्ष हो गए थे, पर ऐसी घटना पहले कभी नहीं घटी थी। किसी बात पर मन मुटाव होता तो शीघ्र ही मिट जाता। गीता को दिलीप का मुख बनाकर रहना अच्छा नहीं लगता था, इसलिए वह बहुधा उसकी इच्छा के अनुसार ही कार्य करती थी और इसी में प्रसन्न रहती थी। परंतु आज की इस घटना ने उसके खिले हुए फूल से हृदय को मसल डाला। उसके मन में बार बार यह विचार आता था कि क्या मैं कोई काम अपनी मन मर्जी से नहीं कर सकती?

शरद ऋतु के आकाश की भांति स्वच्छ उनका जीवन चल रहा था। देखने वालों को ईर्ष्या होती थी उनके दाम्पत्य जीवन की सफलता पर। उसमें यह घटना बादल के एक छोटे टुकड़े के समान आई और स्वच्छ आकाश पर फैल गई।

बचपन से ही गीता बड़ी भावुक थी। माता पिता में यदि कहा-सुनी हो जाती तो वह रोने बैठ जाती। भाई भावज में यदि कोई झगड़ा हो जाता तो वह बहुत दुःखी होती। लड़ाई-झगड़ा उसको बहुत बुरा लगता था। वह चाहती थी उसे इस प्रकार के लड़ाई झगड़े का सामना न करना पड़े। इसलिए विवाह के पश्चात उसने अपने दिल को दिलीप की इच्छाओं पर छोड़ दिया। वह जानती थी कि दिलीप को कितनी जल्दी क्रोध आता है। लेकिन वह जानती थी कि दिलीप उससे

कितना प्यार करता है। इसलिए उसका प्यार पाने के लिए वह वैसा ही करती जैसा वह चाहता था। पर इस घटना के बाद गीता के मन मे एक बेबसी ने स्थान ले लिया। उसके मन मे वह उत्साह नही रहा जो पहले था। उसे दिलीप के प्रेम पर भी विश्वास नही रहा। वह सोचती, यदि मैं अपनी इच्छा के अनुसार काम करने लगू तो वह मुझसे बालना छोड सकते हैं। इस घटना के बाद यदि उसने स्वय बोलना आरभ नही किया होता तो न जाने वह उससे कितने दिन नही बोलता।

चार वर्ष बीत गए। इस बीच गीता के दो बच्चे हो गए। उसका स्वास्थ्य पहले जैसा नही रहा और उसकी सहनशक्ति भी कुछ कम हो गई। इसलिए वह बात बात पर रोने लगती।

एक दिन दिलीप ने कहा "मुझे लोदी रोड जाना है। तुम भी तयार हो जाओ। वहा सबस मिलना है।'

गीता ने कहा "आज मेरी तबीयत ठीक नही है मैं नही जाऊगी।" इस पर दिलीप ने कहा, "न जाने या क्या सवाल है। जब मैं कह रहा हू तो तुम्हे जाना ही हागा। तैयार हो जाओ।"

'लेकिन मेरे सिर मे दद जो हो रहा है।"

'ऐसा दद भी क्या, मैं कहता हू जल्दी तैयार हो जाओ।"

"कोई जिद है ?"

"जिद ही सही। तुम्हे कष्ट उठाकर भी मेरी बात मानी चाहिए।'

"और आपको मेरे कष्टा का ध्यान नही करना चाहिए ?"

"बहस न करो गीता! तुम चलोगी या नही, यह बता दो। आज मैं इस बात का फैसला करना चाहता हू कि तुम्हे मेरे कहने के अनुसार काम करना है या नही ?" दिलीप ने आवेश मे आकर कहा।

"मैं हमेशा, आप जैसा कहते हैं वसा ही करती हू, पर यदि न करूं तो आप क्या फसला करेंगे ?" गीता अनायास पूछ बैठी।

'मैं इस घर से चला जाऊगा।"

"मतलब यह है कि यदि मैं कोई काम अपनी इच्छा का करना चाहूं तो आप मुझे इस घर मे नही रखेंगे। मेरे भी जान है, मेरे भी दिल है, आपने मुझे बिल्कुल निर्जीव क्यो समझ लिया है ?" यह कहते कहते गीता का गला भर आया।

दिलीप ने चीखकर कहा, "मुझे इसका जवाब दो कि तुम्हें मेरे साथ चलना है या नही ?"

गीता ने देखा, आज बात कुछ बुरी तरह बढ गई है। इसलिए उसने अपने मन के विद्रोह को दबाकर कह दिया, "चल रही हू।"

वह बच्चों को तैयार करने लगी, लेकिन बार-बार उसके मन मे आता रहा कि जाकर कह दू, "नही जाऊगी, नही जाऊगी।" पर बच्चो को तैयार करके वह स्वय भी तयार हो गई। सब चल दिए, पैदल चलकर बस स्टैंड पर पहुचे। बस की यात्रा समाप्त होने पर सडक पार कर सब घर पर भी पहुच गए, पर कोई एक दूसरे से बोला नही।

गीता अदर चली गई। दिलीप बाहर ही अपने मित्रा के पास रह गया। रात्रि के खाने के लिए दिलीप को किसी मित्र के घर जाना था इसलिए वह वहा चला गया। गीता बच्चो को लेकर शाम को घर लौट आई।

गीता के मन मे दिन की घटना का जो गुब्बार भरा हुआ था वह एकात पाकर आसुओ के रूप मे बह निकला। वह मन भर कर रोई। उस अपने जीवन से घणा सी हो रही थी। उसके मन मे आ रहा था, यह कैसा जीवन है, जानवरो से भी अधिक निस्सहाय! अच्छा हो इस जीवन से ही छुटकारा मिल जाए। लेकिन छुटकारा मिले कसे ? बडे घर की बहू-बेटी को ता मर कर ही छुटकारा मिल सकता है। तो क्या आत्महत्या कर ले ? पर इससे भी ता दोनो कुला की बदनामी होगी।

गीता इन्ही विचारो मे लीन थी कि दिलीप के आने की आहट सुनाई दी। वह दीवार की ओर करवट लेकर ऐसी चुप लेट गई जैसे सो गई हा।

दिलीप ने कमरे मे घुसते ही कहा, 'अर, सब सा गए ?"

गीता चुप पडी रही। दिलीप न गीता का कधा हिलाते हुए कहा,

"बड़ी जल्दी सो गई। क्या बात है ? तबीयत कैसी है ? सिर मे दद का क्या हाल है ?"

गीता ने आखें बद किए हुए कहा, "ठीक है।"

दिलीप ने कहा, "ठीक तो नही मालूम होता। सिर मे दद तो कुछ ज्यादा है शायद, लाओ सिर दाब दू।' यह कहते हुए उ होंने उसके सिर को अपनी ओर मोडना चाहा लेकिन गीता दीवार की ओर और भी अधिक झुक गई और उसने दिलीप के हाथ को सिर से हटाने की चेष्टा करते हुए कहा, "मरे सिर म दद नही है, मुझे नही दबवाना।' लेकिन दिलीप सिर दबाए बिना नही माना। उसके सिर दबाने से गीता का हृदय और भी भर आया और बहुत चेष्टा करने पर भी उसकी आखो से आसू बह निकले। दिलीप ने देखा तो गीता को समझाते हुए कहा, "छी, कैसी ना समझ हो तुम। ऐसी जरा जरा सी बात पर कहीं दिल छोटा करते हैं।'

थोडी देर बाद दिलीप ने चेष्टा करके गीता का मुह धुलवाया और फिर गरम दूध पिलवाया। उसके इस व्यवहार ने गीता के मन मे उठे हुए तूफान को शात कर दिया।

इसी प्रकार कई वष बीत गए। बात बात पर दोनो मे झगडा होता और शात हो जाता। बच्चे दोनो बडे और समझदार हो गए थे। अशोक आठ वष का था और आशा छ वष की। जब कभी माता-पिता मे झगडा होते देखते, उनका अजीब सा हाल हो जाता। गीता जानती थी कि बच्चो पर घर के इस वातावरण का बहुत बुरा प्रभाव पडता है। इसलिए वह चेष्टा करती थी कि बच्चो के सामने उनमे कहा सुनी न हो। वैसे दिलीप का स्वभाव बुरा नही था। पर न मालूम कैसे उसके मन मे यह बात बैठ गई थी कि गीता को सदैव उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। वह कभी इस बात को सहन नही कर सकता था कि उसके कहने के बाद गीता किसी काम को करने के लिए मना कर दे। उसके मुह से जो निकल जाता, गीता को वही करना ही पडता था।

गर्मियो की छुट्टिया आरभ हो गई थी । दिलीप को एक किताब छपवानी थी जो इलाहाबाद म छपनी थी । उसका प्रोग्राम एक महीने इलाहाबाद रहने का था जिससे वह वहा रहकर प्रूफ भी देखता रहे और किताब जल्दी छप जाए । गीता का प्रोग्राम निश्चित नही हुआ था । उसने सोचा था कि या तो वह लखनऊ अपने पिता के पास चली जाएगी या वहा से किसी को अपने पास बुला लेगी । दिलीप भी इस बात से सहमत था ।

एक दिन एकाएक दिलीप के मन मे एक नया विचार आया और उसने कहा, "मैं एक सप्ताह के लिए पटना जा रहा हू, तुम भी चलो । तुम और बच्चे वहा रह जाना, मैं एक महीने के लिए इलाहाबाद चला जाऊगा ।'

गीता को उसकी बात सुनकर आश्चय हुआ और वह बोली, "आपके बिना तो मैं पटना एक महीने क्या, एक सप्ताह भी नही रह सकती ।"

दिलीप ने कहा, "क्यो ?"

गीता ने कहा, "आप सब जानते है, फिर मुझसे ही क्यो कहलवाते है ? '

दिलीप ने कहा, "हा, सब जानते हुए ही तो मैं कह रहा हू । तुम एक महीना इस बार पटना रह आओ ।"

गीता ने कहा, ' ऐसी मेरी क्या मुसीबत आई है, जो मैं एक महीना वहा रहकर बिताऊ । यदि मुझे जाना ही है तो लखनऊ क्यो न हो आऊ जहा से हर पत्र मे बुलावा लिखा आता है ।'

"लेकिन मैं चाह रहा हू इस बार तुम पटना जाकर रहो ।'

गीता ने कहा, ' लेकिन क्यो ? उन्होने बुलाया है क्या ? मैं तो जब कभी आपके साथ गई, तभी मुसीबत उठाकर आई । इतना सख्त पर्दा । ऊपर से खाना भी पेट भर कर नही देते । अपन बच्चो को तो छिप छिपकर नाश्ता खिला देती हैं और मेरे बच्चे भूखे फिरते रहते है । और फिर मैं इस हालत मे वहा जाऊ । मुझे खाना-पीना अच्छा नही लगता, फिर भी अपना घर है, पेट भरन के लिए जब जो जी म

आता है बनवा लेती हू, या बाजार से मगा लेती हू। वहा इतना भी नही हो सकेगा कि एक चीज अच्छी न लगे तो दूसरी बनवा लू। लखनऊ जाऊगी तो वहा अम्मा मेरा ध्यान रखेगी।"

यह सब बातें व्यथ की हैं तुम चाहो तो वहा भी सब कर सकती हो।"

"यह सब बातें सच है, आप जानत हैं, मैंने पटना जाकर हमेशा कष्ट ही उठाया है। अब और उठाने को तैयार नही हू, वह भी ऐसी हालत म।'

दिलीप ने कहा, 'लेकिन मैं चाहता हू कि तुम इन छुट्टिया मे पटना ही जाकर रहो।'

गीता ने कहा, "क्या जाकर रहू ? मैं नही जाऊगी। मुझे मरना नही है।'

"तो तुमने यह फसला कर लिया है कि तुम पटना नही जाओगी ?" दिलीप ने आवेश में पूछा।

'हा, कर लिया है।" गीता ने दढता से कहा।

'अच्छा तो मैंन भी यह फैसला कर लिया है कि मैं तुम्हारे साथ नही रहूगा।" दिलीप ने चीखकर कहा।

"लेकिन आखिर कुछ बात भी हुई इस तरह "

"बस चुप रहो, तुम मुझे जिंदा नही छोडोगी।"

यह कहकर दिलीप ने नौकर को बुलाया। उससे अपना बिस्तरा बाधने को कहा और वह स्वय बक्स मे कपडे रखने लगा। गीता को चक्कर-सा आ गया। उसके मन मे आया कि वह सब छोडकर चली जाए, दिलीप से कह दे कि तुम क्यो जाते हो, घर तो तुम्हारा है मैं चली जाऊगी। लेकिन उसमे न उठने की शक्ति थी, न बोलने की। वह पत्थर सी बठी देखती रही। मिनटो मे सामान तैयार हो गया और दिलीप नौकर के सिर पर सामान रखकर चल दिया।

गीता ने अपने को सभालकर कहा, "कहा जा रहे हो, यह तो बता दो ?'

दिलीप ने चीखकर कहा, "तुम्हे मेरे से कोई मतलब नही, चाहे मैं

यही भी जाऊ।" यह कहते हुए वह तेजी स सीढ़ियां से उतर गया।

गीता वही देर तक सिर पकड़े बैठी रही। उसकी सास बड़ी तेजी स चल रही थी। अशोक और आशा छज्जे पर से अपने पिता का जाना देखत रहे। दोना बड़े सहम हुए थे। गीता का शरीर निर्जीव सा हो गया था। बहुत देर बाद वह बड़ी मुश्किल स उठी और पलग पर पड़ गई।

नौकर आया और चुपचाप खाना बनाने लगा। बच्चे डर सहमे स एक-दो बार मा के कमरे म आए लेकिन उन आखें बद किए देखकर चुपचाप लौट गए। खाना तैयार होने पर वे मां के पास आए और बोल, 'चलो मा, खाना खा लो।' पर गीता ने कह दिया, "मुझे भूख नही है, तुम खा लो।'

अशोक बडा था, उसने फिर जरा आग्रह से कहा, 'थोडा-सा ही खा लो।"

गीता न उसे प्यार करके कहा, "तुम बड़े अच्छ हो, तुम खा लो, मुझे भूख नही है।'

बच्चा ने निराश होकर अकेले ही खाना खा लिया और फिर व सो गए।

नौकर सोत समय गीता के लिए दूध लाया, पर वह रखा ही रहा, उसने पिया नही। नौकर के जाने के बाद वह उठी, उसने कमरे का दरवाजा बद किया, हल्की बिजली जलाई और फिर अपने बिस्तर पर आ गई। उसके मन मे विचारो का बवडर सा उठ रहा था, आज वह अकेली है उसके दिलीप ने उस छोड दिया। अब वह उसके साथ नही रहना चाहते। उन्हें डर है कि वह उसके साथ रहेंगे तो वह उसे जीवित नही रहने देगी। वह कितनी अभागिन है कि उसके पति उसके विषय म ऐसी बातें सोचत हैं। वह उसके साथ रहना नही चाहत। क्यों? इसलिए कि वह कभी कभी अपनी इच्छानुसार काय करन का अधिकार चाहती है। यही उसका अपराध है? यह अधिकार दिलीप उसको नही देगा, क्योंकि दस वष तक उन्हें उस पर शासन करने की आदत पड गई है। वह उसकी कमजोरी को समझ गया है।

तो फिर वह क्या करे ? जब दिलीप उससे प्रसन्न नही, उ
साथ रहना नही चाहता तो वह जीकर क्या करेगी, आत्महत्या क्यों
कर ले ? हो सकता है उसकी मत्यु के बाद किसी और के साथ रह
वह सुखी जीवन बिता सके। पति को सुखी रखना ही नारी का कर
है। लेकिन बच्चा के लिए भी ता मा का कुछ कतव्य है, उसके मन
कहा। लेकिन जब वह स्वय दुखी होगी तो अपना कतव्य क्या नि
सकेगी ? समार उसको बुरा समझेगा। बच्चे कुछ दिनो मे उससे घ
करने लगेंगे। सोचेंगे कि पिता के प्यार से इसी ने हमे वचित रखा
इससे तो मर जाना ही अच्छा। लेकिन मरे कसे ? कपडो पर
छिडककर आग लगा ले ? लेकिन यदि किसी ने अधजली को ब
लिया तो क्या होगा ?

क्षण भर को गीता रुकी और फिर सोचने लगी। उसके मन
आया कि पलग के पाए पर सिर जोर-जोर से पटके, सभव है उ
सिर फट जाए। लेकिन दो-तीन बार सिर पटकने के बाद उसमे
उठाने का भी साहस नही रहा। वह निर्जीव-सी पड गई और उ
अवस्था मे न जाने कब उसे नीद आ गई।

सवेरे नौकर ने दरवाजा खटखटाया। वह उठी अकेला घर देख
उसके हृदय म एक हूक सी उठी। उसने दरवाजा खोला, पेट की पी
ने उसे व्याकुल कर दिया। उसके मुह से जोर की 'हाय' निकली।
मुश्किल से पलग तक आई और दद के मारे छटपटाने लगी। उ
सोचा अच्छा, है इसी मे खत्म हो जाऊ। नौकर ने कुछ देर तक गी
की यह दशा देखी। फिर वह बिना कुछ कहे सुने ही पास वाले बगले
डाक्टर को बुला लाया। डाक्टर ने गीता का देखते ही उसकी बीम
का समय लिया और तुरत फोन करके लेडी डाक्टर को बुला लिय
कुछ ही देर म लेडी डाक्टर आ गई और उसने अपनी ही कार मे
तुरत अस्पताल ले जाने की राय दी। डाक्टर ने गीता से कहा, "दिल
बाबू का पता बता दीजिए, मैं उन्हे टेलीग्राम दे दूगा।"

'अभी तो वह रास्ते मे ही होंगे, वहा जाकर पता लिखेंगे।' गी
ने कहा। उसे क्या खबर वह कहा गए हैं। पटना या इलाहाबाद।

बच्चो को लोदी रोड दिलीप के मित्र के घर भेजकर गीता अस्पताल चली गई। चलते समय उसने अशोक से चुपके से कह दिया कि वह किसी से न कहे कि पापा नाराज होकर गए है। नौकर को भी समझा दिया।

जब डाक्टरनी ने देखा कि दवा का कोई असर नही पड रहा है और दशा बिगडती जा रही है तब उसने आपरेशन कर दिया। उसके बाद गीता की दशा धीरे धीरे सुधरने लगी। दस दिन बाद जब वह घर लौटी तब डाक्टरनी ने कह दिया कि एनीमिया बहुत हो गया है, इसलिए सावधानी की बहुत आवश्यकता है।

दिलीप सीधा इलाहाबाद गया और वहा अपने मित्र शर्मा के यहा ठहरा। वह उसका बचपने का मित्र था और सदैव उससे इलाहाबाद आकर अपने घर ठहरने के लिए कहता रहता था। दिलीप को आया देखकर उसे बडी प्रसन्नता हुई। कुछ देर दोनो मित्र बातचीत करते रहे। फिर शर्मा की पत्नी सज धज कर कमरे म आई। शर्मा ने पत्नी से दिलीप का परिचय कराया। वह कुछ देर वहा ठहरी, फिर उठते हुए शर्मा से बोली, "अच्छा, मैं तो अब जा रही हू।"

शर्मा ने आश्चय से कहा, "अभी से ?"

वीरा ने जल्दी जाने का कारण बता दिया कि उसे सहेली के काम मे सहायता करनी है और बच्चे के लिए प्रेजेंट खरीदना है और वह चली गई।

दिलीप के ठहरने, नहाने और खाने का सारा प्रबध शर्मा को ही नौकर से कहकर करवाना पडा। दिलीप को यह देखकर आश्चय हो रहा था। वह सोच रहा था, यदि मेरा काई मित्र आ जाता तो गीता या तो अपनी सहेली के घर जाती ही नही, जाती भी तो सारा प्रबध करवा कर जाती।

शर्मा ने लोदी रोड अपने मित्र को दिलीप के आने के विषय म लिख दिया था। उन्होने तुरत गीता का सारा हाल दिलीप को लिख दिया। दिलीप पत्र पढ़कर सन्न रह गया। लेकिन तुरत ही उसे इस

बात का ध्यान आया कि यदि गीता को मेरी आवश्यकता होती तो वह मुझे लिखती। उसने अवश्य अपने किसी सबधी को बुला लिया होगा।

गीता दस दिन बाद घर आई। अशोक ने कहा, "मा, पापा इलाहाबाद है, शर्मा साहब का पत्र आया था। वह उनके घर ठहरे है। चाचा जी ने पापा को तुम्हारा सब हाल लिख दिया है। चाचा जी कह रहे थे वह पत्र पढत ही आ जाएगे। दिलीप के न आने पर जिसने भी आश्चय प्रकट किया, गीता ने उससे यही कह दिया कि वह वहा बडे आवश्यक काय से गए है। काम बीच मे छोडकर आने को मैंने मना लिख दिया है।

उधर दिलीप को इस बात का विश्वास था कि गीता अवश्य उसे पत्र लिखेगी और उस दिन की धृष्टता के लिए उससे क्षमा मागेगी। इसलिए वह प्रतिदिन पत्र की प्रतीक्षा करता। एक महीना बीत गया, पर गीता का पत्र नही आया।

मित्र के घर रहते रहते उसका मन ऊब गया। रूपा के व्यवहार से वह कुढता रहता और मन मे अपने मित्र पर झुझलाता और सोचता कि यह अपनी पत्नी से कितना डरता और दबता है।

एक दिन मौसम बडा अच्छा था। दिलीप ने शर्मा से कहा, "कही पिकनिक पर चलो।" शर्मा को भी यह बात जच गई, उसने कहा "रूपा को बुलाकर उसकी राय ले लें। क्या पता उसका कोई और प्रोग्राम हो।' दिलीप को बडा अजीब सा लगा, वह यदि शर्मा की जगह होता तो गीता से कह देता, आज पिकनिक पर जाना है और समय बता देता कि उस समय तयार हो जाना। पर यह शर्मा है कि पत्नी की इच्छा के विरुद्ध एक पग भी आगे नही बढा सकता। सयोग से हुआ भी ऐसा कि शर्मा ने रूपा से पिकनिक पर चलने को कहा तो उसने कह दिया कि आज तो हमारा मैटिनी शो जाने का प्रोग्राम है, रेखा ने कल मैटिनी शो के टिकिट मगा लिए थे। कल मौसम अच्छा रहा तो चलेंगे। दिलीप सोचने लगा कि गीता तो कहीपडोस मे जाती थी तो पहले कह देती थी कि आज वह वहा जाना चाह रही है और उसकी अनुमति लिए बिना वह कही नही जाती थी और एक यह रूपा

है जो अपनी इच्छाओ को ही महत्त्व देती है, जो चाहती है वही करती है। मैं तो इसके साथ एक दिन भी नही रह सकता था।

धीरे धीरे उसे इस वात का ध्यान होने लगा कि गीता उसकी इच्छा को कितना महत्त्व देती थी। उसे ऐसा लगने लगा जसे उसने गीता के प्रति अन्याय किया है। वह घर लौटना चाहता था लेकिन उसका पुरुषत्व उसे ऐसा करने से रोकता था। वह इस प्रतीक्षा म था कि गीता एक पत्र भेज दे और वह घर चला जाए।

उधर गीता, बार बार पत्र लिखने बैठती लेकिन क्या लिखे, यह उसकी समझ म नही आता था। दिलीप यदि उसके साथ रहना नहीं चाहता तो क्या वह उसे अपने साथ रहने के लिए बाध्य करे? उसके मन म आता कि यदि उनका क्रोध क्षणिक होता तो वह उसकी बीमारी का हाल पढकर ही आ जाते। लेकिन वह नही आए, जिसका मतलब यह है कि वह उसके साथ रहना नही चाहते।

रूपा के व्यवहार से क्षुब्ध होकर दिलीप ने एक छोटा सा मकान अलग ले लिया और वह अलग रहने लगा। किंतु दो चार दिन बाद ही अकस्मात उसे बुखार आ गया। एक दिन के बुखार मे ही उसका दिल घबरा गया। उसे गीता की याद आने लगी। उसका मन कर रहा था कि गीता के उसके पास बठे रहने से ही उसे कितनी सात्वना मिलती थी। बुखार तीसरे दिन भी नही उतरा, बल्कि थोडा बढ ही गया। डाक्टर ने ब्लड टैस्ट करवाया और रिपोट देखकर बता दिया कि टाइफाइड है।

दिलीप का दिल घबरा गया। वह किसे बुलाए, कौन उसकी देख-भाल कर सकता है? गीता के अतिरिक्त और किसी की ओर उसका ध्यान नही गया। वही खाना नहाना छोडकर दिन रात उसके पास बैठ सकती है उसकी सेवा कर सकती है। वह रूपा की तरह नही है, जो पति की बीमारी म भी अपना क्लब जाना नही छोड सकती। पर वह उसे बुलाए किस मुह से? वह इतनी बीमार हुई, फिर भी वह नही गया। उसने हाल पुछवाने की चिट्ठी भी नही भेजी।

दिलीप ने सोचा यदि उसे मेरा कुछ ध्यान है तो वह मेरी बीमारी

का हाल सुनकर स्वय ही आ जाएगी। इसलिए उसने अपन मित्र से गीता को इस आशय का एक पत्र लिखवा दिया कि दिलीप को टाइ-फाइड हो गया है, चार दिन से बुखार चढकर नही उतरा है। दो सौ रुपये बैंक से निकालकर तुरत भेज दो।

पत्र देखते ही गीता के तो होश उड गए। उसने तुरत नौकर को बैंक भेजकर चार सौ रुपये मगवाए। बच्चों को लोदी रोड भेजा और शाम की गाडी स नौकर को साथ लेकर चल दी। रास्ते भर वह ईश्वर से यही प्रार्थना करती रही कि वह दिलीप को अच्छा कर दे। उसे अपने ऊपर बडी झुंझलाहट आती रही और वह सोचती रही कि यदि उनकी खुशी इसी म है कि वह जो कहे मैं वही करती रहू तो क्या उनके लिए मैं इतना त्याग भी नही कर सकती? उन्हे कुछ हो गया तो मैं क्या करूगी? इस ध्यान ने उसे और भी विह्वल कर दिया।

दिलीप को बुखार आने के सातवें दिन डाक्टर ने क्लोरोमाईसीरीन देने को कहा था। क्योकि डाक्टर की राय थी, जल्दी दवा देकर बुखार उतार देने से रिलप्स होने का डर रहता है।

दिलीप के बुखार को सातवा दिन था। उसे विश्वास था गीता उसकी बीमारी का हाल सुनकर अवश्य आएगी। पत्र भेजने के बाद तीन दिन काटने उसे मुश्किल हो गए। लेकिन जिस गाडी से दिलीप को गीता के पहुचने की आशा थी, उसका समय निकल गया। उसे बडा धक्का लगा। उसने सोचा, मेरा अनुमान गलत निकला। गीता ने मुझे क्षमा नही किया है, उसने अपनी बीमारी मे मेरे न पहुचने का मुझसे बदला लिया है। एकाएक उसे ध्यान आया कि गीता ने भी मेरे पहुचने की ऐसी ही बेचैनी से प्रतीक्षा की होगी। घडी म देख-देखकर समय बिताया होगा। मेरे न पहुचने पर उसे कितनी निराशा हुई होगी, वह कितनी रोई होगी। ठीक है, मुझे इसकी यही सजा मिलनी चाहिए थी।

यही विचार उसके मन मे आ रहे थे कि दरवाजे पर तागा आकर रुका। दिलीप की दृष्टि दरवाजे पर जम गई। गीता को देखकर उसे धक्का सा लगा। वह सूखकर पीली पड गई थी, वह पहचानी भी नही

जाती थी।

गीता घबराई हुई आई और दिलीप के माथे पर हाथ रखकर बोली "कितना बुखार है ?" दिलीप ने गीता को अपनी ओर खीचते हुए कहा, "तुम मेरे पास बैठ जाओ। अब मैं जल्दी अच्छा हो जाऊगा।"

दोनो मन मे अपनी भूल पर पश्चात्ताप कर रहे थे। अब उन्होंने मन मे फैसला कर लिया था कि कभी आपस मे झगडा नही करेंगे।

# काल-चक्र

"भवाली सेनीटोरियम मे एक कमरा रिजव कराने के लिए मैंने आज डॉ० मेहता का लिख दिया है।" अशोक ने अपने पिता हरिमोहन से कहा।

हरिमोहन ने जोर देकर कहा—"देख, मैं तरे से कहे देता हू, तू तबाह हो जायेगा और वह बचेगी नही। मैंने दुनिया देखी है। इस बीमारी के लगन के बाद काई बचता नही।

"कुछ भी हो आशा को भवाली तो मै ले ही जाऊगा," अशोक ने रुधे हुई गले से कहा, 'डाक्टर ने कहा है, भवाली ले जाने से उसके अच्छे होने की उम्मीद है।"

"डाक्टर तो ऐसा कहते ही हैं, पर हमारी उम्र गुजर गई इस बीमारी के मरीजो को दखते देखते। तेरे मामा ने हजारा रुपये इ ही डाक्टरा के चक्कर मे खत्म कर दिये, तबाह हो गया वह, पर तरी मामी बची नही। इतने रुपये मे वह चार ब्याह कर लेता।'

"जो कुछ भी हो, मै जितनी भी कोशिश आशा को बचाने की कर सकता हू जरूर करूगा। भवाली तो उसे ले जाना ही है। अशोक ने दढता के साथ कहा।

इस पर हरिमोहन झल्लाकर बोले, "तुम्हारे जो जी मे आये करो, पर मैंने कह दिया है, जो करो अपने बूते पर करो, मेरे पास एक भी

पसा तुम्हे देने के लिए नही है।

"मैं आपसे अभी कुछ नही मांगूगा।" अशोक ने कहा और यह कहकर वह डा० मेहता के नाम लिखा हुआ पत्र, जो उसके हाथ में था, जेब मे डालकर डाकखाने चला गया।

आशा ने रसोई से लौटते समय, अशोक और हरिमोहन की आपस की बातचीत सुन ली है, यह अशोक को मालूम नही हुआ। वह पत्र डालकर जब लौटा तब उसने देखा कि आशा तकिये मे मुह छिपाये सिसक सिसककर रो रही है।

अशोक ने आशा को अभी तक यह नही बताया था कि डाक्टर ने उसे टी० बी० बताई है। वह आकर उसके पास बैठ गया और उसके रोने का कारण पूछने लगा।

आशा ने रोते रोते कहा, "मुझे पता चल गया है कि मुझे टी० बी० है और अब मैं नही बचूगी। आप मेरे पीछे तबाह हो जायेंगे, इसलिए आप मुझे दिल्ली भेज दीजिए।"

अशोक समझ गया कि आशा ने उनकी सब बातें सुन ली हैं। इस लिए उसने जरा गभीर होकर कहा, 'देखो, अब यह बीमारी पहले जसी खतरनाक नही रह गई है। बडी अच्छी अच्छी दवाइया निकल आई हैं। और तुम्हे तो असल में अभी टी० बी० है भी नही। डाक्टर साहब को कुछ सदेह ही है इस बीमारी का। उन्होंने कहा है कि भवाली जाते ही तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगी। इसीलिए आज मैंने डा० महता को भवाली सेनीटोरियम मे जगह रिजर्व करने के लिए लिख दिया है।"

'लेकिन इतना रुपया कहा से आयेगा? पाच सौ रुपये में आप क्या-क्या कर लेंगे?' आशा ने कहा।

"मैं सब कुछ कर लूगा तुम इसकी चिंता मत करो। बस, तुम मेरे साथ रहो और खुश रहो। मुझे तुम्हारा प्रेम चाहिए, तुम्हारे प्रेम का बल मुझे बडी-से बडी मुसीबत का सामना करने की शक्ति दे सकता है।'

आशा का मन फिर भर आया। उसने रुधे हुए गले से कहा, 'अब धीरे धीरे अपना यह लगाव आपको मेरी ओर से कम करना चाहिए।"

अशोक ने बडे प्यार से कहा, "तुम तो बावली हो गई हो। देखो, अब से फिर मेरे सामने कभी ऐसी बात मत कहना, मुझे बहुत दुख होता है।

उसी दिन अशोक ने आशा के पिता को आशा का सब हाल और भवाली जाने का प्रोग्राम लिखकर दिल्ली पत्र भेज दिया।

पत्र पहुचते ही आशा के पिता ने लिखा कि वह आशा को लेकर फौरन दिल्ली आ जाय जिससे दिल्ली के डाक्टरो को भी दिखा लिया जाये। उन्होने यह भी लिखा कि उन्होने भवाली मे एक फ्लैट के लिए लिखा है जिस से वह और आशा की मा भी वहा आशा की देखभाल के लिए रह सकें।

कालिज की छुट्टिया आरभ होने मे एक सप्ताह बाकी था। आशा को यह सप्ताह एक वर्ष के बराबर लगा। उसकी ननदो और देवरो का उसके कमरे मे आना जाना बद हो गया। उसके खाने के बर्तन अलग रखे जाने लगे। मेहरी से कह दिया गया, वह उसके बर्तन अलग बैठकर गरम राख से माज और फिर उसके कमरे मे ही पहुचा दे। एक सप्ताह बाद आशा जब उस घर को छोडकर चली तब उसकी आखो म आसू आ गए पता नही अब वह उस घर मे लौटेगी या नही ? पर उसने घूघट म से देखा, उसके सास ससुर उसके जाने से बडी शाति का अनुभव कर रहे थे।

दो वर्ष पहले आशा इस घर म बडी धूमधाम के साथ लाई गई थी। पर वह धूमधाम बाहर की ही थी। घर मे जब उसने पर रखा तब उसका दिल से किसी ने स्वागत नही किया। अशोक की विमाता ने ऊपरी दिखावे से उसका स्वागत किया, यह उससे छिपा नही रहा। ससुर भी झल्लाये हुए बारात से लौटे थे, क्योकि उन्होने बडा अमीर समधियाना ढूढा था और उन्हे आशा थी कि उनका घर भर जायेगा। जन्म से लेकर अब तक उन्होने बेटे पर जो खर्चा किया था और अब शादी मे जो खर्चा हो रहा था वह सब उन्होंने समधियाने से वसूल कर लेने की आशा की थी। उन्होने यह नही सोचा था कि उनके समधी के और भी बच्चे हैं और उन पर भी उन्हे खर्च करना है। आशा के पिता

ने कम नही दिया था, लेकिन लालची स्वभाव होने के कारण उन्हें संतुष्टि नही हुई थी । इसलिए वह आशा से बात-बात पर चिढने और उस पर अपनी झल्लाहट निकालने लगे । अशोक ने अवश्य आशा का दिल से स्वागत किया । विमाता और पिता के दुर्व्यवहार के कारण अशोक का हृदय बहुत कोमल हो गया था और वह अपने को निराश्रित-सा समझा करता था । आशा के प्रेम-व्यवहार से वह बहुत संतुष्ट था परंतु माता पिता के चिडचिडे स्वभाव और पर्दे के कारण बहुत चाहने पर भी वह उसे अपने साथ न घूमा ले जा सकता था, न सिनेमा दिखाने ।

अपने पिता के घर स्वच्छंद घूमनेवाली आशा को वह घर कैदखाने के समान लगने लगा । वह दिन रात एक कमरे में ही रहती उसके दरवाजे खिडकियां भी वह खोलकर नही रख सकती थी । एक दिन ज्यादा गर्मी लगने के कारण उसने अपने कमरे की खिडकी खोल ली थी, जिस पर उसके ससुर आकर बहुत चीखे चिल्लाये थे । उसके बाद से उसने खिडकी फिर कभी नही खोली । ईश्वर ने उसका मन लगाने के लिए विवाह के एक वर्ष पश्चात ही उसे एक पुत्र दे दिया जिसे पाकर वह अपने सब दुख भूल गई । अब वह कमरा उसे कैदखाना दिखाई न देता, वह दिन भर अपने बच्चे को खिलाने और उसके साज-श्रृंगार में लगी रहती ।

अशोक चार पांच दिन के लिए अपने मित्र के विवाह में सम्मिलित होने के लिए आगरा चला गया । उसी बीच मुन्ने को बुखार आ गया और साथ ही खांसी भी हो गई । दिन भर वह उसे घर की ही कुछ दवाएं देती रही । पहले जब कभी मुन्ने को बुखार आया या खांसी हुई तब उसे इन्ही दवाओं से फायदा हो गया था । पर इस बार जब दिन-भर दवा देने पर भी मुन्ने को फायदा नही हुआ तब आशा ने अपने देवर से कहा, "छोटे बाबू, मुन्ने की तबियत बडी खराब है, रात से बुखार भी चढ रहा है, खांसी भी है, बडा बेचैन है, तुम जरा जाकर डा० माथुर को बुला लाओ ।"

देवर ने तुनककर कहा, "जरा से बुखार-खांसी पर डाक्टर को

कान्ति वर्मा—जन्म मेरठ शहर, 3 दिसम्बर, 1917

शिक्षा एम॰ए॰ (हिन्दी) पी॰ एच॰ डी॰

शोध विषय 'स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास'। प्रकाशक रामचंद एंड कम्पनी दिल्ली 1967। अन्य प्रकाशन माडर्न हिन्दी काम आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली 1967 उपन्यास 'साकार स्वप्न उपमा प्रकाशन, जयपुर (बंगला देश की घटनाओं पर आधारित), 1971 कहानियां, रेडियो नाटक, एकांकी, बाल-साहित्य व स्फुट लेख, 1942 से, सभी प्रमुख पत्र, पत्रिकाओं में राजस्थान के क्रान्तिकारी" आलेख प्रकाशन, जयपुर 1983।

कहानियां शोषित वर्ग, सामाजिक तथा पारिवारिक समस्याओं से संबंधित, कुछ राजनीतिक भी।

कहानी संग्रह का नाम—संग्रह में जो प्रथम कहानी है उसकी याद में मैं रचना रखना चाहती हूं।
निवास स्थान 5 ज—13 जवाहर नगर 302004